कृष्ण पक्ष, 21 वर्ष, अंक 328, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | शनिवार 24 दिसंबर 2022 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

सरकार ने राज्यों और केन्द्र शासित प्रदेशों को सतर्क रहने और कोरोना प्रबंधन के लिए पूरी तैयारी रखने की दी सलाह

'कोरोना गाइडलाइंस लागू करें राज्य'

नई दिल्ली: कोरोना के मद्देनजर केंद्रीय स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री डॉ. मनसुख मांडविया ने शुक्रवार को राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्रियों और प्रमुख सचिवों एवं अतिरिक्त मुख्य सचिवों के साथ वर्चुअल रूप से बैठक की। बैठक में मनसुख मांडविया ने राज्यों एवं केन्द्र शासित प्रदेशों को सतर्कता बरतने और कोरोना प्रबंधन के लिए पूरी तैयारी रखने की सलाह दी। इसके साथ ही पिछले कोरोना की लहर के सामान इस बार भी केन्द्र और राज्यों को सहयोगात्मक भावना से काम करने की अपीली की। डॉ. मनसुख मांडविया ने कहा कि मंत्रालय ने कोरोना से बचाव के लिए परीक्षण-ट्रैक-उपचार-टीकाकरण और कोरोना के अनुरूप व्यवहार का पालन करने की रणनीति बनाई हुई है। इसी रणनीति पर काम करते हुए राज्यों को निगरानी प्रणाली मजबूत करने के साथ टेस्टिंग बढ़ाएं और अस्पताल के बुनियादी ढांचे की तैयारी को सुनिश्चित करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि राज्यों को इस सप्ताह के अनुसार प्रति मिलियन 79 परीक्षणों की वर्तमान दर से परीक्षण की दर में तेजी से वृद्धि करना चाहिए। उन्होंने राज्यों से आग्रह किया कि वे कोरोना के नए वेरिएंट को ट्रैक करने के लिए पॉजिटिव मामलों के नमूनों को जीनोम अनुक्रमण के लिए भारतीय जीनोमिक्स कंसोर्टियम नेटवर्क की प्रयोगशालाओं में भेजें ताकि नए वेरिएंट का समय पर पता लगाया जा सके। केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री ने राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों को सलाह दी कि वे सभी पात्र आबादी, विशेष रूप से बुजुर्गों और कमजोर जनसंख्या समूह के टीकाकरण में तेजी लाएं।

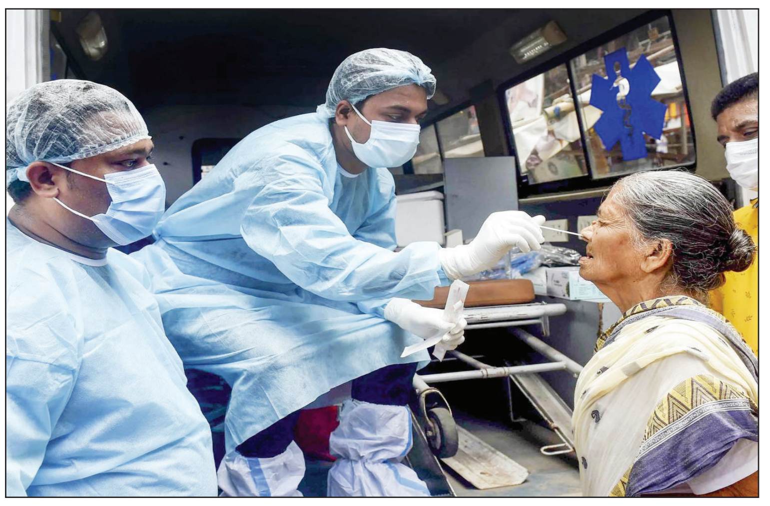

उन्होंने समयबद्ध तरीके से तथ्यात्मक रूप से सही जानकारी का प्रसार सुनिश्चित करने के साथ गलत सूचना का प्रसार के प्रति आगाह किया। आगामी त्योहारी सीजन को देखते हुए उन्होंने राज्यों को कोरोना उपयुक्त व्यवहार के पालन के संबंध में जन जागरूकता अभियानों के महत्व पर जोर दिया। डॉ मंडाविया ने राज्य के स्वास्थ्य मंत्रियों से सभी बुनियादी ढांचे की तैयारियों की व्यक्तिगत रूप से निगरानी और समीक्षा करने और आवश्यक दवाओं का पर्याप्त स्टॉक सुनिश्चित करने का अनुरोध किया। इस बैठक में केंद्रीय स्वास्थ्य राज्य मंत्री डॉ. भारती प्रवीन पवार और नीति आयोग के सदस्य (स्वास्थ्य) डॉ. वी के पॉल के साथ कई राज्यों के मुख्यमंत्री मौजूद रहें।

कोरोना संक्रमण की वजह से शेयर बाजार में ब्लैक फ्राइडे

नई दिल्ली। चीन में कोरोना संक्रमण में आई तेजी और दुनिया के कई देशों में इसके प्रसार के डर की वजह से भारतीय शेयर बाजार के लिए आज का दिन ब्लैक फ्राइडे के रूप में तब्दील हो गया। घरेलू शेयर बाजार में आज लगातार चौथे दिन बड़ी गिरावट दर्ज की गई, जिसके कारण सेंसेक्स 1,060 अंक और निफ्टी 347 अंक तक टूट गये। निफ्टी में पिछले 3 महीने के दौरान आज सबसे बड़ी इंट्रा-डे गिरावट दर्ज की गई है। हालांकि आखिरी मिनट में हुई खरीदारी के कारण इन दोनों सूचकांकों में मामूली सुधार भी हुआ। इसके बावजूद सेंसेक्स आज 60 हजार अंक के स्तर से नीचे लुढ़क गया, जबकि निफ्टी 18 हजार अंक के स्तर से नीचे गिर गया। दिन भर हुई खरीद-बिक्री के बाद सेंसेक्स 1.61 प्रतिशत और निफ्टी 1.77 प्रतिशत की कमजोरी के साथ बंद हुए।

दिन भर के कारोबार के दौरान एनर्जी, मेटल और रियल्टी सेक्टर के शेयरों में सबसे ज्यादा गिरावट दर्ज की गई। इसी तरह ऑटोमोबाइल, इंफ्रास्ट्रक्चर और पब्लिक सेक्टर एंटरप्राइजेज शेयरों में भी बिकवाली का दबाव बना रहा।

चीन के बाद अमेरिका और जापान में भी कोरोना हुआ जानलेवा

वाशिंगटन/टोक्यो। चीन में कोरोना की भयावहता से परेशान दुनिया के सामने अब अमेरिका और जापान से बड़ी चुनौती मिलती दिख रही है। कोरोना से गुरुवार को दुनिया भर में 1374 मौतें हुई हैं, जिनमें सर्वाधिक मौतें जापान और अमेरिका में हुई हैं। चीन में लगातार बढ़ते कोरोना के मामले पूरी दुनिया के लिए चिंता का सबब बने हैं। अब चीन के बाद जापान व अमेरिका में भी कोरोना के जानलेवा प्रसार की जानकारी सामने आई है। चीन के बाद जापान, अमेरिका, ब्राजील, फ्रांस और कोलंबिया में भी कोरोना तेजी से पांव पसार रहा है।

पूरी दुनिया में कोरोना प्रसार के आंकड़ों का अध्ययन करने वाली वेबसाइट वल्डोमीटर के मुताबिक सिर्फ गुरुवार के ही आंकड़े लिए जाएं तो 1374 लोगों को कोरोना के कारण जान गंवानी पड़ी। इनमें भी सर्वाधिक मौतें चीन में नहीं हुई हैं। आंकड़ों के मुताबिक जापान में सर्वाधिक 339 लोगों ने कोरोना से ग्रस्त होकर जान गंवाई है। जापान के अलावा अमेरिका में 289, ब्राजील में 165 और फ्रांस में 120 लोगों ने एक दिन में कोरोना के कारण जान गंवाई है।

सिक्किम: सेना का ट्रक खाई में गिरा, 16 जवान शहीद

नई दिल्ली। उत्तरी सिक्किम में लाचेन से करीब 15 किमी. दूर जेमा में शुक्रवार सुबह करीब आठ बजे सेना का एक ट्रक खाई में गिर गया, जिसमें 20 जवान सवार थे। इस हादसे में 16 जवान शहीद हो गए और 4 घायल हैं। सेना की ओर से जारी बयान में बताया गया कि हादसा उस वक्त हुआ, जब सेना का वाहन एक तीखे मोड़ पर फिसल कर सीधे खाई में जा गिरा। दुर्घटनाग्रस्त वाहन तीन वाहनों के काफिले का हिस्सा था, जो चटन से सुबह थंगू की ओर बढ़ा था। जेमा के मार्ग में एक तीव्र मोड़ पर वाहन एक खड़ी ढलान पर फिसल गया। उसके बाद बचाव अभियान शुरू किया गया और 4 घायल सैनिकों को हवाई मार्ग से निकाला गया। तीन जूनियर कमीशंड अधिकारियों और 13 सैनिकों ने दुर्घटना में गंभीर रूप से घायल होने के कारण दम तोड़ दिया। सेना के सभी 16 जवानों के पार्थिव शरीर दुर्घटनास्थल से बरामद कर लिये गए हैं। शहीद हुए जवानों के पार्थिव शरीर को पोस्टमार्टम के लिए गंगटोक के सरकारी एसटीएनएम अस्पताल ले जाया गया है, जिसके बाद सेना को सौंप दिया जाएगा। फिलहाल गंभीर रूप से घायल चार जवानों की रेजिमेंट का पता नहीं चल सका है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने ट्वीट कर इस हादसे पर गहरा दुख जताया है। उन्होंने कहा कि उत्तरी सिक्किम में एक सड़क दुर्घटना में भारतीय सेना के जवानों की जान जाने से गहरा दुख हुआ है। राष्ट्र उनकी सेवा और प्रतिबद्धता के लिए हृदय से आभारी है। शोक संतप्त परिवारों के प्रति मेरी संवेदनाएं. जो लोग घायल हुए हैं उनके शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना कर रहे हैं।

दुनिया की पहली नेजल कोरोना वैक्सीन को मंजूरी

नई दिल्ली: दुनिया की पहली नेजल कोरोना वैक्सीन को भारत सरकार ने मंजूरी दे दी है। कोवैक्सिन बनाने वाली हैदराबाद की भारत बायोटेक ने इसे वॉशिंगटन यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ मेडिसिन के साथ मिलकर बनाया है। नाक से ली जाने वाली इस वैक्सीन को बूस्टर डोज के तौर पर लगाया जा सकेगा। सबसे पहले नेजल वैक्सीन को प्राइवेट अस्पतालों में उपलब्ध कराया जाएगा, जिसके लिए लोगों को पैसे देने होंगे। इसे आज से ही कोरोना वैक्सीनेशन प्रोग्राम में शामिल कर लिया गया है। इसकी खास बात यह है कि शरीर में जाते ही यह कोरोना के इन्फेक्शन और ट्रांसमिशन दोनों को ब्लॉक करती है। इस वैक्सीन में इंजेक्शन की जरूरत नहीं पड़ती, इसलिए इससे चोट लगने का खतरा नहीं है। साथ ही हेल्थकेयर वर्कर्स को भी खास ट्रेनिंग की जरूरत नहीं पड़ेगी।

नेजल वैक्सीन क्या होती है?

फिलहाल हमें मांसपेशियों में इंजेक्शन के जरिए वैक्सीन लगाई जा रही है।

इस वैक्सीन को इंट्रामस्कुलर वैक्सीन कहते हैं। नेजल वैक्सीन वो होती है जिसे नाक के जरिए दिया जाता है। क्योंकि ये नाक के जरिए दी जाती है इसलिए इसे इंट्रानेजल वैक्सीन कहा जाता है। यानी इसे इंजेक्शन से देने की जरूरत नहीं है और न ही ओरल वैक्सीन की तरह ये पिलाई जाती है। यह एक तरह से नेजल स्प्रे जैसी है।

आईपीएल नीलामी: सैम करन और ग्रीन ने रचा इतिहास

कोच्चि। इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के आगामी संस्करण के लिए यहां चल रहे मिनी-नीलामी ने पिछले सारे रिकॉर्ड तोड़ दिये हैं। इंग्लिश हरफनमौला खिलाड़ी सैम करन और ऑस्ट्रेलिया के कैमरन ग्रीन ने इतिहास रच दिया है। करन को जहां पंजाब किंग्स ने 18.50 करोड़ रुपये में खरीदा। वहीं, मुंबई इंडियंस ने ग्रीन को 17.50 करोड़ रुपये में खरीदा। इन दोनों के अलावा आज महंगे बिकने वाले खिलाड़ियों की सूची में वेस्टइंडीज के विकेटकीपर निकोलस पूरन और इंग्लैंड के टेस्ट कप्तान बेन स्टोक्स रहे। पूरन को लखनऊ सुपरजायंट्स ने 16 करोड़ रुपये में खरीदा, तो स्टोक्स को चेन्नई सुपर किंग्स ने 16.25 करोड़ रुपए में खरीदा।

हैदराबाद ने भारतीय बल्लेबाज मयंक अग्रवाल को भी 8.25 करोड़ रुपये में खरीदा।

मैरिटल रेप में पति पर केस होगा: कर्नाटक हाईकोर्ट

बेंगलुरू: वैवाहिक दुष्कर्म को लेकर कानून में अपवाद की संवैधानिकता पर सुप्रीम कोर्ट के अगले महीने आने वाले फैसले से पहले कर्नाटक हाईकोर्ट ने एक मामले में पति पर केस दर्ज करने का आदेश दिया है। राज्य सरकार ने भी इस मामले में पति पर पत्नी के साथ दुष्कर्म करने के आरोप में केस दर्ज करने का समर्थन किया है। राज्य सरकार ने हाईकोर्ट के फैसले का समर्थन करते हुए सुप्रीम कोर्ट में हलफनामा दायर किया है। इसमें कहा है कि केस दर्ज होना चाहिए। हाईकोर्ट ने पत्नी के साथ जबरन यौन संबंध बनाने के लिए आईपीसी की धारा 376 के तहत पति के खिलाफ लगाए गए आरोपों को बरकरार रखा था।

वैवाहिक दुष्कर्म अपवाद की संवैधानिकता पर कोई टिप्पणी किए बिना हाईकोर्ट ने कहा कि इस मामले के तथ्यों और हालात में इस तरह के यौन हमले/दुष्कर्म के लिए पति को पूरी छूट नहीं दी जा सकती है। वैवाहिक दुष्कर्म पर बहस का एक लंबा दौर है। पूर्व में दिल्ली हाईकोर्ट में दाखिल याचिकाओं में दुष्कर्म के कानून के तहत पतियों को दी गई छूट को खत्म करने की मांग की गई थी।

केंद्र सरकार ने नहीं अपनाया था स्पष्ट रुख: केंद्र सरकार ने दिल्ली हाईकोर्ट में वैवाहिक दुष्कर्म को आपराधिक बनाने पर स्पष्ट रुख अपनाने से परहेज किया था। याचिकाओं में आईपीसी की धारा 375 के अपवाद 2 को चुनौती दी गई थी। वहीं, कर्नाटक हाई कोर्ट ने वैवाहिक दुष्कर्म की एफआईआर को रद्द करने से इनकार करते हुए फैसला सुनाया था। जस्टिस एम नागप्रसन्ना की एकल पीठ ने कहा कि आईपीसी की धारा 375 का अपवाद 2 पूर्ण नहीं है। इसमें पति को रियायत दी गई है।

केदारनाथ धाम: सुरक्षा में आईटीबीपी के 30 जवान तैनात

गुप्तकाशी: केदारनाथ धाम की सुरक्षा में आईटीबीपी के 30 जवानों को तैनात किया गया है। यह जवान आगामी 30 अप्रैल तक केदारनाथ धाम में मौजूद रहेंगे। बद्री केदार मंदिर समिति के अध्यक्ष अजयेन्द्र अजय ने यह जानकारी दी। गुप्तकाशी के पुलिस उपाधीक्षक विमल रावत ने धाम में आईटीबीपी के 30 जवानों की तैनाती की पुष्टि की है। अजयेन्द्र अजय ने बताया कि इस साल रिकार्ड 16 लाख तीर्थ यात्रियों ने बाबा के दर्शन किए हैं। गर्भ गृह को स्वर्ण मंडित किया गया है। इसलिए कपाट बंद होने से पहले उत्तराखंड के मुख्य सचिव को धाम की सुरक्षा के लिए पत्र लिखकर आईटीबीपी के जवानों को तैनात करने की मांग की गई थी। 30 जवान पूरे शीतकाल के दौरान मंदिर के तीनों द्वारों और केदारपुरी की निगरानी करेंगे। आईटीबीपी जवानों के साथ पुलिस के 20 जवान भी धाम में तैनात हैं। बदरी-केदार मंदिर समिति के अध्यक्ष अजेंद्र अजय ने बताया कि इस वर्ष केदारनाथ मंदिर के गर्भ गृह को स्वर्ण मंडित कराया गया है। सुरक्षा व्यवस्थाओं को मजबूत करने के लिए कपाट बंद होने से पूर्व प्रदेश के मुख्य सचिव को पत्र लिखा गया था।

श्रद्धा मर्डर केस: आरोपी की नार्को रिपोर्ट तैयार

नई दिल्ली: दिल्ली के श्रद्धा मर्डर केस में आरोपी आफताब की नार्को रिपोर्ट तैयार हो गई है। एफएसएल ने मामले की जांच कर रहे अधिकारी को रिपोर्ट लेने के लिए सूचित किया है। रिपोर्ट आने के बाद मामले में नया खुलासा हो सकता है। आफताब का वॉइस सैंपल सोमवार को सीबीआई मुख्यालय में लिया जाएगा। साकेत कोर्ट ने इसकी अनुमति दे दी है। दरअसल मामले में दिल्ली पुलिस ने कोर्ट से एक दिसंबर को कराने की एप्लीकेशन लगाई थी। अभी तक नार्को टेस्ट के लिए पांच दिसंबर को करने की डेट फाइनल थी। अब शुक्रवार को आरोपी आफताब की नार्को रिपोर्ट तैयार हो गई है। अधिकारी को रिपोर्ट लेने के लिए सूचित किया गया है। नार्को टेस्ट के जरिए अगर कोई रिकवरी होती है वो कोर्ट में एडमिसेबल होता है। नार्को टेस्ट रिपोर्ट आने से कुछ उम्मीद जगी है। इससे कुछ और रिकवरी के चांस हो सकते हैं। इससे पहले आरोपी का पॉलीग्राफिक टेस्ट पूरा हो चुका है। दिल्ली पुलिस के मुताबिक, श्रद्धा की मिसिंग कंप्लेंट मुम्बई में दर्ज होने के बाद जब वो मुम्बई पुलिस की पूछताछ में शामिल होने जा रहा था, तब भी आफताब के फ्रीज में बॉडी के कुछ टुकड़े थे। सूत्रों के मुताबिक, अब तक 13 हड्डियां बरामद हुई हैं। जो जंगल के आसपास के इलाके से मिली हैं। नार्को टेस्ट भी नार्मल एडमिसेबल नहीं होता। श्रद्धा हत्याकांड में रोजाना एक के बाद एक खुलासे हो रहे हैं। श्रद्धा हर हाल में आफताब को छोड़ना चाहती थी। 3-4 मई को दोनों ने अलग होने का फैसला कर लिया था, लेकिन आफताब को ये नागवार गुजर रहा था। इससे खफा होकर उसने हत्या की थी।

रुपये में ट्रेड को बढ़ावा देने पर होगा बजट में ध्यान

नई दिल्ली: जुलाई, 2022 में आरबीआइ की तरफ से रुपये में अंतरराष्ट्रीय कारोबार करने की अनुमति मिलने के बाद से इस बारे में धीरे-धीरे कदम बढ़ने शुरू हो गये हैं। एक तरफ जहां भारत सरकार की कम से कम डेढ़ दर्जन देशों के साथ रुपये में कारोबार की सहूलियत देने की बातचीत शुरू कर चुकी है। दूसरी तरफ, आरबीआइ ने अभी तक तीन देशों (रूस, श्रीलंका और मारीशस) के कम से कम 25 बैंकों को भारतीय बैंकों के साथ रुपये में कारोबार के लिए विशेष खाता खोलने की इजाजत दे दी है। अब सूचना है कि वित्त मंत्रालय भी आगामी बजट के जरिए कुछ ऐसी घोषणाएं करने पर विचार कर रहा है जिससे भारतीय कारोबारियों के लिए विदेशों से स्थानीय मुद्रा में आयात-निर्यात करने की राह आसान हो। इस बारे में दूसरे मंत्रालयों से भी मशवरा मांगा गया है। इस बारे में सरकार के स्तर पर हो रहे विमर्श में शामिल एक अधिकारी के मुताबिक, रुपये के कारोबार को अपनाने की राह में एक बड़ी अड़चन यह है कि कारोबारियों को रुपये की कीमत में उतार-चढ़ाव से होने वाले घाटे से भरपाई का कोई तरीका नहीं है।

किसानों की समृद्धि के लिए प्रतिबद्ध: सीएम

लखनऊ: किसान दिवस के अवसर पर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुक्रवार को यहां इंदिरा गांधी प्रतिष्ठान में आयोजित कार्यक्रम के दौरान किसानों, कृषि वैज्ञानिकों और कृषि उद्यमियों को सम्मानित किया। इस अवसर पर कृषक उत्पादक संगठनों (एफपीओ) के उत्पादों की प्रदर्शनी का शुभारम्भ भी किया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की जयंती पर उन्हें नमन करते हुए कहा कि आजादी के बाद चौधरी साहब ने स्पष्ट कर दिया था कि कृषि और किसानों की तरक्की के साथ ही भारत आगे बढ़ सकता है। किसान की समृद्धि ही भारत की समृद्धि होगी। उन्होंने अपना पूरा जीवन कृषि क्षेत्र को समर्पित कर दिया। वह जो चाहते थे, आज की भारतीय जनता पार्टी की केन्द्र की नरेन्द्र मोदी सरकार और उप्र सरकार कार्य कर रही है। योगी ने कहा कि प्रधान मंत्री मोदी ने देश की अर्थव्यवस्था को पांच ट्रिलियन डॉलर करने का सपना देखा है। इसके लिए उप्र को एक ट्रिलियन डॉलर इकोनॉमी वाला राज्य बनना होगा। यह तभी सम्भव होगा जब कृषि क्षेत्र का विकास हो। हमारी सरकार इस दिशा में कई कार्य कर रही है। प्राकृतिक खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। एक एकड़ की खेती में किसान को 15 हजार रुपये खर्च करने पड़ते हैं। प्राकृतिक खेती करने पर यह खर्च केवल एक हजार रुपये रह जाएगा। बुंदेलखण्ड के सभी जिलों में प्राकृतिक खेती को शुरू कराया गया है। इस मौके पर कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही, दिनेश प्रताप सिंह, बलदेव सिंह औलख के अलावा अपर मुख्य सचिव कृषि देवेश चतुर्वेदी समेत शासन के अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

निकाय चुनाव: अब शनिवार को होगी सुनवाई

लखनऊ: उत्तर प्रदेश में स्थानीय निकाय चुनाव में ओबीसी आरक्षण लागू किए जाने के मामले में इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ पीठ में विचाराधीन याचिका पर अब शनिवार को सुनवाई होगी। खंडपीठ ने यह आदेश रायबरेली निवासी सामाजिक कार्यकर्ता वैभव पांडेय व अन्य की जनहित याचिकाओं पर दिया। बीते बुधवार को सुनवाई के दौरान याचियों की ओर से दलील दी गई थी कि निकाय चुनावों में ओबीसी आरक्षण एक प्रकार का राजनीतिक आरक्षण है। इसका सामाजिक, आर्थिक अथवा शैक्षिक पिछड़ेपन से कोई लेना देना नहीं है। ऐसे में ओबीसी आरक्षण तय किए जाने से पहले सुप्रीम कोर्ट द्वारा दी गई व्यवस्था के तहत डेडिकेटेड कमेटी द्वारा ट्रिपल टेस्ट कराना अनिवार्य है। राज्य सरकार ने दाखिल किए गए अपने जवाबी हलफनामे में कहा है कि स्थानीय निकाय चुनाव मामले में 2017 में हुए अन्य पिछड़ा वर्ग (ओबीसी) के सर्वे को आरक्षण का आधार माना जाए। सरकार ने कहा है कि इसी सर्वे को ट्रिपल टेस्ट माना जाए। कहा है कि ट्रांसजेंडर्स को चुनाव में आरक्षण नहीं दिया जा सकता। पिछली सुनवाई में हाईकोर्ट ने सरकार से पूछा था कि किन प्रावधानों के तहत निकायों में प्रशासकों की नियुक्ति की गई है? इस पर सरकार ने कहा कि 5 दिसंबर 2011 के हाईकोर्ट के फैसले के तहत इसका प्रावधान है। जनहित याचिकाओं में निकाय चुनाव में पिछड़ा वर्ग को आरक्षण का उचित लाभ दिए जाने व सीटों के रोटेशन के मुद्दे उठाए गए हैं। याचियों का कहना है कि सुप्रीम कोर्ट के फैसले के तहत जब तक राज्य सरकार तिहरे परीक्षण की औपचारिकता पूरी नहीं करती तब तक ओबीसी को कोई आरक्षण नहीं दिया जा सकता। राज्य सरकार ने ऐसा कोई परीक्षण नहीं किया।

खबर संक्षेप

तालाब, चक मार्ग की जमीन पर हो रहा कब्जा, अधिकारी मौन

हनुमानगंज। लगातार भू माफियाओं पर कार्यवाही के बाद राजस्व कर्मियों की लापरवाही के चलते तालाब, चक मार्ग, नाली की जमीन पर कब्जा जारी है। बहादुरपुर विकासखंड के यरना गांव में जहा तालाब की जमीन पर खुलेआम कब्जा किया जा रहा है। वही कोटवा में चक मार्ग को ही एक व्यक्त ने अपने नाम करा लिया और गांव का एक हिस्ट्रीशीटर उसके कुछ हिस्से पर अपना कब्जा जमा लिया है। फूलपुर तहसील के झूंसी में ग्राम सभी की जमीन कब्जा कर प्लाटिंग करने वालो पर पखवारे भर पहले ही कमिश्नर के आदेश पर एफआईआर दर्ज करा कर करोड़ों की जमीन मुक्त कराई गई। वही यरना में तालाब पर हो रहे कब्जे की लिखित शिकायत लेखपाल द्वारा सरायइनायत पुलिस से की गई पर अभी तक कोई कर्यवाही नही हुई। कब्जा जारी है। यही हाल कोटवा ग्राम सभा में भी गांव में जितने तालाब है सब पर दबंगों का अवैध कब्जा है। बताया जाता है कि एक चक मार्ग को तो गांव के ही एक व्यक्ति ने अपने नाम करा कर बैंक से लोन ले लिया है और उसी चक मार्ग पर गांव का एक हिस्ट्रीशीटर कब्जा जमा लिया है। चक मार्ग को खाली कराने के लिए ग्राम प्रधान ने मामले की लिखित शिकायत उच्च अधिकारियों से की है जिसमे हल्का लेखपाल ने अपनी रिपोर्ट भी दी पर कोई कार्यवाही नही हो रही है।

रिश्तेदारी गए शंकरगढ़ के युवक की पीट-पीटकर हुई हत्या, खीरी में मिला शव

हत्यारोपियों ने कौंधियारा थाना क्षेत्र के बड़हा से दिनदहाड़े किया था अपहरण

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। रिश्तेदारी गए एक युवक का पहले अपहरण किया गया, उसके बाद शव फेंककर हत्यारे चंपत हो गए। मृतक यमुनानगर के शंकरगढ़ थाना क्षेत्र के रहने वाला है। जबकि वह पड़ोसी थाना क्षेत्र कौंधियारा के बढ़हा निवासी साढ़ू के घर गया था। युवक का शव यमुनागर के ही खीरी थाना क्षेत्र में पाया गया।

आरोपित है कि युवक के अपहरण की सूचना तत्काल पुलिस को दी गई थी, लेकिन कौंधियारा पुलिस हीलाहवाली में व्यस्त रही। गुरुवार को आधी रात खीरी थाना क्षेत्र के पौसला गांव के समीप युवक का शव पाया गया, तब पुलिस हरकत में आई। फिलहाल पुलिस ने शव को चीरघर भेजते हुए जांच शुरू कर दी है।

जानकारी के मुताबिक शंकरगढ़ थाना क्षेत्र के बसहरा उपरहार का रहने वाला गुलाबचंद्र (40) पुत्र अमरनाथ मेहनत मजदूरी कर परिवार की

आजीविका चलाता था। गुरुवार को गुलाबचंद्र अपने साढ़ू अर्जुन कुमार (निवासी बढ़हा, कौंधियारा) के घर गया था। गुलाबचंद्र के साथ उसका भतीजा संतोष भी साथ में था। इसी दरम्यान चार पहिया वाहन से आधा दर्जन लोग बड़हा निवासी अर्जुन कुमार के घर पहुंचे और वहां मौजूद गुलाबचंद्र को जबरिया अपनी गाड़ी में बैठा लिया और भाग निकले।

दिनदहाड़े, सरेआम गुलाबचंद्र को अगवा किए जाने की खबर होते ही मौके पर हड़कंप मच गया। गुलाबचंद्र के साथ गए संतोष ने घरवालों को जानकारी देते हुए इस मामले की जानकारी पुलिस को दी। इसके साथ ही परिजनों ने अपने स्तर से हर संभावित स्थानों पर खोजबीन शुरू कर दी, लेकिन देर रात तक गुलाबचंद्र के बारे में कोई जानकारी नहीं मिल पाई और न ही मुकामी पुलिस की तरफ से कोई परिणाम सामने आया। हालांकि बाद में मुकामी पुलिस ने अपहृत गुलाबचंद्र की तहरीर पर कुछ लोगों को नामजद करते हुए तहरीर दी। इस पर पुलिस ने केस दर्ज किया। दूसरी तरफ लगभग आधी रात के वक्त गुलाबचंद्र का शव खीरी थाना क्षेत्र के पौसला के समीप पाया गया। राहगीरों के जरिए सड़क किनारे शव मिलने की सूचना मिलते ही खीरी पुलिस मौके पर पहुंच गई और शव को कब्जे में लेते हुए छानबीन शुरू की और जल्द ही उस शव की पहचान गुलाबचंद्र (निवासी बसहरा उपरहार, शंकरगढ़) के रूप में हुई। फिलहाल पुलिस ने शव को चीरघर भेजते हुए जांच शुरू कर दी है। गुलाब की मौत से उसकी पत्नी संगीता देवी का रो-रोकर बुरा हाल है। गुलाबचंद्र को एक बेटी और दो बेटे हैं।

परीक्षा देने गया युवक घर नहीं लौटा

सहसों। क्षेत्र के कांदी गांव निवासी शिवाकांत दूबे का 32 वर्षीय पुत्र राजकुमार दूबे गत सोमवार को प्रयागराज स्थित एडीसी कॉलेज में एम ए की परीक्षा देने गया हुआ था परन्तु सायंकाल घर वापस नहीं लौटा जिससे परिजन बेहद चिंतित और परेशान हो गए। जबकि परीक्षा का समय दोपहर ढाई बजे से लेकर शाम पांच बजे तक होने के कारण परिजनों ने बेटे राजकुमार को घर वापस नहीं आने पर विचलित होने लगे। सायंकाल 6 बजे के बाद से परिजनों ने फोन मिलाना शुरू किया जिस पर मोबाइल स्विच ऑफ बताने लगा। परेशान होकर परिजन पता लगाने के लिए एडीसी कॉलेज पहुंचे। आसपास खोजने पर नए यमुना पुल के नीचे स्कूटी लाक हुई खड़ी मिली। परन्तु घंटो आसपास खोजबीन करने के बाद कहीं कुछ पता नहीं चला। देर रात परिजनों ने कीडगंज थाने में गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई। परिजन संभावित स्थानों तथा रिश्तेदारों के यहां खोजबीन की परन्तु युवक का कहीं पता नहीं चल सका। अनहोनी की आशंका से माता-पिता तथा स्वजनों का रो रो कर बुरा हाल है।

ईंट भट्ठा मुंशी का संदिग्ध हाल में मिला शव, हड़कम्प

अखंड भारत संदेश

घूरपुर। क्षेत्र के मुरादपुर चौराहे के पास सड़क किनारे स्थित खड्ड में एक युवक का शव शुक्रवार की सुबह मिलने से हड़कम्प मच गया। सूचना पर एकत्र भीड़ और पहुंची पुलिस ने शव की पहचान करवाई तो पता चला कि युवक पास के एक भट्ठे पर मुंशी के रूप में नौकरी किया करता था । घटना की सूचना परिजनों को हुई तो रोते बिलखते परिजन मौके पर पहुंच गए । पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है ।

खीरी थाना क्षेत्र के धन्धुआ गांव निवासी हरिभान सिंह यादव (27) पुत्र बसंतलाल यादव घूरपुर थाना क्षेत्र फुटहवा ,बगबना गांव निवासी दिनेश सिंह ईंट भट्ठा पर विगत पांच वर्ष से मुंशी के पद पर कार्यरत था । भट्ठा संचालक दिनेश सिंह के अनुसार हरिभान गुरुवार की रात आठ बजे के बाद उनकी बाइक यह कहते हुए निकला कि चौराहे पर उससे मिलने उसके गांव का व्यक्ति आ रहा है । उससे मिलते हुए चौराहे पर रिपेयर के लिए दिए मोबाइल को लेकर जल्द ही लौटकर आ रहा है । काफी देर तक जब हरिभान नहीं लौटा तो दिनेश सिंह फोन लगाए लेकिन फोन नहीं उठा। दिनेश सिंह ने सोचा कि हो सकता हो बाइक लेकर ही हरिभान घर चला गया हो । यह सोच वह घर चले आये । शुक्रवार की सुबह हरिभान का शव सड़क किनारे गड्ढे में मिलने से हड़कम्प मच गया । सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिये भेज दिया । हरिभान के सिर और चेहरे पर चोट के गहरे निशान थे । जिससे घटना का कारण स्पस्ट नहीं हो सका । हरिभान चार भाइयों में तीसरे नम्बर का भाई था । विगत 17 अप्रैल को लोहगरा निवासी सीमा यादव के साथ उसकी शादी हुई थी । थाना प्रभारी घूरपुर अश्वनी कुमार ने बताया कि मृत्यु का कारण पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही स्पस्ट होगी । बाकी अन्य बिंदुओं पर पुलिस जांच कर रही है।

शुआट्स केवीके में मनाई गई चौधरी चरण सिंह जयंती

अखंड भारत संदेश

नैनी। स्व चौधरी चरण सिंह जयंती को किसान सम्मान दिवस के रूप में कृषि विज्ञान केंद्र प्रांगण, शुआट्स प्रयागराज में मनाया गया जिसमें मुख्य अतिथि विधायक बारा श्री वाचस्पति जी, कोरांव विधायक श्री राजमणि कोल, आई ए एस जिला विकास अधिकारी श्री शिपू गिरी, ज्वाइंट डायरेक्टर एग्रीकल्चर प्रयागराज, डिप्टी डायरेक्टर एग्रीकल्चर श्री विनोद शर्मा, प्रभारी केवीके डा एस डी मेकाटी, कृषि रक्षा अधिकारी, जिला कृषि अधिकारी, शुआटस ज्वाइंट डायरेक्टर डा आलोक मिल्टन लाल, जिले के सभी विभाग के अधिकारी गण मौजूद थे। डा सुबोध यादव वैज्ञानिक पशुपालन सहित कृषि विज्ञान केंद्र के समस्त विज्ञानिक, 23 ब्लॉक के 260

प्रगतिशील किसान ने किसान मेला में भाग लिया। 32 प्रगतिशील किसानों को अपने अपने क्षेत्र में विशिष्ट कार्य के लिए सम्मानित किया गया। तकनीकी सत्र में डॉक्टर डी एस चौहान ने तिलहन दलहन की फसल की वैज्ञानिक जानकारी दी। डॉ अजय कुमार ने गो आधारित खेती पर प्रकाश डाला। डॉ निमिषा नटराजन ने मोटे अनाज द्वारा बनाए गए उत्पाद के महत्व के बारे में बताया। डॉक्टर सुबोध यादव ने सर्दी के मौसम में पशुओं की देखभाल की तकनीकी जानकारी दी। प्रभारी केवीके एस डी मेंकाटी ने कृषि विज्ञान केंद्र के कार्यों के बारे में विस्तृत जानकारी दी सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। संचालन संजय के लाल ने किया।

ब्रह्मा कुमारीज की इंदौर जोन इंचार्ज कमला दीदी की श्रद्धांजलि सभा का नैनी में हुआ आयोजन

नैनी। प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय, मध्य प्रदेश छत्तीसगढ़ उड़ीसा राजस्थान आदि क्षेत्रों में फैले इंदौर जोन की इंचार्ज कमला दीदी का देहावसान कुछ दिनों पूर्व हो गया था। कमला दीदी प्रतापगढ़ जिले की रहने वाली थी तथा उनकी शिक्षा दीक्षा प्रयागराज में हुई थी। उनके निमित्त ब्रह्माकुमारीज के प्रयागराज क्षेत्र के मुख्य सेवा केंद्र सद्भावना भवन, बसवार रोड धनुआ में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। इस अवसर पर कमला दीदी के छोटे भाई राधेश्याम तिवारी तथा अन्य परिवार जन सहित संस्था के जुड़े तमाम भाई बहनें उपस्थित रहे। प्रयागराज क्षेत्र की मुख्य निदेशिका मनोरमा दीदी ने बताया कि कमला दीदी बहुत ही करुणाशील निर्मानचित्त भगवान के प्रति अटल समर्पित बहन थी। उन्होंने अपने जीवन काल में ब्रह्माकुमारीज की सेवाओं को मध्य प्रदेश छत्तीसगढ़ राजस्थान तथा उड़ीसा के सुदूर क्षेत्रों में फैलाया। उन्होंने ब्रह्माकुमारीज के 65 से ज्यादा सेवा केंद्र स्थापित किए तथा सैकड़ों बहनों को निर्देशित किया। कमला दीदी की सामाजिक सेवाओं में भी बहुत रूचि थी तथा कोरोना कॉल के दौरान उन्होंने ट्रकों अनाज तथा सब्जियां गरीबों बंटवाई थी। इस अवसर पर कमला दीदी के छोटे भाई पूर्व वायु सैनिक राधेश्याम तिवारी जी ने दीदी की तपस्या उनके समर्पित जीवन, भगवान से प्यार तथा समाज के प्रति कल्याण की भावना कैसी थी उसके बारे में बताया।

चोरी की बैटरी ई रिक्शा तथा देशी बम के साथ दो चोरो को पुलिस ने किया गिरफ्तार

नैनी। थाना की पुलिस ने मुखबीर की खास सूचना पर पुलिस जाल बिछाकर थाना क्षेत्र मेला ग्राउंड सीओडी से आज दो शातिर बैटरी ई रिक्शा चोरो को देशी बमो के साथ गिरफ्तार किया है।पुलिस के मुताबिक पूछताछ तथा तलासी में उनके कब्जे रिक्शा के साथ नौ देसी बम बरामद हुए है दर्ज मुकदमे में 411की बढ़ोत्तरी करने के बाद उन्हें जेल भेजा गया।पुलिस आयुक्त रमित शर्मा के निर्देश पर पुलिस उपायुक्त सौरभ दिक्षित व एसीपी करछना द्वारा दर्ज मुकदमे के वांछित अपराधियो की शीघ्र गिरफ्तारी करने हेतु दिए गए निर्देश पर गुरुवार को नैनी कोतवाली प्रभारी निरीक्षक बृजेश सिंह के नेतृत्व में उनकी पुलिस मुकदमे से जुड़े आरोपियों की तलाश में लगी हुई थी।इसीबीच 742/22 मुकदमे के आरोपी सीओडी से मामा भांजा तालाब धनुआ के पास होने की जानकारी मिली।इसपर चौकी प्रभारी मामा भांजा तालाब संतोष कुमार सिंह अन्य सिपाहियों के साथ पहुंचे।पुलिस जाल बिछाते हूऐ मामा भांजा तालाब नैनी निवासी भोला भारतीया पुत्र लवकुश व साउथ मलाका पानी टंकी के पास थाना कोतवाली पूर्व चकभटाही नैनी निवासी अर्जुन सिंह पुत्र सोहन सिंह को ई रिक्शा के साथ पकड़ लिया।संदेह होने पर जब उनकी तलासी ली तो कब्जे से नौ देशी बम मिले बरामद जिसके बाद बरामद सामान समेत दोनो को थाने पर लाये जहाँ आगे की संवैधानिक विधिक कार्यवाही की गई।

न्यूज झरोखा...

थाने के सामने खड़े ट्रक में बेकाबू ट्रेलर ने मारी टक्कर चालक खलासी घायल

घूरपुर। थाने के सामने हाइवे पर सीज की गई खड़े ट्रक में गुरूवार की रात बेकाबू ट्रेलर ने टक्कर मार दी। टक्कर इतनी तेज थी कि खड़ा ट्रक कुछ दूर तक खिसक गया। ट्रेलर और ट्रक दोनो क्षतिग्रस्त हो गए। ट्रेलर का चालक राम नरेश यादव और खलासी राम बाबू 22वर्ष निवासी गण गोंडा घायल हो गए। पुलिस ने दोनों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया। इसी क्रम में शुक्रवार की रात ही घूरपुर थाना प्रभारी का सरकारी वाहन सूमो क्षेत्र के अमीलिया के हाइवे पर खड़ी थी कि बेकाबू ट्रक पीछे से टक्कर मार दी जिससे पुलिस वाहन बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। गनीमत थी कि उस समय कोई पुलिस कर्मी सवार नहीं था।

पार्षद प्रत्याशी सोनू पासी ने किया अलाव की व्यवस्था

सोरांव। इन दिनों कोहरा होने से सुबह और शाम मौसम बहुत ही शुष्क रहता है तथा इतना ही नहीं गलत भी बढ़ जाती है। जिससे राहगीरों व व्यापारियों संग ग्रामीणों को काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। ठंड से बचाव के लिए सरकार की तरफ से अभी तक कोई भी व्यवस्था नहीं की गई है। इसको देखते हुए क्षेत्रवासियों को ठंड से राहत दिलाने के लिए वार्ड नंबर 14 भदरी से अपना दल यस के संभावित प्रत्याशी सोनू पासी द्वारा दर्जनों स्थानों पर अपने निजी खर्चे से अलाव की व्यवस्था की गई। इस काम के लिए क्षेत्रवासियों ने सोनू पासी को तहे दिल से धन्यवाद दिए। जिसमें अरैसपुर,गौरा, भदरी, क्षेत्र के सभी प्राथमिक विद्यालय, उच्च प्राथमिक विद्यालय,इंटर कॉलेज,लखनीपुर,प्रसादपुर लेहरा सहित कई स्थानों पर हजारों रुपए खर्च करके अलाव की व्यवस्था करके क्षेत्र में एक मिसाल कायम किए। इसके लिए ऋषि यादव, अतुल पांडे, प्रवीण तिवारी, सर्वेश पटेल, हरि प्रकाश सरोज, अजय पासी, पंकज पटेल, मनोज कुमार संग सैकड़ों लोगों ने सोनू को धन्यवाद दिए।

खेल के क्षेत्र मे भी अपार संभावनायें : अनिल कुमार विश्वकर्मा

जसरा। व्यक्ति एवम उनके व्यक्तित्व दोनों के विकास मे खेल अपना महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है।खेल के क्षेत्र मे भी वर्तमान मे अपार संभावनाएं है या दूसरे रूप मे कहा जाए कि खेल के माध्यम से भी छात्र अपने जीवन को उज्जवल बनाते हुए माता -पिता, समाज एवम राष्ट्र को गौरवान्वित कर सकते है उक्त बातें कमला स्मारक इंटर कालेज मे आयोजित खेलकूद आयोजन मे मुख्यवक्ता के रूप मे विद्यालय के प्रबंधक अनिल कुमार विश्वकर्मा ने छात्र एवम छात्राओं को सम्बोधित करते हुए बोल रहें थे आगे उन्होंने यह भी कहा कि नियमित खेलों मे प्रतिभाग करने से मोटापा, शुगर, बीपी इत्यादि बीमारियों से सदैव के लिए छुटकारा पाया जा सकता है। इसके साथ ही आत्मविश्वास, मन को एकाग्र करने के लिए भी खेल एवम योग को अपनाकर इन क्षेत्रों मे भी स्वयं को मजबूत किया जा सकता है।अपने सम्बोधन मे प्रबंधक अनिल कुमार विश्वकर्मा ने यह भी कहा कि स्वस्थ शरीर मे ही स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण होता है और क्षेत्र कोई भी भी सफलता के लिए सदैव स्वस्थ मस्तिष्क का होना बहुत ही आवश्यक है इसके लिए खेल एवम योग के योगदान काफी अहम है। इस अवसर पर विद्यालय की प्रधानाचार्या श्रीमती अलका विश्वकर्मा ने विद्यार्थियों को पढ़ाई के साथ खेल एवम योग के क्षेत्र मे भी प्रतिभाग करने के लिए प्रोत्साहित अपील की ।कार्यक्रम मे खेल एवम पढ़ाई के क्षेत्र मे इक्कीस से अधिक मेधावियों को प्रमाणपत्र भेटकर सम्मानित किया गया। उक्त अवसर पर छात्र /छात्राओं सहित विद्यालय के शिक्षक एवम शिक्षिकाएं मौजूद रहीं।

मुख्यमंत्री आवास के लिए महिलाएं ठोकरें खाने को मजबूर!

बारा। बारा तहसील के विकासखंड शंकरगढ़ के अंतर्गत दर्जनों ग्राम सभाओं की गरीब और निराश्रित महिलाओं ने प्रधानमंत्री/मुख्यमंत्री आवास न मिलने पर खण्डविकास अधिकारी कार्यालय के सामने भारी संख्या में पहुंचकर विरोध-प्रदर्शन किया। विकासखंड के बढ़ैया की शीला देवी व जिगनी,बैसनपुरवा की संगीता, टिकरौंही कला की शीला देवी व तारा देवी, ललई की सुधा पाल,लोहगरा की कमला देवी ने आवास,पूरेगंगाछ गाँव की श्रीदेवी, बसहरा उपरहार की पूजा गुप्ता, सरोज कुमारी, नीलम सिंह, कुबरी-भडिवार की राजकुमारी, रानीगंज की मालती, भेलाव की मंजू,राजपति,सुमन,सीमा,उमा, शकुंतला, कल्याणपुर की अमरावती व प्रमिला प्रजापति ने आवास,शौचालय व बेरोजगारी की समस्याओं को लेकर भारी संख्या में बीडीओ कार्यालय पर ज्ञापन देने पहुँची। खण्डविकास अधिकारी के न होने पर वे कार्यालय के बाहर ही अपनी मांगों को लेकर विरोध-प्रदर्शन करने लगीं ।गाँव की महिलाओं का आरोप है कि उनके घर खपरैल व छप्परनुमा हैं और जर्जर हालत में हैं ।कई वर्षों से महिलाओं सहित उनका पूरा परिवार उसी जर्जर मकानों में रहने को मजबूर है जो कभी भी गिर सकता है, जिससे परिजनों की जान को खतरा बना हुआ है ।महिलाओं ने माँग किया कि उन्हें भी प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री आवास,शौचालय आदि की व्यवस्था की जाये, साथ ही रोजगार देने की भी व्यवस्था की जाये, जिससे परिवार का गुजारा हो सके।

न्यायालय के आदेश पर प्रधानाध्यापक पर डेढ़ लाख गबन का मुकदमा दर्ज

अखंड भारत संदेश

मऊआइमा। विद्यालय के ज्वाइंट खाते से अभिलेखों में हेराफेरी करके डेढ लाख रुपये प्रधानाध्यापक पर गबन करने का आरोप प्रबंधक ने लगाते हुए न्यायालय के आदेश पर फ्राड का मुकदमा दर्ज करा दिया है। मिली जानकारी के अनुसार मऊआइमा थाना क्षेत्र ग्राम बसरही में स्थित उच्च प्राथमिक विद्यालय के प्रबंधक श्याम लाल मौर्या पुत्र महादेव का आरोप है कि विधालय के ज्वाइंट खाते से विभिन्न तिथियों को प्रधानाध्यापक फर्जी हस्ताक्षर एंव अभिलेखों में हेराफेरी करके 2019 से अब तक डेढ लाख से अधिक रूपया खाते निकाल कर हडप लिया। प्रबंधक का आरोप है कि वह जब प्रधानाध्यापक से पूछे तो वह आमादा फसाद होकर जान से मारने की धमकी भी दिए। तमाम शिकायतों के बावजूद कहीं कोई सुनवाई न होने पर न्यायालय के आदेश पर शुक्रवार को प्रबंधक श्याम लाल मौर्या ने प्रधानाध्यापक गुलाब चन्द्र पटेल ग्राम सराय मदन सिंह थाना होलागढ के खिलाफ फ्राड जाल साजी का मुकदमा दर्ज करा दिया है।

वृद्ध को बाइक ने मारी टक्कर जख्मी मुकदमा दर्ज

मऊआइमा। सडक पार कर रहे वृद्ध को बाइक ने जोरदार टक्कर मार दी। जिससे वृद्ध घायल हो गया। अज्ञात अज्ञात बाइक चाक के खिलाफ मुकदमा दर्ज। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम सराय लालू निवासी राजा बाबू पुत्र अमृत लाल का कहना है कि उसके पिता अमृत लाल 55 वर्ष पुत्र रामधन कंचनपुर के पास सडक पार करके सामान लेने जा रहे थे। तभी प्रतापगढ की ओर से आ रही बाइक ने उनके पिता को जोरदार टक्कर मार दी। जिससे वह जख्मी हो गए। जिन्हें नाजुक हालत में प्राइवेट अस्पताल में भर्ती कराया गया है। राजा बाबू ने बाइक चालक नाम पता अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया है।

कौटिल्य आचार्य रत्न से सम्मानित हुए शिक्षक : कैलाश गौतम की मशहूर कविता अमौसा का मेला पर खूब बजी ताली

अखंड भारत संदेश

नैनी। यमुनानगर के आरके ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशन्स, नैनी, प्रयागराज में दो दिवसीय कार्यक्रम- स्वागत समारोह फ्रेशर 2 के 2022ह्यह्य एवं वार्षिकोत्सव कौटिल्य समागमह्यह्य का दूसरा दिन शानदार रहा। एक ओर जहां ₹कौटिल्य आचार्य रत्नर से विभिन्न स्कूल कालेज के प्रधानाचार्य , शिक्षकों सम्मानित किया गया तो वही दूसरी ओर इसके कवि सम्मेलन का रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें लोककवि माटी के लाल अशोक बेशरम ने अपने गुरु कैलाश गौतम की मशहूर कविता चला चली अमवसा का मेला अवधी वर्जन पेशकर वहा मौजूद युवाओं की भीड़ में उत्साह भर दिया। जिसमें बंधवा पर चम्पा चमेली भेटौली...की पंक्ति पर खूब ताली बजी। मुख्य अतिथि डॉ. केपी श्रीवास्तव विधान परिषद सदस्य व सुरेश कुमार त्रिपाठी अध्यक्ष उत्तर प्रदेश माध्यमिक शिक्षक संघ व विधान परिषद सदस्य, वाचस्पति, विधायक बारा एवं ईएनटी सर्जन डॉ. अजय शुक्ला मौजूद थे। मुख्य अतिथियों नें मां सरस्वती को माल्यार्पण एवं समस्त विभाग के विभागाचार्यों ने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। संस्थागत छात्रों ने समूह नृत्य के माध्यम से सरस्वती वन्दना एवं विभिन्न प्रकार के

गीत, गजल, कव्वाली के साथ मनोहारी प्रस्तुति दी। संस्थान के चेयरमैन डॉ. आशुतोष त्रिपाठी ने समस्त अतिथियों को अंगवस्त्र प्रदान कर स्वागत व अभिनंदन किया। विभिन्न प्रतियोगिताओं में आरके स्कूल ऑफ नर्सिंग जीएनएम से मिस्टर फ्रेशर अंजेश एवं मिस फ्रेशर नंदिनी राव तथा एएनएम से मिस फ्रेशर कोमल तथा आरके इंस्टीट्यूट ऑफ पैरामेडिकल साइंसेज से मिस्टर फ्रेशर अनुपम सिंह एवं मिस फ्रेशर मानसी सिंह को चुना गया। इसी क्रम में नामचीन कवियों में डॉ. कमलेश शर्मा, अशोक ह्यबेशरमह्य, संतोष शुक्ल ह्यसमर्थह्य एवं बिहारी लाल अम्बर ने अपनी रचनाओं एवं कविताओं के माध्यम से समारोह में चार चांद लगा दिया। अन्त मे संस्था के निदेशक इं. आशीष त्रिपाठी ने समस्त विभागों के विभागाचार्यों एवं शिक्षकों को सफल आयोजन हेतु शुभकामनायें एवं बधाई दी। इस दौरान डॉ. विशाल उपाध्याय, डॉ. चन्द्रशेखर सिंह, डॉ. मुहम्मद जफर, डॉ. मो. शाहिद, डॉ. रितेश तिवारी, कार्तिकेय मिश्रा, सुरेन्द्र सिंह, दिलीप सिंह, दीपक यादव, पंकज चतुर्वेदी, प्रदीप तिवारी, हर्षिता श्रीवास्तव, नेहा मिश्रा सयन कुमार, सतेन्द्र मिश्रा, शुभम मिश्रा, राम बाबू तिवारी, अनुज शुक्ला, पंकज तिवारी, ज्योति सिंह, अंजना यादव, नीति अलेक्जेंडर, धीरज मिश्रा, सुशील शुक्ला, गुरु प्रसाद द्विवेदी, प्रवीण द्विवेदी, अभिषेक मालवीया, अर्पिता यादव, अनुभव शुक्ला आदि मौजूद थे।

शहरों की तरह गांवो को स्वच्छ बनाने का सरकार का मुख्य उद्देश्य : पियूष रंजन

अखंड भारत संदेश

करछना। सरकार का मुख्य उद्देश्य विकास का मुद्दा लेकर चल रही है जो शहरों की तरह अब गांव में विकास कार्य कराए जाएंगे सरकार का मुख्य उद्देश स्वच्छता एवं स्वच्छ बनाने के लिए शहरों की तरह गांव में भी स्वच्छ भारत मिशन दिखाई देगा उक्त बातें विधायक करछना पीयष रंजन निषाद विकास खंड कौंधियारा के ग्राम पंचायत करमा में कूड़ा संग्रह केंद्र के उद्घाटन के उपरांत आयोजित कार्यक्रम में कहीं उन्होंने कहा कि अब शहर की तरह गांव भी स्वच्छ बनेंगे जिससे साफ सफाई और स्वच्छता से बीमारियों पर जहां रोक लगेगी वही गांव भी साफ और सुंदर लिखेगा लगभग ?700000 से बने कूड़ा संग्रह केंद्र का उद्घाटन करने के पश्चात ई-रिक्शा का विधायक एवं डीपीआरओ ने चलाकर लोगों को दिखाया इस अवसर पर डीपीआरओ अपर आलोक

सिन्हा, सीबी सिंह खंड विकास अधिकारी कौंधियारा मीना सिंह ,ब्लॉक प्रमुख चाका अनिल कुमार पटेल, एडीओ पंचायत लाल बहादुर यादव, सचिव नील कृष्ण प्रजापति, प्रधान मिथिलेश जयसवाल, जेई अनीता चौरसिया, पूर्व प्रधान अमरीश जायसवाल ,दिलीप कुमार पूर्व बीडीसी , मोहम्मद अजीम, डॉक्टर मुन्ना सिंह, देवराज पटेल, गगन पटेल, सौरभ जायसवाल ,संतोष केसरी जीतलाल ,इस्लाम , सुबालाल आदि बड़ी संख्या में गांव के गणमान्य लोग व महिलाएं उपस्थित रहे।

एक बार फिर एंबुलेंस में गूंजी किलकारी

अखंड भारत संदेश

सहसों। विकास खण्ड बहादुरपुर क्षेत्र के बिरना गांव निवासी रन्नो देवी पत्नी अंकित को शुक्रवार की तड़के सुबह प्रसव पीड़ा होना शुरू हुआ। जिससे स्वजन तत्काल गांव की आशा बहू राजकुमारी को फोन करते हुए जच्चा बच्चा प्रसव के लिए चलाई गई 102 एंबुलेंस को फोन किया। मौके पर पहुंचे ईएमटी किशन सिंह एवं पायलट अनिल कुमार ने गर्भवती महिला को एंबुलेंस से लेकर सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र बनी के लिए चले। परन्तु रास्ते में ही प्रसव पीड़ा अधिक होने के कारण एंबुलेंस को रोककर आशा बहू की मदद से महिला ने एक स्वस्थ बच्चे को जन्म दिया। तत्पश्चात पायलट ने सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र बनी पहुंचकर जच्चा-बच्चा की जांच करवाई जिसमें दोनों स्वस्थ हैं।

खबर संक्षेप

पेयजल आपूर्ति ठप होने से ग्रामीणों में आक्रोश

बारा। बारा खास सहित इससे जुड़े हुए मजरों व गाँवों में पेयजल आपूर्ति के लिए बीस साल पहले आठ किमी की दूरी पर पांडर-कोटवारन का पुरवा से तहसील मुख्यालय तक पाइप लाइन बिछाई गई थी जो अब काफी जर्जर हो गई है जिससे आये दिन जलापूर्ति ठप हो जाती है और लोगों को पानी की समस्याओं से दो चार होना पड़ता है। इसे लेकर विभागीय अधिकारियों व उपजिलाधिकारी बारा से भी कई बार शिकायत की गई है। बारा सहित आसपास के गाँवों में भूमिगत जल अत्यंत क्षारीय होने की वजह से पीने योग्य नहीं है इसके लिए वर्ष 2001 में लाखों रुपए की लागत से पानी की टंकी व ट्यूबवेल का निर्माण कराया गया था। मरम्मतीकरण के अभाव में पाइप लाइन क्षतिग्रस्त हो गई है। ग्राम प्रधान संतोष जायसवाल, सुभाष केसरी, सुरेश केसरवानी, डॉ राजबहादुर यादव, रईस अहमद ने बताया कि एक महीने में पांच दिन भी ढंग की जलापूर्ति नहीं हो पाती,जिससे पेयजल संकट बढ़ गया है शिकायत करने पर भी कोई सुनवाई नहीं होती। उपजिलाधिकारी बारा सुदन अब्दुल्लाह ने कहा कि समस्या सामने आई है, विभागीय अधिकारियों से वार्ता कर शीघ्रातिशीघ्र समस्या का समाधान कराया जायेगा।

विक्रमाजीत के नाम पर होगा सड़क का नाम, लगाई जाएगी उनकी प्रतिमा

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। फाफामऊ के विधायक रहे स्वर्गीय विक्रमाजीत मौर्य के नाम पर जिले की एक सड़क का नाम होगा। इसके साथ ही उनकी एक मूर्ति भी उचित स्थान पर लगाई जाएगी। सूबे के डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य ने यह एलान शुक्रवार को जिला पंचायत सभागार में स्वर्गीय विक्रमाजीत मौर्य की याद में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में किया। उन्होंने श्रद्धांजलि सभा में कहा कि पूर्व विधायक विक्रमाजीत मौर्य को जनप्रिय नेता बताया। कहा कि उनकी कमी हमेशा खलेगी। इस दौरान उन्होंने उनके चित्र पर पुष्प अर्पित किए। दो मिनट का वहां मौन भी रखा गया। इस अवसर पर सांसद केशरी देवी पटेल, डा. रीता बहुगुणा जोशी, विधायक हर्षवर्धन बाजपेयी, एमएलसी लक्ष्मण आचार्य, सुबोध सिंह, गणेश केसरवानी, पवन श्रीवास्तव, कविता यादव त्रिपाठी, राजेश केसरवानी, अनीता सचान, अवधेश चंद्र गुप्ता, मुरारी लाल अग्रवाल आदि मौजूद रहे। इसके पूर्व डिप्टी सीएम दरभंगा कालोनी स्थित पूर्व विधायक के आवास पर भी जाकर उनके परिजनों से मिले। इसके बाद वह विधि प्रकोष्ठ के पदाधिकारी रहे देवेंद्र नाथ मिश्र एवं यश विक्रम त्रिपाठी के भी घर गए।

पक्की संगम पहुंचे केशव, गेट बनवाने की हुई मांग

डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य शुक्रवार को गुरुद्वारा पक्की संगत पहुंचे। यहां मत्था टेकने के बाद उन्होंने वहां के पदाधिकारियों से बातचीत की। इस दौरान उनसे कहा गया कि गुरुद्वारा पहुंचने के लिए लोगों को दिक्कत होती है। लोग पूछ-पूछ कर गुरुद्वारे तक पहुंचते हैं। इसलिए जरूरी है कि गुरुद्वारे का सूचना पत्र (लोगो) बनाने के साथ ही कल्याणी देवी पार्क के पास एक भव्य गेट का निर्माण हो। इसके अलावा शहर में विभिन्न स्थानों पर लगे पीडीए और पीडब्ल्यूडी के होर्डिंग में भी पक्की संगत का उल्लेख हो। इस दौरान महंत संत ज्ञान सिंह आदि मौजूद रहे।

शौच गई छात्रा ट्रेन की चपेट में आने से दर्दनाक मौत

अखंड भारत संदेश

घर में शौचालय न होने से छात्रा की गई जान

करछना। सरकार द्वारा चलाई जा रही स्वच्छ भारत मिशन का सपना कब साकार होगा यह तो देखने वाली बात होगी इसी का शिकार कक्षा 11 की पढ़ने वाली एक छात्रा की दर्दनाक मौत हो गई बताया जाता है कि करछना थाना क्षेत्र के बस्तर गांव निवासी स्वर्गीय राकेश कुमार पटेल की पुत्री जस्सी जो कक्षा 11 की छात्रा थी शुक्रवार सुबह घर से शौच के लिए पास स्थित रेलवे लाइन की तरफ शौच करने गई थी जहां रेलवे लाइन पार करते समय ट्रेन की चपेट में आने से उसकी दर्दनाक मौत हो गई सूचना पर पहुंचे परिजन तो कोहराम मच गया स्थानी पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया बताया जाता किस के पिता की मृत्यु लगभग 10 वर्ष पूर्व हो गई थी दो बहन एक भाई में सबसे बड़ी थी बताया जाता है कि घर में शौचालय का निर्माण नहीं होने के कारण परिजनों को बाहर ही शौच के लिए जाना पड़ता है,जब कि सरकार हर घर में शौचालय हो की सुविधा आनलाइन आवेदन के तहत सरकार खाते में पैसा ट्रांसफर कर शौचालय निर्माण कार्य के लिए मदद कर रही है उसके बावजूद भी गांव के प्रतिनिधियों द्वारा ऐसे गरीब लोगों को जानकारी के अभाव में शौचालय आदि की सुविधा से वंचित रहना पड़ रहा है।

एक किलो सौ ग्राम गांजे के साथ एक को पकड़ा,भेजा जेल

घूरपुर। इलाकाई पुलिस ने क्षेत्र के इरादतगंज से एक गांजा तस्कर को पकड़कर उसके पास से एक किलो सौ ग्राम गांजा बरामद करते हुए केस दर्ज कर जेल भेजा है। घूरपुर थाना प्रभारी अश्वनी कुमार को खास मुखबिर से सूचना मिली कि एक संदिग्ध व्यक्ति झोले में गांजा लेकर कहीं बेचने के लिए जा रहा है । सूचना मिलते ही घूरपुर पुलिस ने मौके पर पहुंच उक्त व्यक्ति को पकड़ घूरपुर थाने ले आई और उसकी तलाशी ली तो उसके पास एक किलो सौ ग्राम अवैध गांजा बरामद हुआ । पुलिस ने पकड़े गए राजा पुत्र नसीम अहमद निवासी इरादतगंज के खिलाफ केस दर्ज कर जेल भेज दिया।

ईडी दफ्तर में मुख्तार के सीए से तीन घंटे तक हुई पूछताछ

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। मनी लान्ड्रिंग मामले की जांच में जुटी प्रवर्तन निदेशालय की टीम ने शुक्रवार को मुख्तार अंसारी के चार्टर्ड अकाउंटेंट से पूछताछ की। तीन घंटे तक चली पूछताछ में विकास कंसट्रक्शन समेत माफिया के अन्य फर्मों की बैलेंस शीट दिखाकर सवाल दागे गए। इसके बाद दोनों को आमने-सामने बैठाकर भी पूछताछ की गई। मुख्तार के सीए को पिछले दिनों समन जारी कर बुलाया गया था। इसी क्रम में वह शुक्रवार को ईडी के सिविल लाइंस स्थित दफ्तर में पहुंचा। यहां पहले उससे माफिया से संबंधित विकास कंसट्रक्शन समेत अन्य फर्मों की बैलेंस शीट दिखाकर पूछताछ की गई। पूछा गया कि इन फर्मों में पैसा कहां से आया और रकम कैसे व किन-किन माध्यमों से खर्च हुई। उधर, कस्टडी रिमांड अवधि बढ़ने के बाद मुख्तार व उसके सीए को आमने-सामने बैठाकर भी पूछताछ की गई। दोनों से सवाल दागे गए। सीए की ओर से मिले जवाबों को लेकर मुख्तार से सवाल पूछे गए। इसी तरह मुख्तार ने जो भी जानकारी दी गई, उसे लेकर सीए से पूछताछ की गई। सूत्रों का कहना है कि अगले कुछ दिनों में मुख्तार के कई अन्य करीबियों को भी समन जारी कर पूछताछ के लिए बुलाया जा सकता है। उधर उसकी पत्नी अफ्शा अंसारी पर भी शिकंजा कसा जा सकता है। दरअसल अफ्शा को समन जारी कर पूछताछ के लिए बुलाया गया था लेकिन वह ईडी अफसरों के समक्ष पेश नहीं हुई। बेटे अब्बास व मुख्तार से भी उसके बारे में सवाल पूछे गए लेकिन दोनों ने कोई जानकारी होने से इन्कार कर दिया।

दिव्यांगोत्थान श्रीराम सेवा न्यास ने जरूरतमंदों को वितरित किया कंबल व ट्राईसाईकिल

अखंड भारत संदेश

मेजा रोड। हम मानव अगर किसी जरूरतमंद मानव के काम न आ पाए तो हमारा मानव जीवन व्यर्थ है। असल में मानव जीवन का सही उद्देश्य ही जरुरतमंदों की मदद करना होता है। हमने पाया है कि अगर हम दूसरों की मदद करते हैं तो हमें काफी खुशी मिलती है। यह खुशी हमारे जीवन के तनाव को कम ही नहीं करता बल्कि सुकून और शांति प्रदान करता है।उक्त उद्गार अपर महाधिवक्ता मुख्य अतिथि एमसी चतुर्वेदी ने दिव्यांगोत्थान श्रीराम सेवा न्यास प्रयागराज के तत्वावधान में शुक्रवार को विकास खंड उरूवा के शंभूकापुरा जेवनियां में जरुरतमंदों को कंबल,ट्राइसाइकिल व अन्य उपकरण वितरण के मौके पर बतौर मुख्य अतिथि व्यक्त किए। उन्होंने कार्यक्रम के आयोजकअधिक उच्चन्यायलय अभिषेक तिवारी की कार्यशैली की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए उनकी युवा टीम को बधाई दी। उन्होंने कहा कि जरूरत मंदों के लिए सेवा भाव का यह सिलसिला अक्षुण्ण रुप से चलता रहे तथा सेवा भाव की यह ज्योति अनवरत जलती रहें।कार्यक्रम में सैकड़ों लोगों को कंबल तथा जरूरतमंदों को ट्राई साइकिल देकर हौसला अफजाई किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में अपर शासकीय अधिवक्ता विनीत पांडे मौजूद रहे

कार्यक्रम में पहुंचे मुख्य अतिथियों का अभिषेक तिवारी अधिवक्ता व पूर्व प्रधान जवनिया रुचि तिवारी ने अंगवस्त्रम तथा स्मृति चिन्ह भेंट कर स्वागत किया अपने स्वागत भाषण में श्री तिवारी ने न्यास के उद्देश्यों को विस्तार से बताते हुए समाज सेवा के लिए संकल्प किया उन्होंने अपने प्रेरणा स्त्रोत अपर पुलिस अधीक्षक कासगंज जितेंद्र कुमार दुबे के सहयोग को लोगों के सामने रखा कार्यक्रम की शुरूआत क्षेत्र के मशहूर गायक तिवारी बंधुओं ने स्वागत गीत गाकर अतिथियों को भावविभोर कर दिया कार्यक्रम की अध्यक्षता शिवदत्त पांडे कुशल संचालन डॉक्टर प्रभारी त्रिपाठी ने किया इस मौके पर प्रमुख रूप में समाजसेवी श्री नित्यानंद उपाध्याय सिद्धांत तिवारी क्षेत्र अधिकारी मेजा विमल किशोर मिश्रा कोतवाल मेजा जनेश्वर मिश्रा राजू पांडे राजू तिवारी मेजा ब्लॉक प्रमुख प्रतिनिधि गंगा प्रसाद मिश्रा मनीष तिवारी हर्षित मिश्रा आशु पाल राहुल श्रीवास्तव दिनकर मिश्रा रिंकू ओझा व्यापार मंडल अध्यक्ष पप्पू उपाध्याय कमलेश पांडे कमला शंकर शास्त्री यदि उपस्थित रहे।

तुलसी पूजन कर जरुरतमंदों को कंबल देना सराहनीयः देशराज सिंह

मेजा रोड। मेजा विकासखंड के ममोली गांव मे शुक्रवार को तुलसी पूजन कार्यक्रम व कंबल वितरण समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन कामता प्रसाद पाल ने किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला पंचायत सदस्य देशराज सिंह रहे। तुलसी पूजन के दौरान जिला पंचायत सदस्य देशराज सिंह ने कहा कि तुलसी को बहुत ही शुभ और पवित्र माना जाता है। 25 दिसंबर को तुलसी पूजन दिवस मनाया जाता है। श्री सिंह ने आगे कहा कि गरीबों की सेवा करना हम सबका कर्तव्य है जहां तक संभव हो सके गरीबों, असहायों की सेवा करनी चाहिए। प्रधान प्रतिनिधि मदरहा अवनीश मिश्रा ने कहा कि गरीबों, असहायों व जरुरतमंदों की मदद कर खुशी महसूस होती है। इस दौरान जरुरतमंदों को कंबल वितरित किया गया।कार्यक्रम मे संगीत, भजन कीर्तन के बीच तुलसी पूजन कार्यक्रम, बाल संस्कार कार्यक्रम, मातृ पितृ पूजन कार्यक्रम, गरीबों को कंबल वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का संचालक मनोज कुमार ने किया।इस मौके पर प्रधान प्रतिनिधि लूतर मोहम्मद काजी, राजनंदन पाल, बृज नंदन पाल, लालता प्रसाद, कृष्ण कुमार, अशोक कुमार, मोहन लाल, दुर्गा प्रसाद, संतोष कुमार, अशोक कुमार, परमेश्वर पटेल, बाबा सेठ, कमलेश कुमार, रामप्रवेश, विभव प्रणव, विजय बहादुर, राजदास, सर्वत्र, कन्हैया लाल, जानकी देवी प्रधान ममोली, रंजू देवी, गीता देवी, दुर्गावती, राहुल, सचिन, राकेश, गौतम, विनय, रमाकांत, बिहारीलाल, प्रेम बहादुर सहित सैकड़ों पुरुष व महिलाएं मौजूद रहे।

पुलिस आयुक्त छात्रों से बोले- जो निर्दोष हैं, वह निश्चिंत रहें मामले में निष्पक्ष होगी कार्रवाई

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। इलाहाबाद विश्वविद्यालय बवाल मामले में शुक्रवार को छात्रों का प्रतिनिधिमंडल पुलिस आयुक्त से मिलने उनके कार्यालय पहुंचा। यहां पुलिस आयुक्त ने उनसे कहा कि जो निर्दोष हैं, वह निश्चिंत रहें। मामले में निष्पक्ष कार्रवाई की जाएगी। 48 घंटे के अल्टीमेटम की अवधि पूरी होने के बाद शुक्रवार को छात्र संगठनों की सर्वदलीय बैठक बुलाई गई। छात्रसंघ भवन पर हुई बैठक में सभी छात्र संगठनों के पदाधिकारी जुटे। इसमें छात्रनेता पर हुए हमले और छात्रों की पिटाई के मामले में आरोपी सुरक्षाकर्मियों की गिरफ्तारी न होने के विरोध में निंदा प्रस्ताव पारित किया गया। पूर्व छात्रनेता रजनीश सिंह रिशु ने कहा कि आरोपियों के खिलाफ जल्द कार्रवाई न हुई तो संयुक्त रूप से सभी छात्र संगठन बड़े आंदोलन के लिए बाध्य होंगे। इसके बाद छात्र संगठनों के पदाधिकारियों ने पुलिस आयुक्त रमित शर्मा से भी मुलाकात की। इस दौरान छात्रों पर दर्ज मुकदमा वापस लिए जाने, सुरक्षाकर्मियों को गिरफ्तार कर जेल भेजने और सुरक्षा एजेंसी का अनुबंध खत्म किए जाने संबंधी मांगें उठाईं। पुलिस आयुक्त ने

उनकी बातों को गंभीरतापूर्वक सुना और उन्हें आश्वस्त किया कि निर्दोष पूरी तरह से निश्चिंत रहें। मामले में निष्पक्ष कार्रवाई की जाएगी। जो दोषी हैं उन्हें बख्शा नहीं जाएगा। आश्वासन मिलने के बाद छात्र वापस चले गए। इस दौरान पूर्व अध्यक्ष अजीत यादव, विवेकानंद पाठक, नीरज प्रताप सिंह, सत्यम कुशवाहा,आदर्श भदौरिया आदि मौजूद रहे। उधर एहतियातन शुक्रवार को भी विवि में फोर्स तैनात रही। इस मामले में पुलिस आयुक्त ने बताया कि छात्र मिलने आए थे। उनकी बात सुनने के बाद उन्हें आश्वस्त किया गया है कि पुलिस की ओर से मामले में निष्पक्ष कार्रवाई की जाएगी। ऐसे में उन्हें डरने की जरूरत नहीं है।

कनक नर्सिंग होम बारा में निःशुल्क प्रसूति एवं स्त्री रोग परामर्श शिविर

बारा। क्षेत्रवासियों की माँग पर बारा के कनक नर्सिंग होम में रविवार 25 दिसम्बर को दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक निःशुल्क प्रसूति एवं स्त्री रोग परामर्श शिविर आयोजित किया गया है।जिसमें प्रयागराज शहर की सुप्रतिष्ठित ख्यातिप्राप्त डॉ ममता त्रिपाठी (स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ) द्वारा सुगर, ब्लड प्रेशर, हीमोग्लोबिन की जाँच भी पूर्णतया निःशुल्क होगी।इसके अलावा अन्य प्रकार की जांचों एवं दवाइयों पर भी 20 प्रतिशत की छूट दी जायेगी। डॉ ममता त्रिपाठी द्वारा निःसंतान हेतु परामर्श, बार बार गर्भपात हो जाना,मासिक धर्म सम्बन्धी समस्याओं, बच्चेदानी एवं अंडाशय की गांठ रसौली से सम्बंधित परेशानी व ऑपरेशन, छाती की गांठ,सफेद पानी आना आदि समस्याओं का समाधान निःशुल्क कराया जायेगा। उपरोक्त जानकारी देते हुए कनक नर्सिंग होम के चिकित्सकों व डॉ एस के पाल द्वारा दी गई है। डॉ पाल द्वारा पेशाब खुलकर न होना या बार बार होना,पेशाब में जलन होना,शरीर में सूजन,भूख कम लगना, कमजोरी, सांस फूलना,ब्लड प्रेशर, डाइबिटीज, स्किन की समस्या, टाइफाइड बुखार, डेंगू बुखार और चिकनगुनिया का इलाज एवं उचित परामर्श भी दिया जायेगा।

किसानों की सेवा में समर्पित रहा चौधरी चरण सिंह का जीवन : अजय सिंह

शंकरगढ़ कस्बे में मनाई गई पूर्व प्रधानमंत्री की जयंती

शंकरगढ़। किसानों के मसीहा चौधरी चरण की जयंती शुक्रवार को पूरे जनपद में धूमधाम के साथ मनाई गई। इसी कड़ी में बारा क्षेत्र के नगर पंचायत शंकरगढ़ में समाजवादी पार्टी के नेताओं, कार्यकताओं एवं पदाधिकारियों चौधरी चरण सिंह को और उनके योगदान को याद किया। नगर के सभी बुजुर्ग बुद्धजीवियों के साथ सपा के स्थानीय पदाधिकारियों, कार्यकताओं ने नगर पंचायत शंकरगढ़ से चेयरमैन अध्यक्ष पद के दावेदार अजय सिंह की देखरेख में किसानों के नेता पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की जयंती मनाई गई। अजय सिंह समेत तमाम नेताओं ने चौधरी चरण सिंह के चित्र पर माल्यार्पण करते हुए देश के हित में उनके द्वारा किए गए योगदान को याद किया और श्रदांधजलि अर्पित की। अजय सिंह ने कहा, चौधरी चरण सिंह देश के किसानों के सच्चे हितैषी थे। उनका योगदान सदैव स्मरण रखा जाएगा। उन्होंने अपना पूरा जीवन किसानों के लिए समर्पित कर दिया था। हम सभी को उनके बताए मार्ग पर चलकर ही उन्हे सच्ची श्रद्धांजलि दी जा सकती है। अंत में चेयरमैन पद के दावेदार अजय सिंह ने सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। इस मौके पर तमाम सपा नेता, पदाधिकारी, स्थानीय व्यापारी और कार्यकर्ता मौजूद रहे।

न्यूज झरोखा

सब्जी मंडी लगने से कई गांव के लोगों को मिला रोजगार

बारा। बारा तहसील के अंतर्गत ग्रामसभा असरवई मे मंगलवार व शुक्रवार हफ्ते में दो बार लगाई जाती है मंडी मंडी लगने से कई गांव के लोगों को मिला रोजगार गांव के ही रहने वाले गोपाल बिंद द्वारा बताया गया कि हमारे गांव में मंडी लगने से रामनगर चामू बैजला सोता पार मोजरा गांव के लोगों को अब सब्जी लेने के लिए दूर नहीं जाना होगा और रोजगार भी हफ्ते में दो बार गांव में ही मिलेगा मंडी लगने से गांव के व अगल-बगल के लोग भी खुश हैं ग्राम प्रधान पीताम्बर बिन्द ने कहा कि व्यापार मंडल द्वारा मंडी का व्यवस्थापक हमको बनाया गया है और आगे चलकर व्यापार मंडल से क्षेत्र के लोगों को भी जोड़ा जाएगा इस बात को लेकर क्षेत्र में खुशी का माहौल है।

शिक्षा में गुणवत्तापरक सुधार की कवायद

बारा। शिक्षा में गुणवत्ता परक सुधार कैसे हो, हिंदी व गणित के निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति की कार्ययोजना कैसे क्रियान्वित हो। इस पर केंद्रित शिक्षा संकुल परसरा की मासिक बैठक प्राथमिक विद्यालय चिल्ला में संपन्न हुई। कार्यक्रम का शुभारंभ मां सरस्वती की वंदना के पश्चात बच्चों द्वारा खुशबू और रोशनी और अन्य छात्राओं द्वारा स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। कक्षा 5 के कार्तिक द्वारा तमिलनाडु के लोक नृत्य के बारे में विस्तृत जानकारी दी गयी। एआरपी सतीश कुशवाहा ने आकलन और उपचारात्मक शिक्षा पर विस्तृत रूप से प्रकाश डाला। एआरपी जितेंद्र मिश्र ने निपुण लक्ष्य की साप्ताहिक योजना के क्रियान्वयन पर प्रकाश डाला। एआरपी महेंद्र प्रताप सिंह ने बच्चों की विद्यालय में नियमित उपस्थिति किस प्रकार की जा सकती है। उसकी कार्ययोजना तैयार करने के बारे में जानकारी प्रदान की गई। एआरपी प्रमोद मिश्र ने लाइब्रेरी के नियमित प्रयोग करने व बच्चों को रूचिपूर्ण शिक्षण के लिए प्रेरित किया। एआरपी गिरीश सिंह ने विद्यालय में शिक्षक डायरी के प्रयोग, निपुण लक्ष्यों के कार्यों का अभिलेखी करण पर प्रकाश डाला।बैठक में प्रमुख रूप से संतशरण, मयंक तिवारी, बबिता वर्मा, नाहिद सुल्ताना,शिव कुमारी, पवित्र कुमार,अवधेश कुमार, अभिषेक, राजकुमार, सुमन भटोनिया, जगमोहन, सुनीता आदि उपस्थित रहे।पूनम तिवारी ने धन्यवाद ज्ञापित किया।सभा का सफल संचालन भारतेन्दु त्रिपाठी ने किया।

श्रृंगार गौरी की नियमित पूजा मामले में सुनवाई पूरी, कोर्ट ने फैसला किया सुरक्षित

प्रयागराज। वाराणसी के ज्ञानवापी स्थित श्रृंगार गौरी की नियमित पूजा के अधिकार मामले में दोनों पक्षों की लंबी बहस के बाद इलाहाबाद हाईकोर्ट ने फैसला सुरक्षित कर लिया है। यह आदेश न्यायमूर्ति जेजे मुनीर ने अंजुमन इंतजामिया मसाजिद कमेटी, वाराणसी की ओर से दाखिल पुनरीक्षण याचिका पर दिया है। राखी सिंह तथा नौ अन्य महिलाओं ने पूजा के अधिकार को लेकर वाराणसी की जिला अदालत में सिविल वाद दायर किया।अंजुमन इंतजामिया मसाजिद कमेटी, वाराणसी ने वाद की पोषणीयता पर आपत्ति करते हुए अर्जी दाखिल किया कि की कोर्ट को प्लेसेस आफ वर्शिप एक्ट 1991 के उपबंधों के तहत अदालत को वाद सुनने का अधिकार नहीं है। अदालत ने कमेटी की अर्जी खारिज कर दी, जिसे हाईकोर्ट में चुनौती दी गई है।याची की ओर से वरिष्ठ अधिवक्ता एसएफए नकवी, जहीर असगर, फातिमा अंजुम तथा विपक्षियों की ओर से अधिवक्ता हरिशंकर जैन, विष्णु जैन, प्रदीप शर्मा, सौरभ तिवारी, प्रभाष पांडेय, विनीत संकल्प, अपर महाधिवक्ता एमसी चतुर्वेदी, मुख्य स्थायी अधिवक्ता बिपिन बिहारी पांडेय ने बहस की। याची के अधिवक्ता नकवी का तर्क था कि उपासना स्थल अधिनियम से नियमित पूजा प्रतिबंधित है क्योंकि, पूजा से स्थल की धार्मिक प्रकृति से छेड़छाड़ होगी, जो कानूनन नहीं किया जा सकता। इसलिए यहां नियमित पूजा की अनुमति नहीं मिलनी चाहिए।

वृद्धा आश्रम के 16 वृद्ध जनों का नेत्र चिकित्सा उपचार बाद कंबल वितरित किया गया

करछना। आधारशिला वृद्ध आश्रम नैनी प्रयागराज में निवासरत वृद्ध माता-पिता को स्वास्थ्य सुविधा प्रदान करते हुए लायंस क्लब प्रयागराज अशोक द्वारा सभी का नेत्र परीक्षण कराया गया जिसमें मोतियाबिंद के ऑपरेशन हेतु 16 संवासी जन चिन्हित हुए क्लब के माध्यम से डॉक्टर आर के एस चौहान ने नेत्र परीक्षण किया सभी चिन्हित वृद्धजनों को मनोहर दास नेत्र चिकित्सालय में एडमिट करा कर ऑपरेशन कराया गया तथा लायंस धीरेंद्र मिश्रा लायंस माला मिश्रा द्वारा भोजन एवं चाय नाश्ते के साथ-साथ कैंप के माध्यम से ऑपरेशन का प्रबंध किया गया ऑपरेशन सफलतापूर्वक संपन्न होने से वृद्धजन लायंस क्लब प्रयागराज अशोक को धन्यवाद देते हुए क्लब सदस्यों को आशीर्वाद दिया एवं खुशी जताया लायंस डॉ ए डी दुबे ने सभी वृद्ध जनों को सांत्वना देते हुए कहा कि क्लब सदैव आपके सहयोग में आपके साथ हैं सभी ऑपरेशन करा चुके वृद्धजनों को लायंस क्लब के डिप्टी डिस्ट्रिक्ट गवर्नर सतीश टंडन एवं सदस्यों द्वारा माला पहनाकर कंबल भेंट कर अस्पताल से विदा किया वृद्ध आश्रम प्रबंधक सुशील श्रीवास्तव ने क्लब द्वारा किए गए पुनीत कार्य हेतु धीरेंद्र मिश्रा जी एवं माला मिश्रा जी को धन्यवाद देते हुए आभार व्यक्त किया इस कार्य में सुनीता देवी अंशु अभिषेक सुधीर कुमार ने सहयोग किया।

रामगढ़ महोत्सव : भाई रहे भयकरा होई गए, बईरी के चौतरा होई गए...

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। यमुनापार के प्राचीन, ऐतिहासिक रामगढ़ धाम में तीन दिवसीय छठें रामगढ़ महोत्सव का भव्य समापन हो गया। जन सहयोग और लोक भागीदारी से आयोजित महोत्सव व पूसी तेरस मेले मे हजारों श्रद्धालुओं ने दर्शन-पूजन के बाद मेले व महोत्सव का आनंद लिया। महोत्सव का समापन कवि सम्मेलन और मुशायरे से किया गया। अंतिम दिन कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए मार्गदर्शक सामाजिक कार्यकर्ता समाज शेखर ने कहा, यमुनापार में पर्यटन विकास की अपार संभावनाएं हैं। यहां के प्राचीन स्थलों के विकास में समाज व सरकार को अपनी साझी भूमिका निभानी चाहिए।

समापन समारोह में आयोजित कवि सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ कवियित्री डा. नीलिमा मिश्रा ने अपनी रचना- ₹हे शिव शंकर, शंभू सदाशिव, हे करूणा, हे त्रिपुरारी₹, से रामगढ़ के महादेव की आराधना की। वहीं वरिष्ठ लोककवि राम लोचन सांवरिया ने अवधी में लिखित रचना- ₹भाई रहे भयकरा होई गए, बईरी के चौतरा होई गए, मेहरारू कय कहा मानकर बहुत बडे महुकरा होई गए₹, खूब सराही गई। प्रसिद्ध गीतकार डा. राजेंद्र शुक्ल ने पढ़ा- ₹उम्मीदों का पूरा होना अच्छा लगता है, जागी रात के बाद का सोना अच्छा लगता है, बादल को सामर्थ्य मिले हारियाली का, बूँद-बूँद कर बारिश होना अच्छा लगता है₹, लोगों को अंदर तक झकझोर गई। खेलगांव इंटरनेशनल पब्लिक स्कूल की प्राध्यापिका लोकप्रिय कवियित्री रेनू मिश्रा ने पढ़ा ₹तुम्हे प्यार करने की मेरी आदत पड़ गई है, तेरे सानिध्य में रहना मेरी चाहत बन गई है, तेरे दिल के घरौंदे में बसेरा मेरा रहता है, तेरी नजरों में रहने की मेरी आदत पड़ गई है₹, को खूब वाहवाही मिली। नामी शायर सबरेज अहमद ने पढ़ा कि ₹कितना प्यारा हिंदुस्तान, जगत से न्यारा हिंदुस्तान, स्वर्ग जैसा कश्मीर है ईश्वर का वरदान, कितना प्यारा हिंदुस्तान₹, ने राष्ट्रभक्ति की भावना को बलवती किया। युवा गीतकार शिवम भगवती ने अपनी रचना- ₹ये राजा राम की धरती, यहां कृष्णा का बसेरा₹, सुनाई। कवि चंद्रभूषण तिवारी चंद्र ने श्रृंगार की कई बेहतरीन प्रस्तुतियां देकर सभी को अनांदित किया। कवि सम्मेलन का बेहतरीन संचालन डा. पीयूष मिश्र पीयूष ने किया। सभी का स्वागत रामगढ़ पर्यटन विकास ट्रस्ट के अध्यक्ष इंद्रभान सिंह व महासचिव सचिन सिंह ने किया। आभार महंत नंदलाल दास महराज ने जताया। इस अवसर पर यमुनापार विकास समिति के अध्यक्ष गजेंद्र प्रताप सिंह, पंडित दिनेश तिवारी, इंद्रसेन सिंह, हंसराज पटेल, सीताराम आदि मौजूद रहे।

तीन दिवसीय छठवें रामगढ़ महोत्सव का कवि सम्मेलन और मुशायरे संग समापन

किसान दिवस पर किसान मेला एवं कृषि प्रदर्शनी का हुआ समापन, 556 किसानों ने की सहभागिता

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। स्व0 चैधरी चरण सिंह का जन्म दिवस राजा दिनेश सिंह कृषि विज्ञान केन्द्र ऐठू व कृषि विभाग प्रतापगढ़ द्वारा किसान दिवस के रूप में मनाया गया जिसमें किसान मेला, गोष्ठी एवं प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी ईशा प्रिया बतौर मुख्य अतिथि, डा0 रघुराज सिंह उपकृषि निदेशक, डा0 अश्विनी कुमार सिंह जिलाकृषि अधिकारी, गोपाल झॉ, एल0डी0एम0, बृजेन्द्र कुमार डी0डी0एम0 नाबार्ड एवं कृषि विभाग के अधिकारियों सहित लगभग 556 किसानों ने सहभागिता की। इससे पूर्व किसान मेले का औपचारिक उद्घाटन करते हुए सीडीओ ईषा प्रिया ने स्व0 चैधरी चरण सिंह जी के व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला और कहा कि कृषि विज्ञान केन्द्र से जुड़े किसानों की तकनीकी जानकारी बहुत अच्छी है इसके लिए किसानों को और के0वी0के0 को बधाई दी। इस अवसर पर किसान तकनीकी सत्र में कृषि विज्ञान केन्द्र के शस्य वैज्ञानिक डा0 नवीन सिंह ने किसानों को रबी की फसलों में समसामयिक सस्य क्रियाओं और उनसे होने वाले लाभों के बारे में विस्तार से बताया। पशु चिकित्सा वैज्ञानिक डा0 अमित बरनवाल ने किसानों को ठंड के मौसम में कुशल पशु प्रबन्धन, पशु पोषण एवं चारा संरक्षण, पशु रोग एवं उपचार, टीकाकरण आदि पर विस्तार से चर्चा की। केन्द्र के वैज्ञानिक यतेन्द्र कुमार भी जानकारी प्रसार वैज्ञानिक डा0 अवधेश कुमार सिह ने किसानों को खेती के साथ मत्स्य पालन के लिए प्रेरित किया। प्रगतिशील किसानों में रामसुमेर पटेल ने प्राकृतिक खेती पर, श्री रोशन लाल मौर्य कृषि विविधीकरण पर, अजय कुमार सिंह ने मौन पालन पर अपने-अपने अनुभवों को मंच पर साझा किया। उप कृषि निदेशक डा0 रघुराज सिंह ने केन्द्र सरकार द्वारा चलायी जा रही किसान सम्मान निधि के बारे में बताया। इस मौके पर भाष्कर शुक्ला, श्रीमती स्वाती दीपक दुबे, डा0 अवधेश कुमार सिंह, डा0 अमित बरनवाल, महेन्द्र प्रताप सिंह, प्रदीप सिंह, डा0 रणजीत सिंह, यतेन्द्र कुमार, विनोद चैरसिया, रामचन्द्र, जुगुल किशोर तिवारी, जी0आर0 पटेल, रविशंकर, अरूण शुक्ला आदि ने अपना सहयोग प्रदान किया।

कृषि प्रदर्शनी का दीप जलाकर शुभारंभ करतीं सीडीओ ईषा प्रिया।

सीडीओ पहुँची ब्लाक कालाकांकर

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। मुख्य विकास अधिकारी ईशा प्रिया शुक्रवार को कृषि विज्ञान केंद्र ऐंठू में किसान दिवस कार्यक्रम के समापन के बाद सीधे ब्लाक कालाकांकर पहुँची जहाँ खण्ड विकास अधिकारी जी डी शुक्ल व एडीओ पंचायत संतोष कुमार शुक्ला व ग्राम पंचायत अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक किया जिसमें निर्देश दिया कि आवास आवंटन पात्रों को दे अपात्रों को नही मिलना चाहिए जिसकी गहनता पूवर्क जांच पड़ताल करें कोई पात्र छूटने न पाये आधे घण्टे रुकने के बाद जिला मुख्यालय के लिए रवाना हो गई। बैठक में सचिव ब्यास कुमार मौर्य, आर पी यादव, ज्योति यादव,आफताब अहमद रविशंकर सोनकर, प्रभांशु पांडेय, उर्मिला, शशिकांत सिंह, अनुराग यादव, श्रीराम, सुशील जायसवाल, सुनील कुमार (समाज कल्याण) आदि मौजूद रहे।

मनीष सिंह को पीएचडी की उपाधि मिलने पर जतायी प्रसन्नता

लालगंज, प्रतापगढ़। स्थानीय अवधेश विद्या निकेतन इण्टर कालेज के वरिष्ठ प्रवक्ता शीतलमऊ निवासी मनीष कुमार सिंह को पीएचडी की उपाधि मिली है। राजस्थान के अलवर स्थित सनराइस विश्वविद्यालय में डा. हरवंश लाल के निर्देशन में मनीष को माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षको का जीवन कौशल कार्यक्रम के विकास का एक महत्वपूर्ण अध्ययन नामक शीर्षक पर शोध कार्य के लिए यह उपाधि हासिल हुई है। मनीष को पीएचडी की उपाधि हासिल होने पर विद्यालय के प्रधानाचार्य सुरेश कुमार सिंह, रमाशंकर तिवारी, ज्ञानप्रकाश मिश्र, पूर्व शिक्षक रामसिंह, प्रदीप कुमार, डा. अमित मिश्र, सूर्यप्रकाश, केशव कुमार, वंदना श्रीवास्तव, राकेश सिंह, मंगलेश सिंह, राजेन्द्र पाण्डेय आदि ने हर्ष जताया है। उधर मदर मैरी एण्ड कान्वेंट स्कूल के प्रबंधक मनोज कुमार सिंह समेत शिक्षिका शबाना व सुनील कुमार आदि ने भी मनीष की सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त की है।

किशोर की मौत के मामले में नामजद ट्रैक्टर चालक धराया

लालगंज, प्रतापगढ़। ट्रैक्टर की चपेट मे आने से हुई किशोर की मौत के मामले में चालक के खिलाफ नामजद मुकदमा दर्ज कराया गया है। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। लालगंज कोतवाली के पुरवारा निवासी सुरेशचंद्र विश्वकर्मा ने कोतवाली मे तहरीर देकर कहा है कि गुरूवार की शाम टैज्क्टर चालक की लापरवाही से कटरा नहर के समीप उसके सत्रह वर्षीय भतीजे पंकज की टैज्क्टर की चपेट मे आने से मौत हो गयी थी। पीड़ित की शिकायत पर देर रात आरोपी टैज्क्टर चालक चन्द्रेश सरोज उर्फ ननके लाल निवासी नया पुरवा धारूपुर के खिलाफ गैरइरादतन हत्या का मुकदमा पुलिस ने दर्ज कर लिया है। केस दर्ज करने के बाद कोतवाल कमलेश पाल के निर्देश पर पुलिस की एक टीम ने आरोपी टैज्क्टर चालक को धर दबोचा। गिरफ्तार टैज्क्टर चालक को कोतवाली मे लाकर पूछताछ की जा रही है।

आरोपी के खिलाफ मारपीट व चोरी का केस

लालगंज, प्रतापगढ़। सांगीपुर थाना क्षेत्र के पूरे गोविंदराम निवासी माधुरी पत्नी अयोध्या का आरोप है कि गुरूवार को खेत से मवेशी हांकने को लेकर हुए विवाद में पडोसी शिवप्रसाद ने गालीगलौज करते हुए उसकी जमकर पिटाई कर दी। जान बचाने के लिए महिला घर की ओर भागी तो आरोपी ने घर मे घुसकर भी उसके साथ मारपीट की। आरोपी ने उसके गले का मंगलसूत्र भी मारपीट के दौरान चोरी से खींच लिया। पीडिता माधुरी की शिकायत पर आरोपी शिवप्रसाद के खिलाफ मारपीट गालीगलौज व चोरी के आरोप मे मुकदमा दर्ज किया है। सांगीपुर एसओ ने बताया कि मामले की जांच कर कार्रवाई की जाएगी।

इण्टर कालेज कालाकांकर में आरएसएस का लगा शिविर

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। प्रतापगढ़ पूर्व सांसद एवं कालेज प्रबंधिका राजकुमारी रत्ना सिंह के प्रयास से 23 दिसम्बर से 31 दिसम्बर तक आरएसएस का शिविर शुरू हुआ। कालेज के प्रधानाचार्य कैप्टन शमशाद अहमद ने बताया कि कॉलेज में आरएसएस का शिविर लगाए जाने से कालेज प्रशासन की शिक्षा ब्यवस्था पर कोई असर नही पड़ेगा क्योंकि उनके शिविर में शाम को आरएसएस के कार्यकर्ता आकर सम्मिलित होते है। राजभवन मैनेजर डॉ घनश्याम यादव ने बताया कि राजकुमारी रत्ना सिंह के आर्थिक प्रयास से आरएसएस का शिविर लगाया गया है जो एक सप्ताह तक चलेगा।

पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की मनी 120वीं जयंती

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। समाजवादी पार्टी कार्यालय मीराभवन पर किसानों के मसीहा भारत के पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह की 120वीं जयंती मनाई गई। इस अवसर पर उनके चित्र पर माल्यार्पण व पुष्प अर्पित कर गोष्ठी का आयोजन किया गया।

जयंती आयोजन की अध्यक्षता नि. जिलाध्यक्ष छविनाथ यादव व संचालन नि. जिलामहासचिव अब्दुल कादिर जिलानी ने किया। गोष्ठी को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने कहा कि स्व. चैधरी चरण सिंह भारत के किसान राजनेता एवं पाँचवें प्रधानमंत्री थे। चैधरी चरण सिंह ने अपना संपूर्ण जीवन भारतीयता और ग्रामीण परिवेश की मयार्दा में जिया। उनका जन्म एक जाट परिवार मे हुआ था। स्वाधीनता के समय उन्होंने राजनीति में प्रवेश किया। इस दौरान उन्होंने बरेली कि जेल से दो डायरी रूपी किताब भी लिखी। स्वतन्त्रता के पश्चात वह राम मनोहर लोहिया के ग्रामीण सुधार आन्दोलन में लग गए। चैधरी चरण सिंह किसानों के नेता माने जाते रहे हैं। उनके द्वारा तैयार किया गया जमींदारी उन्मूलन विधेयक राज्य के कल्याणकारी सिद्धांत पर आधारित था। एक जुलाई 1952 को यूपी में उनके बदौलत जमींदारी प्रथा का उन्मूलन हुआ और गरीबों को अधिकार मिला। उन्होंने लेखापाल के पद का सृजन भी किया। किसानों के हित में उन्होंने 1954 में उत्तर प्रदेश भूमि संरक्षण कानून को पारित कराया। हम सभी समाजवादी साथियों को उनके पदचिन्हों पर चलकर ही उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि दी जा सकती है। इस अवसर पर रानीगंज विधायक डॉ.आर.के. वर्मा, पूर्व विधायक नागेंद्र सिंह मुन्ना यादव, पूर्व जिलाध्यक्ष भईया राम पटेल, आशुतोष पाण्डेय, अहमद अली, प्यारे लाल खैरा, नरेंद्र पाल एडवोकेट, अश्वनी सोनी, विनय प्रताप सिंह पूर्व ब्लाक प्रमुख, विनय सिंह भोला, यशवर्धन सिंह, बृजेश यादव, डॉ.रामबहादुर पटेल, डॉ.शेरबहादुर यादव, अनिल यादव, सुधीर श्रीवास्तव, कृष्ण कुमार पटेल, राजेश पटेल, आजम राय, विवेक यादव, वाहिद खान, मिथलेश पाल, प्रमोद पटेल पूर्व मीडिया प्रभारी मनीष पाल सहित अन्य नेतागण उपस्थित रहे।

सपा कार्यालय पर माल्यार्पण कर किया गोष्ठी का आयोजन

चौधरी चरण सिंह की चित्र पर माल्यार्पण करते विधायक डा0 आरके वर्मा

वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता रही विश्वेश्वरैया हाउस रही विजेता
मेडल व प्रमाण पत्र पाकर खिले छात्र एवं छात्राओं के चेहरे

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। स्थानीय राजकीय पॉलिटेक्निक प्रतापगढ़ की दो दिवसीय वार्षिक खेलकूद प्रतियोगिता 2022-23 का समापन शुक्रवार को संस्था के प्रधानाचार्य बी एल सिंह एवम क्रीड़ा प्रभारी कपिल देव साहू की देखरेख में हुआ।

प्रतियोगिता में लम्बी कूद (पुरुष वर्ग) में रमन हाउस के अभिषेक मिश्रा प्रथम, विष्वेष्वरैया हाउस के सुरेष कुमार द्वितीय व भाभा हाउस के रुपेष पाण्डेय तीसरे स्थान पर रहे। इसी तरह लम्बी कूद (महिला वर्ग) में खुशबू यादव भाभा, अंतिम विश्वकर्मा विश्वेश्वरैया व प्रेरणा पाण्डेय मालवीय पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर रहे। ऊंची कूद (पुरुष वर्ग) में रुपेश पाण्डेय भाभा, सुरेश कुमार विश्वेश्वरैया व वैभव सिंह विश्वेश्वरैया पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर रहे। 1600 मीटर दौड़ (पुरुष वर्ग) में रोहित कुमार यादव मालवीय, अजीत प्रताप भाभा व शुभम यादव विश्वेश्वरैया पहले, दूसरे व तीसरे स्थान पर रहे। डिस्क्स थ्रो (महिला वर्ग) में प्रेरणा पाण्डेय मालवीय व खुशबू यादव भाभा पहले व दूसरे स्थान पर रहे। वालीबाल (पुरुष वर्ग) में विश्वेश्वरैया हाउस व रमन हाउस पहले व दूसरे स्थान पर रही। टेबल टेनिस (पुरुष वर्ग) में विश्वेश्वरैया हाउस व मालवीय हाउस पहले व दूसरे स्थान पर रही। बैडमिंटन (महिला वर्ग) में भाभा हाउस व रमन हाउस पहले व दूसरे स्थान पर रही। 400 मीटर दौड़ (पुरुष वर्ग) में रोहित कुमार यादव मालवीय, देवेन्द्र कुमार मौर्या मालवीय व अनुपम मिश्र भाभा पहले दूसरे व तीसरे स्थान पर रहे। 400 मीटर दौड़ (महिला वर्ग) में मानसी गुप्ता विश्वेश्वरैया, मुस्कान भाभा व सुप्रिया तिवारी विश्वेश्वरैया पहले दूसरे व तीसरे स्थान पर रहीं। कार्यक्रम का संचालन संस्था के पुस्तकालय अध्यक्ष देवेंद्र श्रीवास्तव के द्वारा किया गया। प्रधानाचार्य ने सभी छात्र एवम छात्राओं को उनके प्रयास की प्रशंसा करते हुए उनके उज्जवल भविष्य की शुभकामनाएं। विजेता छात्र एवं छात्राओं को मैडल एवम प्रमाण पत्र वितरित करते हुए उनके प्रयत्न की सराहना किया। इस मौके पर राज कुमार, पूर्णिमा जायसवाल, शशिबाला, अमित कुमार, संदीप कुमार प्रजापति, प्रदीप कुमार, ईशांत चंद्रा, सुषमा, संजय कुमार, प्रियंका सिंह, जयशंकर तिवारी, बृज कुमार, दिनेश चंद्रा पाल, आनंद सिंह, आशीष चैधरी, बृजेश सिंह यादव एवं शिवाकांत सहित राजकीय पॉलिटेक्निक के समस्त अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

मेडल व प्रमाण पत्र के साथ छात्र एवं छात्राएं ।

लालगंज दीवानी सिविल जज की मां के असमय निधन होने पर शोक

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। सिविल न्यायालय मे तैनात सिविल जज कुंवर दिव्यदर्शी की पैंसठ वर्षीया मां जयश्री देवी का शुक्रवार की सुबह आकस्मिक निधन हो गया। उनके निधन की जानकारी मिलने पर लालगंज सिविल कोर्ट में फुल कोर्ट रिफ्रेन्स ऑनर दिया गया। सिविल जज की मां के आकस्मिक निधन पर तहसील में एसडीएम सौम्य मिश्र, तहसीलदार डीपी सिंह व न्यायिक तहसीलदार सुप्रिया चतुर्वेदी ने भी संवेदना जतायी। उधर तहसील व दीवानी न्यायालय में अधिवक्ताओं ने न्यायिक कार्य से खुद को अलग कर सिविल जज की स्वर्गीया मां को श्रद्धांजलि अर्पित की। तहसील परिसर मे संयुक्त अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष अनिल त्रिपाठी महेश की अध्यक्षता मे शोक सभा का भी आयोजन किया गया। शोक सभा का संचालन पूर्व अध्यक्ष ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने किया। इस मौके पर वरिष्ठ उपाध्यक्ष शहजाद अंसारी, महामंत्री शेष त्रिपाठी, उपाध्यक्ष बीके तिवारी, रमेश पाण्डेय, विकास मिश्र, जितेन्द्र सिंह, पवन पाण्डेय, आशुतोष सिंह, जान्हवी प्रताप सिंह, संजय ओझा, कमलेश तिवारी, संतोष पाण्डेय, सतेश सिंह, वीरेन्द्र सिंह, राजेश तिवारी, आरबी सिंह, विनय शुक्ल आदि अधिवक्ता मौजूद रहे।

शील्ड व मेडल के साथ कम्पटीशन में सफल छात्रगण।

शील्ड एवं मेडल पाकर खिले प्रतिभागियों के चेहरे

जी0के0 कम्पटीशन मे सफल छात्रों का हुआ सम्मान

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। चिल्ड्रन पैराडाइज स्कूल सोसाइटी द्वारा संचालित चिल्ड्रन पैराडाइज स्कूल में शुक्रवार को अंतर विद्यालयी सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता के मेधावीयों को शील्ड एवं मैडल प्रदान कर सम्मानित किया गया। सोसाइटी द्वारा आयोजित तीन दिन पूर्व सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता के सफल छात्र छात्राओं को को शत प्रतिशत अंक हासिल करने पर शील्ड, मेडल एवं प्रशस्ति पत्र देकर के सम्मानित किया गया। समारोह को भारतीय वायुसेना के पूर्व अधिकारी पंडित सूर्य नारायण मिश्र एवं पोस्टल एंप्लाइज यूनियन उत्तर प्रदेश संगठन के प्रांतीय महासचिव ललित नारायण मिश्र ने संबोधित करते हुए कहा कि कड़े परिश्रम से ही सफलता के मुकाम को हासिल किया जा सकता है। कार्यक्रम के आयोजक प्रधानाचार्य आदर्श मिश्र ने कहा कि छात्रों के कड़े परिश्रम का ही प्रतिफल है कि बच्चों ने शत प्रतिशत अंक हासिल कर सफलता हासिल करने के साथ अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। कार्यक्रम में विद्यालय के प्रबंधक विकास मिश्र ने आए हुए अतिथियों का आभार जताया।कार्यक्रम का संचालन राकेश वर्मा जनक शुक्ला ने किया। कार्यक्रम में राजेंद्र कुमार अनूप कुमार पांडे शुभम मिश्रा शिवम पांडे राज पांडे अजय कुमार यादव आदि ने अपने विचार व्यक्त किए।

निमार्णाधीन परिषदीय विद्यालय के भवन की गुणवत्ता खंगालने पहुंचे ब्लाक प्रमुख

लालगंज, प्रतापगढ़। स्थानीय विकासखण्ड के सराय जानमती में निमार्णाधीन उच्च प्राथमिक विद्यालय में शुक्रवार को पहुंचे ब्लाक प्रमुख ने गुणवत्ता व पठन पाठन की हकीकत खंगाली। लालगंज के ब्लाक प्रमुख इं. अमित प्रताप सिंह ने निमार्णाधीन भवन में गुणवत्ताविहीन कार्य होने की शिकायत पर शुक्रवार को अचानक निर्माण स्थल पर पहुंच गये। उन्होंने विद्यालय भवन के निर्माण कार्य की बारीकी से हकीकत खंगाली और मानक के अनुरूप निर्माण कार्य कराने का निर्देश दिया। ब्लाक प्रमुख अमित प्रताप सिंह ने साफ कहा कि विद्यालय भवन के निर्माण में गुणवत्ता का पूरा ख्याल रखा जाय और किसी प्रकार की लापरवाही ने बरती जाये। ब्लाक प्रमुख ने कहा कि मामला नौनिहालों के भविष्य से जुडा हुआ है इसलिए निर्माण कार्य को पूरी पारदर्शिता से कराना होगा। उन्होंने कार्यदायी संस्था को चेतावनी देते हुए कहा कि निर्माण कार्य में गुणवत्ता में खामियां मिली तो अफसरो को पत्र लिखकर सम्बन्धित के खिलाफ कार्रवाई के लिए मजबूर होना पडेगा। ब्लाक प्रमुख ने कम्पोजिट विद्यालय मे पहुंचकर नौनिहालों से मुलाकात की और शैक्षणिक गुणवत्ता को खंगाला।

स्काउट और गाइड ने सीखे बहुमूल्यवान हुनर
तीन दिवसीय प्रशिक्षण का आज होगा समापन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। क्षेत्र के शंकर विद्यालय इंटर कॉलेज कटैया, प्रतापगढ़ में स्काउट और गाइड के प्रगतिशील प्रशिक्षण शिविर के दूसरे दिन आज शुक्रवार को बच्चों ने झंडा फहराना,ध्वज सलामी करना, प्राथमिक चिकित्सा करना, गांठें बांधना, सीटी संकेत, बी.पी. सिक्स एक्सरसाइजेज, अनेक प्रकार की तालियां बजाना, तंबू बनाना, पेड़ पौधों के रखरखाव का तरीका, साफ सफाई, बुद्धिवर्धक फन गेम, कमांड पालन जैसे हुनर सीखे। विद्यालय में चल रहे प्रशिक्षण शिविर का नेतृत्व स्काउट गाइड के जिला ट्रेनिंग कमिश्नर संजीव शर्मा द्वारा प्रशिक्षक विकास यादव और शीला सरोज के सहयोग से किया जा रहा है। प्रधानाचार्य डॉ. राघवेंद्र पांडेय ने बताया कि प्रशिक्षण में विद्यालय के छात्र-छात्राएं अत्यंत उत्साह, रुचि और आनंद के साथ हिस्सा ले रहे हैं। इससे बच्चों में सेवा, स्वावलंबन, अनुशासन, सहयोग, सामूहिक चेतना जैसे गुणों का विकास होगा। तीन दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का समापन शनिवार को होगा जिसमें विद्यालय की प्रबंध समिति के पदाधिकारियों, विद्यालय के सेवानिवृत्त कर्मचारियों, बच्चों के अभिभावकों तथा कुछ गणमान्य अतिथियों को आमंत्रित किया गया है। प्रशिक्षण के दौरान विद्यालय के सभी कर्मचारी उपस्थित रहे।

प्रशिक्षण के दौरान मौजूद स्काउट गाइड व अन्य।

ट्रेलर की चपेट में आने से टावर कर्मचारी की मौके पर दर्दनाक मौत

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। प्रयागराज लखनऊ नेशनल हाइवे पर गुरुवार की देर रात लगभग 11 बजे टेलीफोन टावर कर्मचारी की घर जाते समय सामने से आ रही गिटटी से लदी ट्रेलर की चपेट में आने से मौके पर दर्दनाक मौत हो गई। घटना की जानकारी मिलते ही परिजनों में कोहराम मच गया सभी घटना स्थल की तरफ दौड़ पड़े। मालूम हो कि कोतवाली कुन्डा के लरू गाँव निवासी विजय प्रताप सिंह उर्फ मन्नू सिंह पुत्र उदयभान सिंह (32) वर्षीय छिदौरा टेलीफोन टावर से डियूटी करके रात लगभग11 बजे बाइक से अपने घर लरू कुन्डा जा रहे थे ।

केपी कालेज में परीक्षा का निरीक्षण करते डायट प्राचार्य।

शहर के दो केन्द्रों पर सम्पन्न हुई बीटीसी चतुर्थ सेमेस्टर की परीक्षा

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। बीटीसी (डीएलएड) प्रषिक्षण चतुर्थ सेमेस्टर 2022 की परीक्षा में आज शुक्रवार को पहली पाली में विज्ञान, द्वितीय पाली में गणित व तृतीय पाली में सामाजिक अध्ययन की परीक्षा शहर के दो परीक्षा केन्द्रों केपी हिन्दू इंटर कालेज व राजकीय इंटर कालेज में सम्पन्न हुई। पहली पाली में पंजीकृत 1189 में 1150, द्वितीय पाली मं 1215 में 1171 तथा तृतीय पाली में 1197 में 1146 परीक्षार्थी उपस्थित रहें। इस तरह कुल तीनों पालियों में 39, 44 व 41 परीक्षार्थी अनुपस्थित रहे। किसी भी केन्द्र पर अनुचित साधन करते हुए कोई नहीं पकड़ा गया। केपी इंटर कालेज व राजकीय इंटर कालेज में डायट प्राचार्य हृदय राम आजाद ने निरीक्षण किया।

मांग पूरी होने पर उद्यमियों एवं व्यापारियों ने जताई खुशी

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। एक जनपद एक उत्पाद आंवला उत्पादक एवं प्रसंस्करण संघ की बैठक मोहम्मद अनाम की अध्यक्षता में संपन्न हुई। जनपद का अमृत फल आंवला को वन उपज से बाहर रखने की पुरानी मांग को पूरा करने पर जनपद के उद्यमियों और व्यापारियों ने मुख्यमंत्री का आभार जताया है। बैठक में औद्योगिक/व्यापारिक सुरक्षा फोरम के सदस्य रोशनलाल उमरवैश्य ने कहा कि विगत कई वर्षों से हर मीटिंग में जनप्रतिनिधियों से यह मांग व्यापारी व उद्यमी करते आ रहे थे जिस पर मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश ने वन उपज शुल्क हटाने का आदेश दिया गया। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के इस फैसले से प्रतापगढ़ के लोग गदगद हैं। प्रतापगढ़ में बड़ी तादाद में आंवले का उत्पाद होता है अब तक यहां आंवले को वन उपज की श्रेणी में रखकर इसमें परिवहन पर टैक्स वसूल किया जाता था। इस मांग को पूर्ण होने पर व्यापारी एवं उद्यमियों ने उद्योग कार्यालय पहुंचकर उपायुक्त उद्योग दिनेश चैरसिया को भी बधाई दी गई। सभी व्यापारी व उद्यमी माननीय मुख्यमंत्री व सांसद संगम लाल गुप्ता, पूर्व विधायक राजकुमार पाल, सदर विधायक राजेंद्र कुमार मौर्य के प्रति आभार जताया। बैठक में मोहम्मद अनाम, चंद्र प्रकाश शुक्ला, अनुराग खंडेलवाल, सीताराम, देवानंद, संतोष कुमार, छेदीलाल आदि ने आभार प्रकट किया।

खबर संक्षेप

एसपी का निर्देश अधीनस्थों को कोतवाल ने बताया

कौशाम्बी। मोहब्बतपुर पैसा थाना के समस्त अधिकारी कर्मचारी के साथ कोतवाल विनोद कुमार सिंह ने गुरुवार को गोष्ठी की गई पुलिस अधीक्षक द्वारा अपराध गोष्ठी में दिए गए निर्देश की जानकारी देते हुए पुलिस अधीक्षक के आदेश का शत-प्रतिशत पालन करने का निर्देश उन्होंने दिया है उन्होंने पुलिसकर्मियों से कहा कि हिस्ट्रीशीटर और पेशेवर अपराधियों पर कड़ी नजर रक्खी जाए उन्होंने कहा कि संगठित अपराध और अपराध में लिप्त लोगों पर कड़ी कार्यवाही करते हुए संगठित अपराध को बंद कराया जाए पुलिस अधीक्षक द्वारा अपराध गोष्ठी के दौरान दिए गए आदेश निर्देशों का पालन करने हेतु सभी अधिकारी कर्मचारी गण को कोतवाल विनोद कुमार सिंह द्वारा अवगत कराया गया

प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र मंझनपुर में लगेंगा दिव्यांग कैम्प

कौशाम्बी। मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ0 सुष्पेन्द्र कुमार ने सर्वसाधारण को सूचित किया है कि प्रत्येक सोमवार को उनके कार्यालय में लगने वाला दिव्यांग कैम्प अब प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र मंझनपुर में आयोजित होगा।

पूर्व डीएम ने सुशासन सप्ताह-प्रशासन गॉव की ओर कार्यशाला का द्वीप प्रज्ज्वलित कर किया शुभारम्भ

पूर्व डीएम ने जरूरतमंदों को किया कम्बल का वितरण

योजनाओं को क्रियान्वित करने में कर्मचारी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं-अतुल कुमार

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। पूर्व जिलाधिकारी कौशाम्बी अतुल कुमार ने उदयन सभागार में आयोजित ह्लसुशासन सप्ताह-प्रशासन गॉव की ओरह्व कार्यशाला में मुख्य अतिथि के रूप में प्रतिभाग करते हुए द्वीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया तथा पूर्व प्रधानमंत्री स्व0 अटल बिहारी वाजपेयी के चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किया अतुल कुमार ने कार्यशाला को सम्बोधित करते हुए कहा कि शासन द्वारा पूर्व प्रधानमंत्री स्व अटल बिहारी वाजपेयी की जयन्ती को सुशासन दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया गया है। स्व0 अटल बिहारी वाजपेयी मानवीय मूल्यों से भरपूर एवं दृढ़ इच्छाशक्ति के व्यक्ति थे। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री ने निडर समाज का नारा दिया, जहॉ पर किसी को कोई भय नहीं है। उन्होंने कहा कि केन्द्र व प्रदेश सरकार द्वारा संचालित योजनाओं को क्रियान्वित करने में कर्मचारी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं उन्होंने कहा कि सुशासन के लिए संवेदनशीलता बहुत जरूरी है, आप लोग समस्याग्रस्त व्यक्ति की पीड़ा समझकर और संवेदनशील होकर कार्य करें। मुख्य विकास अधिकारी डॉ0 रवि किशोर त्रिवेदी ने कहा कि केन्द्र व प्रदेश के संयुक्त प्रयास से सुशासन सप्ताह मनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि सरकार द्वारा सुशासन के लिए अनेक पोर्टल एवं तकनीकी सेवाओं का अनुसरण किया गया है, इससे शासकीय कार्यों को गति मिली है उन्होंने कहा कि हम लोगों को शासन द्वारा संचालित जनकल्याणकारी योजनाओं एवं सुविधाओं को, उसी रूप में आमजन तक कैसे पहुॅचायें, इसका निरन्तर प्रयास करते रहना होगा। उन्होंने कहा कि हमें हार्ड वर्क के साथ ही स्मार्ट वर्क भी करना चाहिए तथा ऐसा सिस्टम विकसित करना चाहिए, जिससे योजनाओं के क्रियान्वयन में किसी प्रकार की शिकायत न आने पाये। उन्होंने कहा कि आमजन आईजीआरएस एवं सीएम हेल्पलाइन के माध्यम से अपनी समस्यायें आसानी से दर्ज कराकर निराकरण पा सकतें है। अपर जिलाधिकारी (न्यायिक) डॉ0 विश्राम ने कहा कि सुशासन की परिकल्पना प्राचीनकाल से ही हुई है। उन्होंने कहा कि नागरिकों की सहभागिता के बिना सुशासन का उद्देश्य पूर्ण नहीं हो सकता उन्होंने कहा कि हम लोग जो कार्य कर रहें है, उसे समय से एवं गुणवत्तापूर्ण तरीके से निष्पादित करें, यही सुशासन का उद्देश्य है उन्होंने कहा कि हम लोग अपने दायित्वों का निर्वहन जिम्मेदारीपूर्वक एवं कर्तव्यनिष्ठा के साथ कर रहें है, तो सुशासन की परिकल्पना को साकार कर रहें हैं। ई-डीएम कीर्त कुमार द्वारा सिटिजन चार्टर एक्ट, सूचना का अधिकार अधिनियम, सीएम हेल्पलाइन एवं आईजीआरएस आदि के अन्तर्गत किये जा रहें कार्यो की विस्तार से जानकारी दी गई। उन्होंने बताया कि जनपद कौशाम्बी में अब तक आईजीआरएस के तहत कुल 34 हजार 544, सीएमहेल्पलाइन के तहत 26 हजार 604 एवं ऑनलाइन 17 हजार 533 शिकायतों का निस्तारण किया गया है तथा 24 लाख 90 हजार 954 ऑनलाइन सेवायें यथा-आय, जाति व निवास प्रमाण-पत्र आदि दी जा चुकी हैं कार्यशाला में वरिष्ठ प्रवक्ता डायट डॉ0 अनिल कुमार श्रीवास्तव एवं डॉ0 संदीप कुमार तिवारी द्वारा सुशासन विषय पर विस्तार से प्रकाश डाला गया। तत्पश्चात पूर्व जिलाधिकारी अतुल कुमार द्वारा कलेक्ट्रेट परिसर में जरूरतमंदों को कम्बल का वितरण एवं वृक्षारोपण किया गया इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी जयचन्द्र पाण्डेय एवं उप जिलाधिकारी दीपेन्द्र यादव सहित अन्य अधिकारीगण एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

गरीबों को कंबल वितरण करते पूर्व जिलाधिकारी।

न्यूज झरोखा

उच्च प्राथमिक विद्यालय पल्हना कछार में जर्जर भवन में पढ़ रहे छात्र

हर्रायपुर कौशाम्बी। नगर पालिका परिषद भरवारी के उच्च प्राथमिक विद्यालय पल्हाना का का भवन पूरी तरह से जर्जर हो चुका है जर्जर भवन में सरकारी विद्यालय संचालित हो रहा है जिससे स्कूल में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं के भविष्य पर खतरे मंडरा रहे हैं लेकिन उसके बाद भी शिक्षा विभाग के अधिकारी जर्जर भवन की मरम्मत कराने की ओर पहल नहीं कर रहे हैं विद्यालय की शिक्षा व्यवस्था भी चौपट हो चुकी है पठन-पाठन की ओर स्कूल के अध्यापक ध्यान नहीं दे रहे हैं समय से पहले विद्यालय छोड़कर अध्यापक गायब हो जाते हैं ग्रामीणों ने कई बार स्कूल के अध्यापकों के कारनामों की शिकायत अधिकारियों से की लेकिन उसके बाद भी पठन पाठन व्यवस्था में सुधार नहीं हो सका है ग्रामीणों ने एक बार फिर अधिकारियों का ध्यान इस विद्यालय की ओर आकृष्ट कराते हुए पठन-पाठन की व्यवस्था सुधार कराए जाने की मांग की है।

हथियाभीट ग्राम सभा में विकास योजनाएं चढ़ी धांधली की भेंट

हर्रायपुर कौशाम्बी। मूरतगंज विकासखंड क्षेत्र के हथिया भीट ग्राम सभा में सफाई व्यवस्था चौपट हो गई है पूरे गांव में गंदगी का अंबार लगा है जिससे ग्रामीणों को भयंकर बीमारी की आशंका बनी रहती है सफाई कराने के लिए बार-बार अवगत कराने के बाद भी सफाई कर्मी गांव में सफाई नहीं कर रहा है गांव में विकास योजना भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ चुकी हैं निर्माण कार्यों में गुणवत्ता बिहीन निर्माण कराए जा रहे हैं ग्रामीणों ने ग्राम प्रधान और पंचायत सचिव पर आरोप लगाते हुए कहा है कि विकास के लिए आने वाली सरकारी रकम से यह दोनों जिम्मेदार पहले अपने घर बनवा ले फिर ग्राम विकास करेंगे ग्राम पंचायत में बड़े पैमाने पर धांधली के बाद भी एडीओ पंचायत और खंड विकास अधिकारी मूरतगंज मूकदर्शक बने हुए हैं जिससे इन दोनों अधिकारियों की भी निष्ठा पर सवाल खड़े हो गए हैं लोगों ने डीएम और सीडीओ का ध्यान आकृष्ट कराते हुए ग्राम पंचायत में कराए गए कार्यों की जांच कराए जाने की मांग की है।

ग्राम प्रधान के साथ कोतवाल ने की बैठक

कौशांबी। मोहब्बत पुर पैंसा कोतवाल विनोद कुमार सिंह ने क्षेत्र के ग्राम प्रधानों के साथ गुरुवार को बैठक कर उनकी समस्याओं को सुना बैठक के दौरान कोतवाल ने कहा कि राजस्व के विकास के कार्यों में आने वाले अवरोध को वह थाना आकर जरूर बताएं जिससे उनकी समस्याओं का समाधान किया जा सके इस दौरान उन्होंने ग्राम प्रधानों से कहा कि अपराध और अपराधियों पर भी वह कड़ी नजर रखें यदि कोई अपराधी छिपकर अपराध कर रहा है तो उसकी सूचना पुलिस को जरूर दें बैठक के दौरान कोतवाल ने कहा कि आम जनमानस के सहयोग से अपराध पर पूर्ण रुप से अंकुश लगाया जा सकता है।

अदालत डीएम के बीच न्याय पाने को भटक रहा दोनों आंख का सूरदास

अखंड भारत संदेश

कौशांबी। जनपद मुख्यालय मंझनपुर के नेहरू नगर निवासी लालचंद वर्मा दोनों आंख से अंधे हैं उनकी जमीन डायट मैदान के पास मौजूद है दो दशक पूर्व डायट के प्राचार्य ने विवाद उत्पन्न करते हुए अपने स्कूल की जमीन बताना शुरू कर दिया था मामले में अदालत में मुकदमा चला पहले मुकदमे में डायट प्राचार्य मुकदमस जीत गए लेकिन मुकदमे की अपील लालचंद वर्मा ने उच्च अदालत में किया जिस पर सुनवाई के दौरान निचली अदालत का आदेश को खारिज करते हुए लालचंद वर्मा के जमीन को बहाल रखा गया दो दशक से लालचंद वर्मा अदालत का आदेश लेकर जमीन को कब्जा करने के लिए अधिकारियों की चौखट पर दौड़ रहा है तहसीलदार एसडीएम से लेकर डीएम कमिश्नर तक लालचंद ने फरियाद की लेकिन उसकी जमीन पर उसको कब्जा नहीं मिल सका इसी बीच नगर पालिका परिषद मंझनपुर ने दोनों आंख से सूरदास लालचंद वर्मा की जमीन पर सार्वजनिक सुलभ शौचालय बनवाना शुरू कर दिया जिस पर अपनी जमीन बचाने के लिए दोनों आंख से अंधा लालचंद अधिकारियों की चौखट पर न्याय के लिए गिड़गिड़ाता रहा लेकिन उसे न्याय नहीं मिल सका सवाल उठता है कि अदालत के आदेश के बाद भी आला अधिकारी सूरदास की जमीन उसे नहीं दे पा रहे हैं तो फिर उत्तर प्रदेश की योगी सरकार में कानून का राज कहां रह जाएगा अदालत के आदेश का पालन कराना होगा और सूरदास की जमीन पर उसे काबिज कराना होगा लेकिन डीएम कमिश्नर की चौखट तक फरियाद करने के बाद भी लालचंद्र की जमीन के प्रकरण में अदालत के आदेश का पालन नहीं हो सका है जो योगी सरकार की निष्पक्ष न्याय प्रिय कानून व्यवस्था पर तमाम सवाल खड़ा कर रहा है।

अभियुक्त को 06 माह कारावास की सजा

कौशाम्बी। थाना मोहब्बतपुर पइन्सा पुलिस ने 05 दिसम्बर 2020 को अभियुक्त प्रताप सिंह पुत्र स्वङ्क भैरव सिंह निवासी डेबरामई थाना मोहब्बतपुर पइन्सा के पास से नाजायज गाजा बरामद होने पर गिरफ्तार किया था इस सम्बन्ध में थाना स्थानीय पर मुकदमा पंजीकृत कर जिसके अभियुक्त प्रताप सिंह उपरोक्त को न्यायालय एडीजे / एफटीसी द्वितीय द्वारा शासन की प्राथमिकता के आधार पर गम्भीर एवं जघन्य अपराधों में पैरवी कर अभियुक्तों को सजा दिलाने के क्रम में पुलिस अधीक्षक के कुशल निर्देशन में प्रभावी पैरवी कराते हुए मानिटरिंग सेल के माध्यम से 06 माह कारावास तथा 5000 रुपए के अर्थदण्ड से दण्डित किया गया अर्थ दण्ड न अदा करने पर 03 माह अतिरिक्त कारावास की सजा सुनाई गयी।

चरवा बेरूवा बबुरा मोड़ काजू में आठ पढ़े लोग चला रहे हैं क्लीनिक व अस्पताल

अखंड भारत संदेश

बेरूवा कौशाम्बी। चायल तहसील क्षेत्र के बेरूवा चौराहा चरवा बबुरा मोड़ काजू सहित इलाके के कई स्थानों पर अवैध तरीके से दर्जनों अस्पताल और क्लीनिक संचालक की भरमार हो गई है इलाके में संचालित क्लीनिक और अस्पतालों में कक्षा आठ पढ़े लोग मरीजों के बड़े-बड़े मर्ज के इलाज का दावा कर इलाज के नाम पर उनसे बड़ी रकम वसूल लेते हैं लेकिन इन अस्पतालों में मरीजों का मर्ज ठीक होने के बजाय बढ़ जाता है जिस पर मरीजों को प्रयागराज के बड़े अस्पतालों में रेफर कर नर्सिंग होम और क्लीनिक के संचालक फिर मोटा कमीशन वसूल कर मालामाल होते हैं बड़े-बड़े बोर्ड लगाकर अवैध तरीके से संचालित अस्पताल क्लीनिक की जानकारी होने के बाद प्रभारी चिकित्सा अधिकारी सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चायल और मुख्य चिकित्सा अधिकारी पूरी तरह से मूकदर्शक बन कर मरीजों के साथ अत्याचार को देख रहे हैं जिससे पूरी स्वास्थ्य व्यवस्था पर सवाल खड़े हो रहे हैं। कथित चिकित्सकों की अवैध वसूली और लापरवाही के चलते अवैध तरीके से संचालित इन क्लीनिक और अस्पताल में मामूली मर्ज में आए दिन मरीजों की मौत हो रही है अस्पतालों में इलाज के रजिस्टर नहीं बनाए गए हैं जिससे मरीजों के इलाज का लेखा-जोखा इन अस्पतालों और क्लीनिक संचालकों के पास मौजूद नहीं मिलता सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के बाद एनजीटी के नियमों का पालन भी इन क्लीनिक और नर्सिंग होम अस्पताल में नहीं हो रहा है सब कुछ चौपट व्यवस्था के बाद भी अस्पताल संचालकों के अस्पताल पर स्वास्थ्य अधिकारी कार्यवाही करते नहीं दिख रहे हैं अवैध क्लीनिक अस्पताल झोलाछाप डॉक्टरों पर कार्यवाही करने के लिए पूर्व में सुप्रीम कोर्ट ने निर्देश भी दिया था लेकिन झोलाछाप अभियान केवल डीएम की मीटिंग तक सीमित रह गया है सूत्रों की माने तो नर्सिंग होम झोलाछाप प्रभारी अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी का एक लिपिक अवैध नर्सिंग होम से मोटी रकम वसूली में मशगूल है जिसके चलते पूरी स्वास्थ्य व्यवस्था खामोश दिखाई पड़ रही है इलाके में अवैध तरीके से संचालित क्लीनिक और अस्पताल के अभिलेखों की जांच कराए जाने की जरूरत है लोगों ने उत्तर प्रदेश के स्वास्थ्य मंत्री बृजेश पाठक का ध्यान आकृष्ट कराते हुए स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों के रहमों करम पर चलने वाले अवैध क्लीनिक और अवैध अस्पतालों के अभिलेखों की जांच कराकर इन पर कठोर कार्यवाही किए जाने की मांग की है।

सीडीओ ने प्रगतिशील 74 किसानों को प्रमाण पत्र देकर किया सम्मानित

मुख्य विकास अधिकारी ने पूर्व प्रधानमंत्री स्व0 चौधरी चरण सिंह के जन्म दिवस पर आयोजित किसान सम्मान दिवस का किया शुभारम्भ

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। मुख्य विकास अधिकारी डॉ0 रवि किशोर त्रिवेदी द्वारा आज डायट मैदान, मंझनपुर में किसानों के मसीहा एवं पूर्व प्रधानमंत्री स्व0 चौधरी चरण सिंह के जन्म दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित ह्लकिसान सम्मान दिवसह्व का शुभारम्भ एवं स्व0 चौधरी चरण सिंह के चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किया गया तथा विभिन्न विभागों द्वारा लगायी गई स्टॉलों का अवलोकन किया गया। कार्यक्रम में भूतपूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह के कार्यो को याद किया गया तथा जनपद के कृषकगणों ने अपनी-अपनी समस्याओं से सम्बन्धित अधिकारियों को अवगत कराया। मुख्य विकास अधिकारी ने प्रति हेक्टेयर अधिक से अधिक उत्पादन करने वाले प्रगतिशील कुल 74 कृषकों को प्रमाण-पत्र देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर कृषक श्री ज्ञान सिंह पुत्र श्री राजबहादुर निवासी ग्राम सौरई खुर्द विकासखण्ड सिराथू को गेहूॅ के अधिक उत्पादन के लिए एवं हशन अहमद पुत्र करीम बक्स निवासी-कड़ा चना के अधिक उत्पादन के लिए तथा श्री पवन कुमार पाण्डेय पुत्र श्री शिवबोध ग्राम बेरौचा धान के अधिक उत्पादन के लिए प्रथम पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। उप कृषि निदेशक श्री उदयभान सिंह गौतम द्वारा किसानों से अनुरोध किया गया कि पी0एम0-किसान सम्मान निधि के सभी किस्तों को नियमित रूप से प्राप्त करने के लिए ई-केवाईसी जरूर करायें तथा जिन खातों में पी0एम0-सम्मान निधि का पैसा आ रहा है, वे अपने खातों अथवा आधार में नाम में बदलाव न करें। इसके साथ ही कृषकों से अनुरोध किया गया कि हर स्थिति में ई-केवाईसी जरूर करायें, अन्यथा भारत सरकार द्वारा पी0एम0 सम्मान निधि की किस्तें रोक दी जायेंगी। वरिष्ठ वैज्ञानिक, कृषि विज्ञान केन्द्र डा0 अजय सिंह द्वारा किसानों को रबी की फसलों यथा गेहूॅ, आलू, सरसों, चना, मटर इत्यादि के अधिक पैदावार के विषय में विस्तार से जानकारी दी गई। योगेन्द्र सिंह, प्रबन्धक इफ्को द्वारा अवगत कराया गया कि नैनो यूरिया इफ्को केन्द्रों पर उपलब्ध है। नैनो यूरिया का प्रयोग बेहद आसान है, नैनो यूरिया तरल रूप में होता है व इसका प्रयोग 01 लीटर पानी में 04 मिली लीटर नैनो यूरिया को डालकर खड़ी फसलों में स्प्रे के मदद से डाला जा सकता है। 500 मिलीलीटर की बोतल में एक बोरी यूरिया के बराबर क्षमता पायी जाती है। नैनो यूरिया का पहला छिड़काव फसल के अंकुरण के 30 दिन बाद व दूसरा छिड़काव पहली स्प्रे के 20-25 दिन बाद किया जाता है। प्रति एकड़ 30 मिली0 का प्रयोग किया जाता है। इसका मूल्य परम्परागत यूरिया से कम होता है व उत्पादन 8 प्रतिशत अधिक होता है। सांसद प्रतिनिधि जय सिंह पटेल द्वारा कृषकों के समस्याओं के निराकरण के लिए आश्वासन दिया गया तथा कृषकों को अवगत कराया गया कि वे आपके आय को दोगुना करने हेतु केन्द्र एवं राज्य सरकार प्रयासरत हैं अन्त में जिला कृषि अधिकारी मनोज कुमार गौतम द्वारा धन्यवाद ज्ञापित कर कार्यक्रम समाप्त की गयी।

किसानों को सम्मानित करते मुख्य विकास अधिकारी

वरिष्ठ सहायक, कनिष्ठ सहायक, स्टेनोग्राफर एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी के रिक्त पदों पर प्रस्ताव आमन्त्रित

कौशाम्बी। जिला न्यायालय से सेवानिवृत्त कर्मचारीगण में से ऐसे कर्मचारीगण, जिनकी आयु 65 वर्ष पूर्ण नहीं हुई हो, उन्हें वरिष्ठ सहायक के रिक्त 32 पदों पर, कनिष्ठ सहायक के 02 पदों पर, स्टेनोग्राफर ग्रेड-1 के 03 पदों पर, स्टेनोग्राफर ग्रेड-2 के 07 पदों पर एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी के 14 पदों पर पुर्ननियुक्ति न्यायिक अधिष्ठान, कौशाम्बी में की जानी है। यह जानकारी अध्यक्ष प्रशासनिक समिति जनपद न्यायालय ने देते हुए बताया कि यह नियुक्ति पूर्णतयः अस्थायी होगी तथा एक वर्ष की अवधि के लिए अथवा सीधी भर्ती द्वारा, प्रोन्नति द्वारा अथवा स्थानान्तरण पश्चात भरे जाने की तिथि तक, जो ही पहले हो, के लिए की जायेंगी। इन पदों का वेतनमान सम्बन्धित पद पर आवेदक को मिलने वाले अन्तिम आहरित वेतन, जिसमें से पेंशन की राशि काटकर मानदेय के रूप में देय होगा। अन्य भत्ते उत्तर प्रदेश शासन के यथा संशोधित आदेशों के अधीन प्रदान किये जायेंगे। उन्होंने बताया कि आवेदक अपना आवेदन आयु प्रमाणपत्र व स्वस्थता प्रमाणपत्र के साथ दिनांक 15 जनवरी 2023 की सायं 04 बजे तक प्रशासनिक कार्यालय में प्रस्तुत कर सकतें हैं।

महेश्वरी प्रसाद इं.का. में संस्थापक प्रबन्धक के स्मृति में धूमधाम से मनाया गया वार्षिक दिवस

महेश्वरी प्रसाद कॉलेज के कार्यक्रम में उपस्थित माननीय अतिथि गण

अखंड भारत संदेश

हर्रायपुर कौशाम्बी। मूरतगंज ब्लाक क्षेत्र के अंतर्गत महेश्वरी प्रसाद इंटरमीडिएट कॉलेज आलमचंद में विद्यालय के संस्थापक प्रबन्धक स्वर्गीय देवेन्द्र नाथ एडवोकेट की स्मृति में वार्षिक दिवस समारोह बड़े धूमधाम से मनाया गया इस अवसर पर विद्यालय के संस्थापक माननीय न्यायमूर्ति विक्रम नाथ संरक्षिक इलाहाबाद विश्वविद्यालय के कुलपति श्रीमती संगीता श्रीवास्तव आईजी प्रयागराज एडीजी जोन प्रयागराज कमिश्नर जिला अधिकारी प्रयागराज तथा जिला अधिकारी कौशांबी एसपी सीएमओ के साथ इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एवं अन्य गणमान्य विभूतियों ने शिरकत किया तथा विद्यार्थियों का उत्साह वर्धन भी किया वार्षिक दिवस समारोह में विद्यार्थियों ने विभिन्न प्रकार के सांस्कृतिक कार्यक्रम मंच प्रस्तुत किया उपरोक्त दिवस का आयोजन विद्यालय के प्रबन्धक श्री वत्सल्य नाथ जी एवं जितेंद्रनाथ श्रीवास्तव तथा विद्यालय परिवार के शिक्षक एवं कर्मचारी के कुशल नेतृत्व में संपन्न हुआ।

शिक्षक दंपति ने साथियों के साथ मिलकर प्रधानाध्यापक के साथ की अभद्रता

अझुवा कौशांबी। सिराथू तहसील क्षेत्र के जानकी पुर स्थित प्राथमिक विद्यालय की सहायक अध्यापक शालिनी सिंह एवं उनके पति रामू सिंह सहायक अध्यापक प्राथमिक विद्यालय बघेला पुर ने शुक्रवार को जानकीपुर की प्रधानाध्यापक शशि साहू के साथ विद्यालय में अभद्रता की है उनका मोबाइल छीनने का प्रयास किया गया है विद्यालय परिसर में गाली गलौज कर शिक्षण कार्य में शिक्षक दंपति ने बाधा डाला है बताया जाता है कि सहायक अध्यापिका बीते 3 दिनों से बिना छुट्टी लिए प्राथमिक विद्यालय से गायब है स्कूल से गायब शिक्षक के पति द्वारा जबरन मेडिकल अवकाश रिसीव कराया जा रहा था जिसका प्रधानाध्यापक ने विरोध किया मेडिकल अवकाश रिसीव ना करने के चलते विद्यालय हंगामे का केंद्र बन गया और पूरे विद्यालय में शिक्षक दंपत्ति उनके साथियों ने जमकर हंगामा किया नैतिकता का पाठ पढ़ाने वाले शिक्षक दंपतियों से इस तरह खुलेआम अराजकता की उम्मीद नहीं थी प्रधानाध्यापिका ने स्कूल के तमाम शिक्षकों के हस्ताक्षर के साथ खंड शिक्षा अधिकारी सिराथू और थाना अध्यक्ष सैनी को शिकायती पत्र देकर आरोपी शिक्षक दंपति और उनके समर्थकों पर कार्यवाही की मांग की है।

छात्रों की उपस्थिति दर्ज होने के बाद सीडीओ के निरीक्षण में छात्र मिलेगा गायब

संबंधित अध्यापकों से स्पष्टीकरण प्राप्त कर अवगत कराने का बीएसए को दिया निर्देश

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। डा0 रवि किशोर त्रिवेदी मुख्य विकास अधिकारी द्वारा उच्च प्राथमिक विद्यालय रसुलपुर बड़गॉव विकास खण्ड कौशाम्बी का अपरान्ह 01:25 बजे आकस्मिक निरीक्षण किया गया। उक्त परिषदीय विद्यालय में राम प्रताप प्रधानाध्यापक बुधराज सिंह सहायक अध्यापक अजय कुमार यादव सहायक अध्यापक अमित कुमार सिंह, सहायक अध्यापक विकास तिवारी सहायक अध्यापक विनोद सिंह सहायक अध्यापक आशीष सिंह सहायक अध्यापक एवं श्रीमती अंजू देवी शिक्षा मित्र कार्यरत है। उच्च प्राथमिक विद्यालय रसुलपुर बड़गॉव में निरीक्षण के दौरान छात्र-छात्रायें विद्यालय परिषर में खेलते हुए पाये गये तथा अधिकांश छात्र-छात्रायें विद्यालय प्रांगण से बाहर चले गये थे। समस्त अध्यापकों द्वारा पठन-पाठन का कार्य नहीं पाया गया। विद्यालय में कक्षा-08 के विद्यार्थियों की उपस्थिति पंजिका का अवलोकन किया गया, जिसमें 51 पंजीकृत विद्यार्थियों के सापेक्ष मात्र 08-09 छात्र-छात्रायें ही उपस्थित मिले, सीडीओ ने कहा कि जिससे प्रथम दृष्टया ऐसा प्रतीत होता है कि विद्यालय में अपरान्ह 01:25 बजे ही छात्र-छात्राओं की विद्यालय से छुट्टी कर दी गयी है।यह स्थिति अत्यन्त ही आपत्तिजनक है। मुख्य विकास अधिकारी द्वारा इस सम्बन्ध में खण्ड शिक्षा अधिकारी कौशाम्बी एवं जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी कौशाम्बी को निर्देशित किया गया कि उक्त विद्यालय का समय-समय पर निरीक्षण करते हुए आख्या प्रस्तुत करें तथा यह सुनिश्चित करें कि छात्र-छात्रायें समय से ही विद्यालय की छुट्टी की जाय। साथ ही इस सम्बन्ध में सम्बन्धित अध्यापकों से स्पष्टीकरण भी प्राप्त कर अवगत करायें।

स्कूल का निरीक्षण करते मुख्य विकास अधिकारी

52 लीटर शराब के साथ पांच अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। पुलिस अधीक्षक के कुशल निर्देशन मे जनपद में अवैध शराब के निर्माण एवं तस्करी के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान में विभिन्न थानो द्वारा कुल 05 अभियुक्तों को गिरफ्तार कर कब्जे से कुल 52 लीटर अवैध शराब बरामद की गयी गिरफ्तार सभी अभियुक्तों के विरूद्ध सम्बन्धित थानो पर अभियोग पंजीकृत कर अभियुक्तों का चालान न्यायालय कर दिया हैं जानकरी के मुताबिक थाना चरवा पुलिस बल द्वारा अभियुक्त असरफी लाल लोनिया पुत्र बच्चा लाल निवासी संय्यद सरावां थाना चरवा को गिरफ्तार कर कब्जे से 5 लीटर अवैध शराब व शिवशंकर लोनिया पुत्र बच्चा लाल निवासी सैय्यद सरावा थाना चरवा को गिरफ्तार कर कब्जे से 5 लीटर अवैध शराब बरामद कर दोनों अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है। इसी प्रकार थाना कोखराज पुलिस बल द्वारा अभियुक्त बांचे पुत्र मैंकू निवासी बसेहड़ी थाना कोखराज को गिरफ्तार कर कब्जे से 10 लीटर अवैध शराब व छोटेलाल उर्फ छोटा पुत्र बोधी निवासी सिंधिया थाना कोखराज को गिरफ्तार कर कब्जे से 12 लीटर अवैध शराब बरामद कर अभियुक्तो का चालान न्यायालय कर दिया है। इसी प्रकार थाना मंझनपुर पुलिस बल द्वारा अभियुक्त मुन्ना लाल पुत्र स्व रामपाल निवासी बसोहनी थाना मंझनपुर को गिरफ्तार कर कब्जे से 20 लीटर अवैध शराब बरामद होने पर अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है।

स्मार्ट वैल्यू कंपनी के ठगों को गिरफ्तार करने के बाद पुलिस ने छोड़ा

कम्पनी के लोगो ने हजारों लोगों को झांसा देकर फर्जी तरीके से करोड़ों रुपए लूटा

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। नौकरी देने के नाम पर ठगी करने वाली स्मार्ट वैल्यू कंपनी के लोगों के खिलाफ गंभीर धाराओं में मंझनपुर कोतवाली पुलिस ने मुकदमा दर्ज करने के बाद दो महिला और एक पुरुष को गिरफ्तार करके हवालात में डाल दिया था ठगी करने के तीनों आरोपी तीन दिनों तक मंझनपुर कोतवाली के हवालात में बंद रहे लेकिन फिर आनन-फानन में आरोपियों को कोतवाली से छोड़ दिया गया है जिससे मंझनपुर कोतवाली पुलिस पर सवाल खड़े हो गए हैं कंपनी के लोगों पर आरोप है कि नौकरी देने का झांसा देकर पहले महिलाओं से ठगी करना फिर रकम मांगने पर गाली-गलौज कर जान से मारने की धमकी देना आदत में शुमार हो गया था पीड़ित महिलाओ ने चार दिन पहले मंझनपुर कोतवाली पुलिस को तहरीर देकर ठगी करने वाले स्मार्ट वैल्यू कंपनी के लोगों पर कार्यवाही की मांग की थी जिस पर मंझनपुर कोतवाली पुलिस ने धोखाधड़ी सहित विभिन्न गंभीर धाराओं में आरोपियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। करारी थाना क्षेत्र के गुलामी पुर गांव की रहने वाली उषा देवी की बेटी को नौकरी देने के नाम पर 15000 से अधिक की रकम ठग ली गई लेकिन उषा देवी की लड़की को नौकरी नहीं मिल सकी बल्कि उसे प्रोडक्ट का सामान खाने के लिए दे दिया गया जिससे उसकी तबीयत खराब हो गई जिस पर उसने अपनी 15000 की रकम की मांग की 15000 देने के बजाय कंपनी के लोगों ने उसके साथ गाली गलौज कर जान से मारने की धमकी दी है इसी प्रकार करारी थाना क्षेत्र के शुक्लन का पुरवा गांव की रहने वाली माया देवी पत्नी राजाराम के साथ भी उसकी बेटी को अच्छी शिक्षा और नौकरी देने के नाम पर राधा देवी और चंद्रप्रकाश मौर्या ने 27000 की रकम ठग ली इनके अलावा भी इलाके की तमाम महिला पुरुषों को नौकरी देने के नाम पर करोड़ों रुपए की ठगी कंपनी के लोगों ने कार्यालय खोलकर की है और बाद में कार्यालय बंद करके फरार हो गए हैं आरोपियों के पकड़े जाने के बाद छोड़ दिए जाने का मामला बेहद गंभीर है और इस मामले में पुलिस अधिकारियों ने जांच कराई तो मंझनपुर कोतवाली पुलिस की मुश्किलें बढ़ना तय है।

संपादकीय

आत्मनिर्भर भारत के प्रणेता - भारतरत्न श्रद्धेय अटल जी

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री भारतरत्न स्वर्गीय अटल बिहारी बाजपेयी एक कुशल राजनीतिज्ञ, सहृदय व्यक्तित्व के धनी, भावपूर्ण कवि और प्रख्यात पत्रकार थे जिनके मन में सदैव देश ही सर्वोपरि रहता था। आज भारत जिस तेज गति से मिसाइलों के परीक्षणों के द्वारा अपनी सुरक्षा को अभेद्य बना रहा है और भारत के शत्रु इसकी बढ़ती सैन्य शक्ति व आत्मनिर्भर हो रही रक्षा प्रणाली से भयभीत हो रहे हैं वह अटल जी की ही सरकार का प्रारंभ किया हुआ कार्य है जिसे मोदी जी पूरा कर रहे हैं। अटल जी के प्रधानमंत्रित्व काल में जिन परियोजनाओं पर काम किया गया वही अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के शासनकाल में धरातल पर उतर रही हैं। इनमे से अधिकांश बीच में आई सरकार ने ठन्डे बस्ते में डाल दी थीं। अटल जी का एक सपना अयोध्या में भव्य राम मंदिर के रूप में पूरा हो रहा है, दूसरी ओर जम्मू कश्मीर में अनुच्छेद -370 और 35- ए का समापन हो चुका है । प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी के शासनकाल में आगे बढ़ते कार्यों में सर्वत्र अटल जी की ही छाप है। अटलजी का जन्म 25 दिसम्बर 1926 को शिंदे की छावनी (मध्य प्रदेश)में प्राइमरी स्कूल अध्यापक स्वर्गीय पंडित कृष्ण बिहारी बाजपेयी के घर पर हुआ।उनकी माता का नाम श्रीमती कृष्णा देवी था जो कि धर्मपरायण महिला थीं। अटल जी का पूरा परिवार संघ के प्रति निष्ठावान था। वह आठ वर्ष की आयु में ही संघ के संपर्क में आ गये और विद्यार्थी जीवन में ही संघ से प्रेरित होकर मन में ठान लिया था कि वे देश के लिये जियेंगे और दे' लिए ही मरेंगे। अटल जी की शिक्षा दीक्षा ग्वालियर के विक्टोरिया कॉलेज और कानपुर के डी ए वी कालेज में सम्पन्न हुई। स्नातक और उसके उपरांत राजनीति शास्त्र में स्नातकोत्तर की परीक्षाएं अटल जी ने प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की ।इसके बाद अपने पिता के साथ ही एल एल बी किया । छात्र जीवन में छात्र राजनीति में सक्रिय रहकर वे विक्टोरिया कॉलेज छात्र संघ के महामंत्री ,ग्वालियर छात्र संघ के अध्यक्ष एवं आर्य कुमार सभा के महामंत्री बने। अटल जी को मां सरस्वती का आशीर्वाद प्राप्त था जिससे वे छात्र जीवन में ही वाद विवाद और काव्य पाठ आदि में भाग लेकर लोकप्रिय हो गए थे । वह लम्बे समय तक राष्ट्रधर्म ,पांचजन्य और वीर अर्जुन तथा स्वदेश जैसे समाचार पत्र पत्रिकाओं के संपादक रहे।उन्होंने 1946 में ही अपना जीवन संघ को समर्पित कर दिया था उन्होंने काफी समय तक पूर्णकालिक प्रचारक के रूप में कार्य किया।अटल जी कहा करते थे कि भारत का प्रत्येक कण स्वर्ग से भी अधिक पवित्र है तथा महान तीर्थ है। उनका कहना था कि हमारे एकमात्र देवी देवता हमारे देशवासी हैं। उनकी पूजा अर्चना ही सच्ची मानवता है।हमारे राष्ट्रीय जीवन का मूल स्त्रोत हमारा धर्म है। निष्काम कर्मयोगी अटल जी भारतीय जनसंघ के संस्थापकों में से एक थे। अटल जी का राजनैतिक जीवन संघर्ष पूर्ण रहा। श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा लगाए गए आपातकाल को उखाड़ फेकने में अटल जी ने महती भूमिका निभाई। अटल जी व संघ ने आपातकाल के विरुद्ध अनथक संघर्ष किया जिसके परिणामस्वरूप ही मोरारजी देसाई के नेतृत्व में जनता पार्टी की सरकार बनी जिसमें अटल जी विदेश मंत्री बने ।वह देश के ऐसे पहले विदेश मंत्री थे जिन्होंने संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में भाषण दिया। अटल जी तीन बार देश के प्रधानमंत्री बने।पहले 13 दिन, फिर 13 माह व फिर पूरे सत्र के लिए । अटल जी की सरकार में कई ऐतिहासिक कदम उठाये गये थे जिनकी गूंज आज भी सुनायी दे रही है।अटल जी सरकार ने वैश्विक दबाव को नजरअंदाज करते हुए परमाणु परीक्षण किये जिसके करण कई देशों ने भारत पर प्रतिबंध भी लगाये लेकिन वह किसी दबाव में नहीं झुके।अटल जी ने पाकिस्तान के साथ मैत्री को बढ़ावा देने के उद्देश्य से लाहौर से बस यात्रा भी की लेकिन इसके बदले में भारत को पाकिस्तान के विश्वासघात का सामना करना पड़ा लेकिन कारगिल की पहाड़ियों पर भारतीय सेना ने अपना पराक्रम दिखाया और अटल सरकार की नेतृत्व क्षमता उजागर हुयी। तीसरी बार प्रधानमंत्री बनने पर अटल जी सरकार में कई महत्वपूर्ण परियोजनाओं पर काम शुरू हुए। सौ वर्ष पुराना कावेरी विवाद सुलझाया गया। स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना प्रारंभ हुई। अटल जी को अपने राजनीतिक जीवन में कई पुरस्कार प्राप्त हुए जिसमें 1992 में पद्म विभूषण,1994 में लोकमान्य तिलक पुरस्कार, 1994 में श्रेष्ठ सांसद पुरस्कार एवं भारतरत्न प्रमुख हैं । उन्हें कानपुर विश्वविद्यालय ने 1993 में डी लिट की मानद उपाधि भी प्रदान की। 2015 में बांग्लादेश की ओर से फ्रेंडस ऑफ बांग्लादेश लिबरेशन अवार्ड से सम्मानित किया गया।अटल जी एक ऐसे राजनेता थे जिनका सम्मान विरोधी का विचारधारा के लोग भी करते थे। अटल जी ने अपने संसदीय क्षेत्र लखनऊ को अंतरराष्ट्रीय पटल पर स्थापित किया। अटल जी लखनऊ से पांच बार सांसद रहे जिसमें तीन बार प्रधानमंत्री बने। अटल जी लखनऊ में 1991, 1996, 1998 1999 और 2004 में सांसद बने। 1991 में उन्होंने कांग्रेस के रंजीत सिंह को हराया,19996 में उन्होंने सपा के राज बब्बर को, 1998 में सपा के मुजफ्फर अली को 1999 में कांग्रेस के डा कर्ण सिंह को और 2004 में सपा की मधु गुप्ता को दो लाख मतों के भारी अंतर से पराजित करने का रिकार्ड बना दिया। लखनऊ में अटल जी को पराजित करने के लिये विपक्ष ने हर चुनाव में नये तरीके आजमाए लेकिन हर बार उन्हें पराजय ही मिली। अटल जी ने लखनऊ को एक माडल के रूप में विकसित किया।वह नये और पुराने शहर की बराबर चिंता किया करते थे।अटल जी को लखनऊ की तेजी से बढ़ रही आबादी का अनुमान था।इसी को ध्यान में रखते हुए उन्होंने गोमती नगर रेलवे स्टेशन को चारबाग जैसी सुविधाओं के साथ बनाने का प्रस्ताव तैयार कराया। फैजाबाद रोड से अमौसी तक अमर शहीद पथ के निर्माण की कल्पना उन्हीं की देन है। लखनऊ- कानुपर हाईवे का चौड़ीकरण लखनऊ - हरदोई का चौड़ीकरण, दीन दयाल स्मृतिका, निशातगंज फ्लाईओवर ,कल्याण मंडप भी अटल जी की ही देन है। अटल जी ने ही साइंटिफिक कन्वेंशन सेंटर बनवाया तथा टिकैतराय तालाब और कुड़ियाघाट का जीर्णोद्धार कराया। अटल जी की ही पहल पर पुराने लखनऊ की संकरी गलियों में गहरे गड्ढों वाली पतली सीवर लाइन की बुनियाद पड़ी।

भारतीय सेना के जांबाज योद्धा

दीपक कुमार त्यागी

> चीन जैसे दुश्मन देश के खिलाफ भी भारत के राजनेताओं में एकजुटता देखने को नहीं मिल रही है, जो देशहित में बिल्कुल भी ठीक नहीं है।" वैसे तो भारत के साथ-साथ पूरी दुनिया भूमाफिया कपटी चीन की विस्तारवादी नीतियों से बखूबी परिचित हैं, अपने सभी पड़ोसी देश की भूमि को कब्जा करना चीन की दशकों से फितरत रही है, उसके चलते ही चीन का अपने हर पड़ोसी देश के साथ सीमा विवाद का मसला चल रहा है, वही स्थिति भारतीय सीमा यानी की एलएसी पर भी बनी हुई है। वैसे भी तिब्बत पर अवैध रूप से कब्जा जमाने के बाद से ही भूमाफिया चीन ने अपनी विस्तारवादी रणनीति के तहत भारत के अरुणाचल प्रदेश पर निगाहें जमाकर बैठा है

> भारतीय सीमा में घुसपैठ करने की नीयत से भेजा था, हालांकि चीन की 9 दिसंबर 2022 को की गयी घुसपैठ की इस बेहद ओछी हरकत का भारतीय सीमा पर तैनात हमारे देश के जांबाज सैनिकों ने मूंह तोड़ जबरदस्त करारा जवाब देना का कार्य किया था और उनको तत्काल ही वहां से वापस खदेड़ने का कार्य बहुत ही दिलेरी से बखूबी किया था

देश व दुनिया में आयेदिन नित नई समस्या खड़ी करने का विशेषज्ञ बन चुके नापक देश भूमाफिया चीन ने एक बार फिर से भारतीय सीमा पर तवांग सेक्टर में भारत की भूमि हथियाने की ओछी मंशा से रात के अंधेरे में अपनी सेना की लगभग 600 सैनिकों की एक टुकड़ी को कंटीले लाठी डंडे और इलेक्ट्रिक बैटन आदि के साथ
भारतीय सीमा में घुसपैठ करने की नीयत से भेजा था, हालांकि चीन की 9 दिसंबर 2022 को की गयी घुसपैठ की इस बेहद ओछी हरकत का भारतीय सीमा पर तैनात हमारे देश के जांबाज सैनिकों ने मूंह तोड़ जबरदस्त करारा जवाब देना का कार्य किया था और उनको तत्काल ही वहां से वापस खदेड़ने का कार्य बहुत ही दिलेरी से बखूबी किया था, सूत्रों के अनुसार सीमा पर इस झड़प के घटनाक्रम में भारत व चीन दोनों की सेना के सैनिक घायल हुए हैं, लेकिन इस घटनाक्रम में बड़ी संख्या में चीनी सैनिक घायल हुए है। लेकिन जब से यह बात देशवासियों को पता चली है तब से ही देश के आम जनमानस में एकबार फिर से चीन के सभी प्रकार के उत्पादों से लेकर व उसका हर तरह से बॉयकॉट करने की बात चल रही है, वहीं दूसरी तरफ अमेरिका से लेकर संयुक्त राष्ट्र संघ तक ने भी चीन की इस नापाक हरकत पर चिंता व्यक्त करते हुए भारत के पक्ष में बयान देकर खड़ा होने का कार्य किया है, भारत की विदेशी रणनीति के दृष्टिकोण से जो एक बहुत ही अच्छा संकेत है। *"लेकिन अफसोस की बात यह है कि देश की सुरक्षा से जुड़े हुए इस बेहद अहम ज्वलंत मुद्दे पर भी ना जाने क्यों संसद से लेकर सड़क तक हमारे राजनेताओं में जबरदस्त ढंग से आरोप प्रत्यारोप का दौर चल रहा है। हर बार की ही तरह इस बार भी अपनी आदत से बहुत ही ज्यादा मजबूर हो चुके हमारे देश के बहुत सारे राजनेता व राजनीतिक दल सेना के शौर्य के पीछे छिपकर 'अपनी डफली अपना राग' को गाते हुए अपनी राजनीतिक रोटियां सेंकने में व्यस्त हैं, हालात देखकर लगता है कि इनको राजनीति के अलावा देशहित की जरा भी चिंता नहीं है।"* देश की सुरक्षा से जुड़े हुए बेहद गंभीर मसले पर भी जिस तरह की ओछी राजनीति चल रही है, उस हाल को देखकर देश के देशभक्त आम जनमानस को बेहद दुःख पहुंचता है, लेकिन फिर भी ना जाने क्यों हमारे प्यारे देश में अधिकांश राजनेता व दल सुधरने के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं हैं। पिछले कुछ दिनों से देश में हालात यह है कि जब से चीन का यह प्रकरण भारत के राजनेताओं के सामने आया है तब ही से पक्ष व विपक्ष में सेना के शोर्य की बात तो कम हो रही है, लेकिन एक दूसरे पक्षों पर विभिन्न आरोप व प्रत्यारोप की बातों को लेकर के घमासान ज्यादा मचा हुआ है?। *"देश की सुरक्षा से जुड़े हुए मसले पर भी राजनेताओं की गंभीरता का आलम यह है कि चीन का यह मसला नेहरू की गलतियों से चलते हुए चीनी चंदे व चीन पर मौजूदा सरकार देश को गुमराह कर रही है आदि जैसे बिना सिर पैर के मुद्दों तक पहुंच चुका है। चीन जैसे दुश्मन देश के खिलाफ भी भारत के राजनेताओं में एकजुटता देखने को नहीं मिल रही है, जो देशहित में बिल्कुल भी ठीक नहीं है।" वैसे तो भारत के साथ-साथ पूरी दुनिया भूमाफिया कपटी चीन की विस्तारवादी नीतियों से बखूबी परिचित हैं, अपने सभी पड़ोसी देश की भूमि को कब्जा करना चीन की दशकों से फितरत रही है, उसके चलते ही चीन का अपने हर पड़ोसी देश के साथ सीमा विवाद का मसला चल रहा है, वही स्थिति भारतीय सीमा यानी की एलएसी पर भी बनी हुई है। वैसे भी तिब्बत पर अवैध रूप से कब्जा जमाने के बाद से ही भूमाफिया चीन ने अपनी विस्तारवादी रणनीति के तहत भारत के अरुणाचल प्रदेश पर निगाहें जमाकर बैठा है, चीन अपनी उस नापाक सोच को ही अमलीजामा पहनाने के चक्कर में ही आयेदिन अरुणाचल व लद्दाख से लगी सीमा पर कुछ ना कुछ उटपटांग हरकत करता रहता है, लेकिन भारत की जांबाज सेना तुरंत ही चीन की सेना को पीटकर उसकी ओछी हरकतों का करार जवाब आक्रामक तरीके से देने का कार्य करती है। भारत की जांबाज सेना के द्वारा गलवान घाटी व तवांग सेक्टर में दिये गये चीनी सेना को सबक दुनिया के सामने उसके सबसे बड़े उदाहरण हैं।

देश में चीन की नापाक हरकत के बाद से ही उसकी आर्थिक रूप से कमर तोड़ने के लिए चीनी उत्पादों के पूर्ण रूप से बहिष्कार की मांग बार-बार उठती रहती है, आम व खास वर्ग की जनता से लेकर के छोटे-बड़े राजनेता तक भी इसके पक्ष में समय-समय पर आवाज उठाते रहते हैं, तवांग सेक्टर में चीन की पीपुल्स लिबरेशन आर्मी के साथ भारतीय सेना की हाल के दिनों की झड़प के बाद से ही देश में एकबार फिर से चीन में बने सभी प्रकार के उत्पादों के बहिष्कार का मुद्दा जबरदस्त ढंग से चल रहा है। लेकिन वास्तव में धरातल पर चीन से दिन प्रतिदिन कारोबार बढ़ रहा है, चीन के उत्पादों पर दिन प्रतिदिन भारत की निर्भरता बढ़ रही है, जो भारत के लिए ठीक नहीं है, वाणिज्य मंत्रालय के आंकड़ों के अनुसार गलवान घाटी में हुई भारत व चीन की सेना की झड़प के समय वर्ष 2020-2021 में 75 बिलियन डॉलर का चीन से जो कारोबार था, वह मार्च 2022 तक मात्र 12 महीनों में ही 34 प्रतीशत बढ़कर के 115.83 बिलियन डॉलर हो चुका है। चीन को आर्थिक मोर्चे पर चोट देने के लिए इस हालात पर हम सभी देशवासियों को गहन विचार करना होगा और भविष्य में भारतीय उत्पादों को चीनी उत्पादों पर तरजीह देना रोजमर्रा के व्यवहार में सीखना होगा, तब ही चीन को हम सैन्य व व्यापारिक दोनों ही मोर्चे पर बुरी तरह से हरा सकते हैं।

।। जय हिन्द जय भारत।।
।। मेरा भारत मेरी शान मेरी पहचान

सामाजिक नीति के बजाय जाति आधारित वोट-बैंक की राजनीति

डॉ सत्यवान सौरभ

भारत में सामाजिक संरचना की प्रमुख विशेषता जाति व्यवस्था है। जाति व्यवस्था अपने सबसे सामान्य लेकिन मूलभूत पहलुओं में स्थिति और पदानुक्रम की एक आरोपित प्रणाली है। यह व्यापक और सर्वव्यापी है और व्यक्ति के लिए सभी सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संबंधों को नियंत्रित करने और परिभाषित करने के लिए जाना जाता है। राजनीति एक प्रतिस्पर्धी उद्यम है, इसका उद्देश्य कुछ वस्तुओं की प्राप्ति के लिए शक्ति का अधिग्रहण है और इसकी प्रक्रिया स्थिति को संगठित और समेकित करने के लिए मौजूदा और उभरती हुई निष्ठाओं की पहचान और हेरफेर करने में से एक है। उसके लिए जो आवश्यक है वह है संगठन और समर्थन की अभिव्यक्ति, और जहाँ राजनीति जन आधारित है, बिंदु उन संगठनों के माध्यम से समर्थन को स्पष्ट करना है जिनमें जनता पाई जाती है।
वोट बैंक की राजनीति पहले भी होती थी, लेकिन जैसे-जैसे दलों की संख्या बढ़ती गई और जाति विशेष की राजनीति करने वाले दल बनने लगे, वैसे-वैसे यह राजनीति और गहन होती गई। हाल के समय में जाति-संप्रदाय और क्षेत्र विशेष के सहारे राजनीति करने वाले दलों की संख्या तेजी से बढ़ी है। स्थिति यह है कि राज्य विशेष में चार-पांच प्रतिशत की हिस्सेदारी रखने वाली जाति समूह के नेता भी अपना-अपना दल बना रहे हैं। इसकी एक वजह राजनीति में प्रतिनिधित्व हासिल करना और सत्ता में भागीदारी करना भी है। भारतीय समाज में जाति की गहरी पैठ होने के बाद भी यह ठीक नहीं कि लोग अपने मतदान का निर्धारण जाति-संप्रदाय के आधार पर करें। दुर्भाग्य से ऐसा ही होता आ रहा है और इसलिए गोवा, मणिपुर से लेकर पंजाब, उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश में दल जाति-संप्रदाय विशेष पर डोरे डालने में लगे हुए हैं। कुछ जातीय समूहों के बारे में तो यह मानकर चला जा रहा है कि वे अमुक दल के पक्के वोट बैंक हैं। दूसरी ओर, भारत में, ऐसे समूह-जातियाँ और उप-जातियाँ सामाजिक जीवन पर हावी हैं, और अनिवार्य रूप से एक सामाजिक या राजनीतिक चरित्र के अन्य समूहों के प्रति अपने सदस्यों के रवैये को प्रभावित करती हैं। दूसरे शब्दों में, यह तथ्य कि एक जाति एक प्रभावी दबाव समूह के रूप में कार्य करने में सक्षम है, और यह कि इसके सदस्य इसे छोड़कर अन्य समूह में शामिल नहीं हो सकते, इसे एक राजनीतिक शक्ति की स्थिति में रख देता है, जिसे उपेक्षित नहीं किया जा सकता है। मतदाताओं की सद्भावना पर अपने जनादेश के आधार पर राजनीतिक दल भारत में जाति आधारित चुनावी राजनीति जाति लोकतांत्रिक राजनीति के संगठन के लिए एक व्यापक आधार प्रदान करती है। एक खुली राजनीति में समर्थन को व्यवस्थित करने और स्पष्ट करने की आवश्यकता अनिवार्य रूप से उन संगठनों और एकजुटता समूहों की ओर राजनीतिक प्रतिस्पर्धा में लगी हुई है जिनमें जनता पाई जाती है। भारत जैसे समाज में जहां जाति सामाजिक संगठन और गतिविधि का प्रमुख आधार बनी हुई है, इसका अर्थ जाति समूहों और संघों की ओर मुड़ना है। इस तरह जातिगत पहचान और एकजुटता प्राथमिक चैनल बन गए जिसके माध्यम से राजनीतिक व्यवस्था के भीतर चुनावी और राजनीतिक समर्थन जुटाया जाता है। इस प्रकार, जैसा कि कोठारी कहते हैं, "यह राजनीति नहीं है जो जाति से ग्रस्त हो जाती है, यह जाति है जो राजनीति हो जाती है। शहरी क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्रों में समर्थन जुटाने में जाति का अधिक व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। राजनीतिक दलों के लिए किसी जाति समुदाय के सदस्यों से अपील करके उनसे सीधे समर्थन जुटाना आसान हो जाता है। वर्तमान राजनीतिक व्यवस्था स्वयं अनुयायियों के प्रजनन के साधन के रूप में जाति के उपयोग को प्रोत्साहित या बाधित करती है। जैसेः बसपा, एआईएमआईएम आदि इसके उदाहरण हैं, हाल ही में यह तर्क दिया गया है कि जाति भारत के निरक्षर और राजनीतिक रूप से अज्ञानी जनता को आधुनिक लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भाग लेने में सक्षम बनाती है। उम्मीदवारों को उनकी योग्यता के बजाय उनकी जाति के आधार पर चुना जा रहा है। एक जाति के भीतर विचारों का संचार मजबूत होता है और आम तौर पर एक जाति के सदस्य राजनीतिक दलों, राजनीति और व्यक्तियों के संबंध में समान विचार साझा करते हैं। शोध के अनुसार यह सामान्य पैटर्न है कि उच्च जाति के हिंदू भाजपा को वोट देते हैं और अल्पसंख्यक कांग्रेस और अन्य क्षेत्रीय दलों को वोट देते हैं। आरक्षण प्रणाली को भी अभी तक पूरी तरह से लागू नहीं किया गया है। बल्कि गरीबों और जरूरतमंदों की मदद करने के बजाय वोट बटोरने के लिए आरक्षण के नाम पर अधिक सामान दिए जाते हैं, जिसने आरक्षण के वास्तविक उद्देश्य को कमजोर कर दिया है। इसलिए, जिसे मूल रूप से एक अस्थायी सकारात्मक कार्य-योजना (विशेषाधिकार प्राप्त समूहों की स्थिति में सुधार करने के लिए) माना जाता था, अब कई राजनीतिक नेताओं द्वारा वोट हथियाने की कवायद के रूप में इसका दुरुपयोग किया जा रहा है। ग्राम स्तर पर भी पंचायत राज चुनावों में जाति व्यवस्था हावी रही है। जोधपुर संभाग में चुनाव के दौरान जाति आधारित मुद्दों जैसे जाटों को आरक्षण आदि के लिए पार्टियां चलती हैं। इसी तरह उड़ीसा में भूमिहार, कायस्थ और राजपूत चुनाव के समय अलग-अलग दिशाओं में खिंचते हैं और अपनी जाति के उम्मीदवारों को कार्यालय में देखने की इच्छा रखते हैं। जाति भारत में राजनीति को प्रभावित नहीं कर रही है, बल्कि इसका प्रभाव अधिक बलपूर्वक और प्रभावी ढंग से है। स्वतंत्र भारत में यह आशा की जाती थी कि जाति धीरे-धीरे अपना प्रभाव समाप्त कर देगी। लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि चीजें हमारी उम्मीदों पर खरी नहीं उतरी हैं और जाति अभी भी राजनीति को प्रभावित करती है। स्वतंत्र भारत में जहां राज्य जातिविहीन समाज में रुचि रखता था लेकिन यह आश्चर्यजनक है कि जाति राजनीति और चुनाव दोनों को अधिक से अधिक प्रभावित कर रही है। केंद्र अथवा राज्यों में सत्ता में आने वाली सरकारें पिछड़ी और वंचित जातियों के उत्थान के लिए अनेक उपायों के साथ दर्जनों योजनाओं का संचालन करती हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि इन सबसे उन जातियों का अपेक्षित हित नहीं हो पा रहा है। सब जानते हैं कि जातियों के खांचे में बंटा हुआ समाज तेज गति से आगे नहीं बढ़ सकता, लेकिन जाति का मसला राजनीति व शासन-प्रशासन के लिए इतना अधिक संवेदनशील बन गया है कि उसमें हेरफेर के लिए मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति की जरूरत होगी।

वैश्विक स्तरपर भारत की में विभिन्न क्षेत्रों में प्रदर्शन के आधार पर

किशन भावनानी

वैश्विक स्तरपर पूरी दुनिया वर्ष 2022 को गुड बाय कहने के लिए तैयार खड़ी है और कामना कर रही है कि कोरोना वायरस का नया ओमिक्रान वेरिएंट बीएफ-7 को अति तीव्रता से यह वर्ष अपने साथ ले जाए और आने वाला नया वर्ष 2023 खुशियों की मीठी सौगात दुनिया के हर देश के हर क्षेत्र में लाए। परंतु चूंकि 2022 वर्ष जा रहा है, स्वाभाविक है कि इस वर्ष की दुनिया की अनेक एजेंसियों ने हर देश के अनेक क्षेत्रों की रैंकिंग की है जिसे पूरे वर्ष भर किसी न किसी महीने में जारी किया गया है, जिसमें उस देश की उस क्षेत्र में समृद्धि को आंका गया है और उस समय कुछ देशों के उसका विश्लेषण कर कुछ बयान भी आए थे। अब चूंकि हम 2023 में प्रवेश कर रहे हैं इसलिए हमें 2022 की रिपोर्टों से कुछ सीखने की जरूरत है, जो भारतीय मानवीय जीव के खून और स्वभाव में ही है सीखना। इसलिए आज हम इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में वर्ष भर आई जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, वैश्विक स्तर पर भारत की 2022 में विभिन्न क्षेत्रों में रैंकिंग,पायदान - कहीं खुशी कहीं गम।
साथियों बात अगर हम सूचकांकों की लिस्ट की करें तो हम इस तरह समझ सकते हैं। छेत्र का नाम, भारत की रैंकिंग, टॉप रैंक वाला देश और सूचकांक जारी करने वाली वैश्विक संस्था का नाम, (1) ग्लोबल हंगर इंडेक्स 2022, 107 बेलारूस सहित 17 वेल्ट हंगर, हिलफे और कंसर्न वर्ल्ड वाइड।(2) हैनले पासपोर्ट इंडेक्स 2022, 83, जापान और सिंगापुर, हैनले और पार्टनर्स। (3)ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स 2022, 40 ,स्वीटजरलैंड , विश्व बौद्धिक संपदा संगठन।(4) ग्लोबल पेंशन इंडेक्स 202, 40 ,आइसलैंड मार्सर सीएफए इंस्टीट्यूट।(5) खाद्य सुरक्षा सूचकांक 2021,71,आयरलैंड इकोनामिक इंपैक्ट।(6).वैश्विक शांति सूचकांक 2021, 135,आइसलैंड ,आर्थिक और शांति संगठन(7) चांडलर गुड गवर्नमेंट इंडेक्स 2021,49,फिनलैंड चांडलार इंस्टिट्यूट ऑफ गवर्नमेंट(8) विश्व प्रेस स्वतंत्रता सूचकांक 2022, 150, नॉर्वे रिपोर्टर्स विदाउट बॉर्डर्स।(9)लोकतंत्र सूचकांक 2021, 46, नॉर्वे, इकोनॉमिक्स इंटेलिजेंस यूनिट।(10) भ्रष्टाचार और धारणा सूचकांक 2021, 85, न्यूजीलैंड, फिनलैंड और डेनमार्क, ट्रांसपेरेंसी इंटरनेशनल(11) संयुक्त राष्ट्र मानव विकास सूचकांक 2021, 132, स्विट्जरलैंड, संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम(12)विश्व खुशहाली सूचकांक 2022, 136, फिनलैंड।(13) वैश्विक लैंगिक अंतर सूचकांक 2022, 135,आइसलैंड वर्ल्ड इकोनामिक फोरम। साथियों बात अगर हम समस्त सूचकांकों में से कुछ महत्वपूर्ण सूचकांकों को विस्तृत रूप से जानने की करें तो, वैश्विक नवाचार सूचकांक 2022 विश्व बौद्धिक संपदा संगठन द्वारा जारी किया गया है। इसमें शीर्ष देश--स्वीटजरलैंड, अमेरिका, स्वीडन भारत का स्थान 40 वा हैं इस वर्ष 6 स्थान में सुधार हुआ है।पिछले वर्ष 2021 में भारत का स्थान 46वा था। इस सूचकांक से यह पता चलता है कि भारत में स्टार्टअप के लिए बेहतर माहौल और नवाचार को बढ़ावा मिल रहा है।मानव विकास सूचकांक 2021 यह संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रमद्वारा जारी किया जाता है। इसमें भारत का स्थान 191 देशों में 132 वां है।अफ्रीका महाद्वीप का दक्षिण सूडान देश सबसे नीचे है।ग्लोबल जेंडर गैप इंडेक्स 2022वर्ल्ड इकोनामिक फोरम द्वारा जारी किया गया है।इस इंडेक्स के अनुसार भारत का स्थान 146 देशों में 135 हैं। वहीं 2021 में भारत का स्थान 156 देशों में 140 था वैश्विक भुखमरी सूचकांक 2022 अक्टूबर महीने में जर्मनी की वेल्टहंगरहिल्फे और आयरलैंड की कंसर्न वर्ल्ड वाइफ के द्वारा जारी की गई है । इसमें बेलारूस, ब्राजील, चीन सहित 17 देश शीर्ष स्थान पर रहे।भारत का स्थान 121 देशों में 107 रहा। इस इंडेक्स के अनुसार, भारत 29.1 स्कोर के साथ भूख के गंभीर स्थिति में रहा।

रंगीलाल के रंगारंग कार्यक्रम

डॉ. सुरेश

हमारे एक दोस्त हैं रंगीलाल। बड़े साहब हैं। राजस्व विभाग में पैसों से नहाते हैं। किंतु आज वे बड़ी देर से रोये जा रहे हैं। लगता है मानों बाढ़ इन्हीं की आँखों में आयी है। कहते कम हैं रोते ज्यादा हैं। रहते तो हमारी कॉलोनी में ही हैं लेकिन कमाई इतनी कि अपने लोगों से मिलने की फुर्सत नहीं है। उनका मानना है कि अपनों से मिलने पर मान घट जाता है। दूर अमेरिका में बैठे अनजान से चैट कर लेंगे लेकिन पड़ोस में रहने वाले गुप्ता अंकल के एक्सीडेंट होने पर मिजाजपुर्सी करने कतई नहीं जायेंगे। भला स्टेटस भी कोई चीज होती है। मुँह उठाए किसी के घर चल देना निकम्मेपन की पहली निशानी है। वे तो कान, मुँह, हाथ पर एप्पल चिपकाए दुनिया भर की पल-पल की खबर रखते हैं। हाँ तो मैं आपको बता रहा था कि वे निर्बाध गति से रोए जा रहे हैं। मैंने केवल हाल पूछने की गलती क्या कि उनका छुटका रोतू मुँह भाखड़ा नंगल की तरह पूरा खुल गया। बोले झ हमें कल रिश्वत लेते रंगे हाथों पकड़ लिया गया। जबकि हमारे हाथों का रंग हमेशा से वही था जो अब है। मैं भ्रष्टाचार विभाग को लाख समझाकर थक गया कि यही मेरे हाथों का रंग है, लेकिन वे हैं कि मानते नहीं। न जाने उनको मेरे इस रंग से क्या खुन्नस है कि हाथ धोकर पीछे पड़ गए हैं। रंग तो रंग है। इतने रंगों में एक रंग यह भी सही। सुखी जीवन के लिए इससे बढ़िया रंग और क्या हो सकता है।
मेरा बस चले तो इसे पूरे बदन भर लगा लूँ। फिर भी जितना मिलता है उससे काम चला लेता हूँ। मुझ जैसा आत्मसंतुष्ट कोई हो सकता है भला? यह रंग एक बार जिसके हाथ लग जाए वह जीवन भर उसे छुड़ाने की कोशिश न करे।

फटाफट खबरें

चोरों के आतंक से मुख्यालय के लोग परेशान

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिला मुख्यालय में चोरों का आतंक कम होने का नाम नहीं ले रहा है। कलेक्टेज्ट मार्ग के सीआईसी के पास एक मोबाइल दुकान का ताला तोडकर चोर लगभग दो लाख रुपये का माल लेकर चम्पत हो गये।

चोरी की ये घटना गुरुवार की रात हुई। बताया गया कि जिला मुख्यालय के उटारखाना के रहबर खान ने बताया कि प्रतिदिन की भांति बुधवार को सीआईसी रोड स्थित हाईटेक मोबाइल रिपेयरिंग व आनलाइन की दुकान बन्दकर घर गया था। गुरुवार को सवेरे पडोसी दुकानदारों ने फोन कर बताया कि दुकान के शटर के दोनों ताले टूटे पडे हैं। मौके पर पहुंचा तो देखा कि सभी सामान अस्त-व्यस्त पडा है।

सूचना पर प्रभारी कोतवाल रामआधार सिंह पुलिस बल के साथ पहुंचे। दुकानदार समेत आसपास के अन्य लोगों से जानकारी ली। कई दुकानों के सीसीटीवी फुटेज खंगाले और कुछ के रिकार्ड अपने पास रखे। दुकानदार के अनुसार लगभग दो लाख का माल चोरी हुआ है। अज्ञात चोर के खिलाफ कोतवाली कर्वी में रिपोर्ट दर्ज की गई है। प्रभारी कोतवाल ने बताया कि छानबीन जारी है।

छूटे बच्चों के टीकाकरण को चलेगा विशेष अभियान

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिले में टीके से वंचित बच्चों को टीका लगाकर उन्हें प्रतिरक्षित किया जाएगा। 13 जानलेवा बीमारियों से बचाने को टीके लगाने का कार्य जनवरी से मार्च तक विशेष अभियान चलाकर किया जाएगा। यह जानकारी अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ इम्तियाज अहमद ने दी।

शुक्रवार को डॉ इम्तियाज अहमद ने बताया कि बच्चों को हेपेटाइटिस-बी बर्थ डोज, बैसिलस गुरिन कोलमेट (बीसीजी-पोलियो), पेन्टा, फैक्सनल इन्जेक्टिवेटेड पोलियो वैक्सीन (एफआईपीवी), न्यूमोकोकल वैक्सीन (पीसीवी), रोटा, जापानी इंसेफेलाइटिस (जेई), मिजिल्स रुबेला (एमआर), डिप्थीरिया परट्यूसिस टिटनेस (डीपीटी), टिटनेस डिप्थीरिया (टीडी) आदि 13 जानलेवा बीमारियों से बचाने के लिए टीका लगाया जाना है।

जिला प्रतिरक्षण अधिकारी डॉ मुकेश पहाडी ने बताया कि अभियान को लेकर आशा कार्यकताओं ने घर-घर जाकर शून्य से पांच वर्ष तक के बच्चों का सर्वे किया। उसी के आधार पर बच्चे और मां से जुड़ी टीकाकरण संबंधी सारी जानकारियां उपलब्ध कराए गए फार्म में अंकित की गई हैं। इसमें शून्य से एक वर्ष, एक से दो वर्ष और दो से पांच वर्ष के दौरान लगे टीकों के बारे में विवरण है। जिस घर में बच्चे नहीं हैं, उसके मुखिया का नाम, उम्र, राशनकार्ड और मोबाइल नम्बर भी लिया गया है। यूनिसेफ के जिला समन्वयक दिलीप द्विवेदी ने बताया कि आशा कार्यकर्ता ने सर्वे पूरा कर एएनएम के माध्यम से नियमित टीकाकरण अधिकारी के पास भेज दिया है। टीकाकारण अधिकारी ने उस रिपोर्ट को जिला मुख्यालय भेजा है। जिला मुख्यालय में डाटा कम्पाइल किया जा रहा है। इसी डाटा के आधार पर वैक्सीन दी जाएगी। आशा कार्यकर्ता के सर्वे में मिले शून्य से पांच वर्ष तक के बच्चों का विवरण ई-कवच पोर्टल पर भी अवश्य दर्ज किया जाएगा। उन्होंने बताया कि टीकाकरण से जुड़े सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारियों (सीएचओ), एएनएम, आशा संगिनी तथा आशा कार्यकताओं को ई-कवच पोर्टल पर जानकारी दर्ज करने के बारे में सभी सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर प्रशिक्षण पहले ही दिया जा चुका है।

पूर्व डीएम ने सुशासन सप्ताह में लिया हिस्सा

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिले की पूर्व जिलाधिकारी श्रीमती नीलम अहलावत की अध्यक्षता में सुशासन सप्ताह-प्रशासन गांव की ओर में उनका जगह-जगह स्वागत किया गया। उन्होंने जिला प्रशासन के प्रति आभार जताते हुए कहा कि उन्हें आज कामतानाथ के दर्शन का मौका मिला है।

शुक्रवार को कलेक्टेज्ट सभागार में जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द के प्रति आभार जताते हुए पूर्व जिलाधिकारी श्रीमती नीलम अहलावत ने मन्दाकिनी गेस्ट कालूपुर में देश के पूर्व प्रधानमंत्री स्व चैधरी चरण सिंह की जयंती में भी हिस्सा लिया। पूर्व डीएम से सीडीओ अमृतपाल कौर, भाजपा जिलाध्यक्ष चन्द्रप्रकाश खरे, सांसद प्रतिनिधि शक्ति प्रताप सिंह तोमर, भाजपा नेता पंकज अग्रवाल ने भेंट की। उन्होंने कहा कि छह वर्ष पहले चित्रकूट में जिलाधिकारी के पद पर थीं तो किसानों को पानी, विद्युत, खाद-बीज की समस्यायें होने पर कम साधन होने के बाद भी निस्तारित कराती थीं। किसान खासे हतोत्साहित हो चुके थे, क्योंकि अति ओलावृष्टि से फसल बर्बाद हो गई थी। उन्होंने 56 प्रगतिशील किसानों को पुरस्कार दिये। किसान भाइयों से कहा कि जागरूक होकर अपनी आय दोगुनी कर सकते हैं।

पूर्व डीएम श्रीमती नीलम अहलावत ने कहा कि शासन की हर घर नल, हर घर जल योजना मील का पत्थर साबित होगी। सीडीओ अमृतपाल कौर ने बताया कि शासन की मंशानुसार 19 से 25 दिसम्बर तक सुशासन सप्ताह मनाया जा रहा है। इसमें पूर्व जिलाधिकारी ने हिस्सा लिया है, उनका अभिनन्दन करती हूं। इसके पूर्व किसान मेला प्रदर्शनी देखकर पूर्व डीएम ने फीता काटकर शुभारम्भ किया। प्रोजेक्टर के माध्यम से जिले के पर्यटन को बढावा देने को धार्मिक स्थलों के पुनरोद्धार भी देखे। इस मौके पर एडीएम कुंवर बहादुर सिंह, एडीएम न्यायिक वन्दिता श्रीवास्तव, सीएमओ डॉ भूपेश द्विवेदी, एसडीएम राजबहादुर, डीडीए कृषि राजकुमार समेत सम्मानित किसान, अधिकारी आदि मौजूद रहे।

आरोपियों की गिरफ्तारी न होने पर होगा आन्दोलन: प्रभास महासंघ, एसपी को दिया ज्ञापन

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। प्रभास महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष लवलेश विराग की अगुवाई में राजापुर के भगवती प्रसाद केशरवानी के परिजनों पर उधार न देने से लामबन्द होने पर दबंगों ने 19 दिसम्बर को घर में घुसकर जानलेवा हमला किया था। आरोपियों के खिलाफ कार्यवाही की मांग को लेकर पुलिस अधीक्षक को ज्ञापन सौंपा।

शुक्रवार को प्रभास महासंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष लवलेश विराग ने बताया कि 19 दिसम्बर को शाम साढे छह बजे पूर्व प्रधान बेराउर के पुत्र दीपू सिंह एसबीआई कर्मी यशवंत सिंह, रवि सिंह व पांच-छह अज्ञात लोगों ने भगवती केशरवानी एवं परिजन राकेश कुमार, प्रतीक कुमार, छोटेलाल, नन्दनी, प्रांशी व श्वेता देवी पर लाठी-डण्डों, राइफल, दोनाली बन्दूक से लैस होकर दुकान में उधार सामान न देने के चलते योजनाबद्ध ढंग से घर में घुसकर जानलेवा हमला किया था। हमले से पीडितों को सिर व शरीर में तमाम चोटें आई थीं। पीड़ितों ने थाने में रिपोर्ट की तो उनका डॉक्टरी परीक्षण कराकर रिपोर्ट लिख ली गई, लेकिन आरोपियों को आज तक गिरफ्तार नहीं किया।

पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह के जन्मदिवस को किसान सम्मान दिवस के रूप में मनाया गया

अखंड भारत संदेश

उन्नाव । विकास भवन सभागार में भूतपूर्व प्रधानमंत्री चैधरी चरण सिंह के जन्मदिवस को किसान सम्मान दिवस के रूप में विधायक पंकज गुप्ता की उपस्थिति में पूरी गरिमा एवं भव्यता के साथ मनाया गया। इस मौके पर जनपद में अग्रणी रहने वाले किसान बन्धुओं को सम्मानित किया गया तथा मुख्यमंत्री कृषक दुर्घटना बीमा योजना के लाभार्थी किसानों को चेक वितरित किये गये।किसान सम्मान दिवस समारोह का शुभारम्भ विधायक सदर द्वारा भूतपूर्व प्रधानमंत्री के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर विधायक ने सभागार में उपस्थित जनपद के किसान बन्धुओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि किसान हमारे अन्नदाता एवं ईश्वर हैं। अगर हमारे किसान प्रसन्न हैं, तो हम सभी प्रसन्न रहेंगे। उन्होने बताया कि चैधरी चरण सिंह हमारे देश के महान नेता व किसानों के मसीहा थे। उन्होने किसानों के कल्याण के लिए अनेक कार्य किये। हमारी सरकार भी किसानों के हित के लिए प्रतिबद्ध है। सरकार द्वारा कई ऐसी प्रभावशाली योजनाएं चलायी जा रही है, जो किसान बन्धुओं के लिए सफलता का पर्याय साबित हो सकती हैं। किसान भाई सरकार की योजनाओं से जुड़कर, नवीन कृषि पद्धति अपनाकर, परम्परागत खेती से हटकर अपनी आय को दोगुना कर सकते हैं। आज के समारोह में विधायक द्वारा कृषि उत्पादन, पशुपालन, उद्यान, मत्स्य, प्राकृतिक खेती आदि के क्षेत्र में अग्रणी प्रदर्शन करने वाले किसानों को शॉल एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस मौके पर प्रगतिशील किसान श्री चन्द्रपाल यादव द्वारा भूतपूर्व प्रधानमंत्री के साथ किये गये अपने कार्य के अनुभव साझा किये गये। मुख्य विकास अधिकारी ऋषि राज ने कहा कि आज का दिन किसान भाईयों की कार्यकुशलता व कर्मठता को सम्मानित करने का है। इससे अन्य लोग भी प्रेरणा लेकर कृषि क्षेत्र में और अच्छा कार्य कर सकते हैं। किसान भाईयों को सशक्त बनाने के लिए सरकार उन्नतिशील बीजों, कृषि व सिंचाई यन्त्रों पर 50 से लेकर 90 प्रतिशत तक का अनुदान दे रही है। हमारा विकास विभाग जनपद के समस्त किसानों को लाभान्वित करने के लिए प्रयासरत है। उप निदेशक कृषि मुकुल तिवारी द्वारा जानकारी दी गयी है कि जनपद स्तर पर कृषि उत्पादन, पशुपालन, उद्यान, मत्स्य, प्राकृतिक खेती आदि में अच्छा प्रदर्शन करने वाले 46 तथा प्रत्येक विकास खण्ड स्तर पर 5-5, इस प्रकार कुल 126 किसानों को शॉल व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। उन्होने बताया कि प्रत्येक क्षेत्र में प्रथम एवं द्वितीय स्थान प्राप्त करने वाले किसान को डीबीटी के माध्यम से क्रमशः 7000 एवं 5000 रुपए की धनराशि प्रदान की गयी है। उन्होने जनपद के समस्त किसानों से अपील करते हुए कहा है कि प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना के अन्तर्गत अपनी अधिसूचित फसलों का प्रीमियम भरने एवं फसल बीमा कराने की अन्तिम तिथि 31 दिसम्बर 2022 है। इस लिए सभी किसान बन्धु अपनी फसलों का समय से बीमा अवश्य करा लें। इस मौके पर मुख्य पशु चिकित्साधिकारी डॉ0 अनिल पाण्डेय, जिला उद्यान अधिकारी जयराम वर्मा, जिला कृषि अधिकारी कुलदीप कुमार मिश्रा, सहायक निदेशक मत्स्य बाल किशोर दुबे, भूमि संरक्षण अधिकारी अशोक कुमार सहित अटल बिहारी बाजपेयी, मुख्तार अहमद, राकेश सिंह, राम दास गौतम, हरिशंकर, गंगा सहाय, सलीम खान जुगल किशोर, पंकज कश्यप, राज कुमार यादव, राजेन्द्र पाल, अनिल पाठक, राम कली, पूनम सिंह, रूपा देवी, ओम प्रकाश सिंह आदि सम्मानित किये गये किसान उपस्थित रहे।

सेवानिवृत्त शिक्षकों को विधायक ने भेंट किया अंग वस्त्र व गीता

विधायकों द्वारा दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम की हुई शुरूआत

अखंड भारत संदेश

उन्नाव बांगरमऊ । क्षेत्र के गांव मांढ़ापुर खजुरिया में स्थित साहब लाल द्विवेदी कालेज में कार्यक्रम आयोजित किया गया। यहां पर बताते चलें कि उन्नाव जिले के स्वतंत्रता सेनानी विशम्बर दयाल त्रिपाठी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाले साहब लाल द्विवेदी के पुत्र विपिन द्विवेदी ने अपने पूज्य पिताजी के नाम पर कार्य क्रम आयोजित करवाया। उन्नाव के प्रथम सांसद स्वर्गीय विशम्बर दयाल त्रिपाठी के साथ साहब लाल द्विवेदी ने भी स्वतंत्रता संग्राम में योगदान दिया था। उनकी स्मृति में ही सेवा निवृत्त शिक्षकों को अंग वस्त्र के साथ गीता भेंट की गई। जहां पर विधायक श्रीकांत कटियार ने आयोजन कर्ता विपिन द्विवेदी और उनके सभी सहयोगी को धन्यवाद कहा। इस प्रकार के आयोजन होने से सेवानिवृत्त हो चुके लोगों को सम्मानित करने का जो हमें मौका मिला है। हम अपने आप को शौभाग्य शाली समझते हैं।

यह वही शिक्षक हैं जिन्होंने पता नहीं कितने बच्चों का भाग्य संवारा होगा इन शिक्षकों को मैं शत शत नमन करता हूं। दीप प्रज्वलित कर बम्बा लाल विधायक ने स्वतंत्रता सेनानी को नमन किया। और कहा इन्हीं महापुरुषों के लड़ाई लड़ने से देश आजाद हुआ है तभी आज हमें आजाद मुल्क में जीने को मिल रहा है। नहीं तो हमारे पूर्वजों को तो खुले में सांस लेना भी अंग्रेजों ने दूभर कर रखा था। ग्रामींण क्षेत्रों से सैकड़ों लोगों ने आजादी के लिए लड़ाई लड़ी वह भी हमारे लिए सदैव अविस्मरणीय रहेंगे।आज हमारे देश प्रदेश की जो सरकारें हैं वह एक नहीं कई लड़ाई लड रही है। और जीत भी रहे हैं वह लड़ाईयां ऐसी है जो समाज में लड़कियों को बराबर का सम्मान दिलाना, तीन तलाक जैसी कुप्रथाओं को समाप्त कर बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ में तो लड़कियां एक नहीं दो घरों को संभालती है। इसलिए कोई भी लड़की बिना पढ़ी लिखी न रहे। सरकार सबको बराबर मात्रा में लाभ दे रही है। सबका साथ सबका विकास जैसे कार्यक्रम के होने से देश और भी आगे बढ़ेगा लेकिन हमें अपने देश को आजाद कराने वाले महापुरुषों को नहीं भूलना चाहिए। शिक्षकों को एक एक कर मंच पर बुलाया गया। और दोनों विधायकों के द्वारा उन्हें अंग वस्त्र और गीता भेंट कर सम्मानित किया गया। मौके पर मौजूद विपिन द्विवेदी ने सभी लोगों का आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद कहा।

बांगरमऊ विधायक श्रीकांत कटियार ने अस्थाई गौशाला का किया लोकार्पण

विधायक ने कहा कि गाय हमारी पूज्य है और उसकी सेवा करना हमारा कर्तव्य

अखंड भारत संदेश

उन्नाव बांगरमऊ । क्षेत्रीय विधायक श्रीकांत कटियार ने ब्लाक फतेहपुर चौरासी के गांव कठिघरा में अस्थाई गौवंश का लोकार्पण किया। कठिघरा के ग्राम प्रधान दीपक यादव ने गौवंश के प्रति सेवा भाव, प्रेम की भावना से कई वर्षों से गौवंश की देखभाल, निगरानी, खाने, पीने की जरुरतें पूरी करते चले या रहे हैं। इसी के विस्तार के लिए ग्राम प्रधान ने गौवंश के लिए बने अस्थाई गौशाला का विस्तारीकरण किया है। जिसमें विधायक श्रीकांत कटियार को बुलाकर अस्थाई गौशाला का लोकार्पण कराया गया। विधायक ने मोदी, योगी, सरकार की उपलब्धियां बताई और बिना भेदभाव के केंद्र व राज्य दोनों सरकारों ने एक ही फामूर्ला अपनाया है। कि सबका साथ सबका विकास। इसमें जो भी पात्र हैं उन सभी लोगों को सरकार द्वारा बराबर हक मिल रहा है। मौके पर भूतपूर्व प्रधान संतोष यादव ने गांव की महिलाओं को गोबर से खाद बनाने के लिए कारखाना बनवाया है। जिसमें गांव की महिलाएं भी पूरा सहयोग कर रही है। वर्तमान प्रधान ने कहा कि गांव में बने अस्थाई रूप से संचालित गौशाला का विस्तार कर और भी अधिक जानवरों को रहने के लिए विस्तारीकरण किया गया है। आवारा घूम रहे जानवरों को पकड़ कर गौशाला में उनकी देखभाल की जाएगी जिससे किसानों का नुकसान नहीं होगा।

कार्यक्रम में शामिल लोगों में ब्लाक बांगरमऊ के ब्लाक प्रमुख पति अर्जुनसिंह दिवाकर, ए डी ओ पंचायत फतेहपुर चौरासी मुनेश चन्द्र, प्रधान संघ अध्यक्ष संदीप सिंह, प्रधान लाला पाल, विजयपाल, राकेश प्रधान सूसूमऊ के साथ अन्य प्रधानों ने विधायक श्रीकांत कटियार को माल्यार्पण किया। और गौवंश स्थल को और भी विस्तार से बनाने के लिए कठिघरा प्रधान की सराहना करते हुए कहा कि हम सब गौवंश की सेवा और रक्षा करने के लिए हमेशा तैयार है।

समस्याओं का समाधान व्यक्ति नही, करते हैं भगवातः नवलेश

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। श्रीमद्भागवत अष्टोत्तर शत ज्ञान यज्ञ में पंचम दिवस की कथा के दौरान भागवताचार्य नवलेश दीक्षित ने बताया कि जब अपने आपको भगवान को पूर्ण समर्पित कर देते हैं तो समस्याओं का समाधान स्वतः होने लगता है। श्रीकृष्ण जन्म के साथ योगमाया की मां विध्यवासिनी के स्वरूप में परिवर्तित होने की कथा को समझाते हुए कहा कि जब श्री कृष्ण जी का जन्म हो रहा था तो उन्होंने सबसे पहले मां देवकी व वासुदेव को चतुर्भुज रूप का दर्शन कराया तो मां बोली कि आप बाल्य रूप में आईये। प्रभु ने कहा कि वह बाल्य रूप में तो आएंगे पर उनकी रक्षा का भार उन्हें उठाना होगा।

शुक्रवार को श्रीजी होटल में कथा व्यास नवलेश दीक्षित ने बताया कि मां ने यह स्वीकार कर लिया पर बाबा व मां तो स्वयं ही हथकड़ी व बेडियों में जकड़े हुए थे। प्रभु ने कहा कि उन्हें नंद गांव जाकर छोड़ कर आईये। माता ने कहा कि हाथों में हथकड़ी और बेड़ियां हैं। ऐसे में हम कैसे उन्हें नंदगांव लेकर जाएं। प्रभु ने कहा कि आप हमें उठाएं तो, बाबा के प्रभु को छूते ही अकस्मात सब कुछ परिवर्तित हो गया। द्वारपाल सो गए, बेडियां, हथकड़ियां खुल गईं। मां यमुना ने रास्ता दिया और नंदगांव में मां यशोदा भी सो गईं। योगमाया का आगमन हुआ और कंस ने उन्हें जैसे ही पटकने का प्रयास किया माता कंस के मारने वाले के बृजमंडल में पैदा होने की भविष्यवाणी कर विध्यांचल में जाकर अष्टभुजा रूप में विराजमान हो गई।

कथा आचार्य ने बताया कि जीव का बंधन तब तक है जब तक वह प्रभु को स्पर्श नही करता। प्रभु के स्पर्श करने के बाद ही वह सभी बंधनों व समस्याओं से मुक्त हो जाता है। प्रभु स्वयं श्री गीता में कहते हैं कि सारी समस्याओं का समाधान मैं ही हूं। एक बार मुझे अपना बनाकर तो देखो तुम्हारी सभी समस्याओं का समाधान अपने आप हो जाएगा। भागवत वक्ता ने बताया कि मंत्र हमेशा से प्रभावशाली रहे हैं। इन पर भरोसा करना चाहिए। ब्राहमण पहले भी प्रभावशाली रहे हैं, आज भी हैं। जितना औषधि पर भरोसा करते हैं उतना ही मंत्रों पर भरोसा करें तो जीवन की नैया आराम से पार हो जाएगी। कथा बाद आरती व प्रसाद वितरित हुआ। इस मौके पर डा सुरेंद्र अग्रवाल, अजय अग्रवाल, डा सीताराम गुप्ता, डा सुधीर अग्रवाल, डा शशांक अग्रवाल, महेंद्र अग्रवाल, मनीष अग्रवाल, शंकर जी, राजकुमार अग्रवाल, शकुंतला, प्रभाकांत पाठक, उपेंद्र मिश्रा, त्रिभुवन त्रिपाठी, सूर्यबंशी, राम सिंह, अरिमर्दन सिंह, अशोक शुक्ला आदि ने पूजन व अर्चन किया। शाम के सत्र में महाराजा मत्तगयेन्द्रनाथ ट्रस्ट के कर्ताधर्ता प्रदीप तिवारी, राजीव अग्रवाल समेत अन्य गणमान्य लोग मौजूद रहे।

न्यूज झरोखा

वंचित-शोषित की तरक्की से होगा देश खुशहाल: अनिल प्रधान

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सपा जिला कार्यालय में किसानों के मसीहा / पूर्व प्रधानमंत्री चैधरी चरण सिंह की जयंती पर उनके चित्र पर माल्यार्पण कर सपाइयों ने भव्य ढंग से जयंती मनाई। सपा जिलाध्यक्ष अनुज सिंह यादव ने कहा कि शोषित, वंचित, उपेक्षित समाज और किसानों के कल्याण को चैधरी साहब आजीवन संघर्ष करते रहे।

शुक्रवार को सपा जिला कार्यालय में किसानों के मसीहा चैधरी चरण सिंह की जयंती पर सपा जिलाध्यक्ष अनुज सिंह यादव ने कहा कि चैधरी साहब का मानना था कि गांव, किसान, खेत-खलिहान की तरक्की से ही देश की तरक्की है। मौजूदा भाजपा सरकार किसानों की खेती नष्ट करने में तुली है। भाजपा शासनकाल में कृषि संबंधी उपकरण की महंगाई चरम पर पहुंच गई है। किसानों को खाद और कीटनाशक दवायें नहीं मिल रही हैं।

सदर विधायक अनिल प्रधान ने कहा कि समाजवादी लोग चैधरी चरण सिंह की सोंच के लोग हैं। चैधरी साहब के राह पर चलने वाले सपाई हैं। गांव, किसान, वंचित, शोषित, समाज को ही देश की तरक्की और खुशहाली का आधार मानते हैं। इस मौके पर सपा नेता मो गुलाब खां, फराज खान, मान सिंह पटेल, साहबलाल द्विवेदी, सुभाष पटेल, पप्पू जायसवाल, मुन्ना सोनकर, संतोष कोटार्य, आशुतोष गुप्ता, गन्नो गुप्ता, रामप्रसाद वर्मा, अमर पटेल, जलाल खान, गया सविता, बवाली गुप्ता, सियाराम गुप्ता, पप्पू मिश्रा, रईश अहमद आदि मौजूद रहे।

वामपंथी सत्यहरण बार एसोसिएशन के बने अध्यक्ष

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिला बार एसोसिएशन के चुनाव नतीजों में बार एसोसिएशन अध्यक्ष पद पर सत्यहरण यादव विजयी घोषित किये गये। सचिव पद पर मान सिंह व कोषाध्यक्ष पद पर त्रिभुवन सिंह विजयी घोषित हुए। विजयी घोषित अध्यक्ष सत्यहरण को वरिष्ठ अधिवक्ता रुद्र प्रसाद मिश्र ने माला पहनाकर बधाई दी।

शुक्रवार को जिला बार एसोसिएशन के चुनाव एल्डर कमेटी के सदस्य बुआराम शुक्ल, गोपालदास अग्रवाल, रामप्रसाद सिंह, सूर्यबलि त्रिपाठी के निर्देश पर चुनाव अधिकारी चन्द्रपाल पाल, योगेश श्रीवास्तव, चुनबाद प्रसाद, हेमराज सिंह, राजनारायण पाण्डेय, दमयंती गुप्ता ने सम्पन्न कराये। मुख्य निर्वाचन अधिकारी चन्द्रपाल पाल ने बताया कि आज हुई मतगणना में अध्यक्ष पद के प्रत्याशी जगतनारायण पाण्डेय को 98 मत, संजय करवरिया को 110 मत व सत्यहरण यादव 222 मत पाकर विजयी घोषित हुए। महासचिव पद पर अनिल कुमार श्रीवास्तव 71 मत, पंकज त्रिपाठी 109, मान सिंह को 128, विजय प्रकाश त्रिपाठी को 121 मत मिले। मान सिंह विजयी घोषित हुए। कोषाध्यक्ष पद पर राजेश कुमार शुक्ल को 98 मत, शिवकुमार को 24, त्रिभुवननाथ सिंह 312 मत पाकर विजयी घोषित हुए। उपाध्यक्ष पद पर बिन्दा प्रसाद प्रेमी, कनिष्ठ उपाध्यक्ष पद अनुजा श्रीवास्तव, प्रभात शुक्ला, अशोक कुमार सिंह, विजय प्रकाश सिंह, संयुक्त सचिव अनुराग सिंह चन्देल, संयुक्त सचिव प्रकाशन लक्ष्मण प्रसाद, संयुक्त सचिव शमीम हसन निर्वाचित हुए। वरिष्ठ कार्यकारिणी सदस्य पद पर अनूप गुप्ता, इस्त्याक हुसैन सिद्दीकी, महेश गुप्ता, रवीन्द्र सिंह, रामप्रकाश अग्रवाल, वाईके शेख, कनिष्ठ कार्यकारिणी सदस्य पद कृष्ण कुमार सिंह, जगमोहन, नरेन्द्र सिंह, रणविजय सिंह, शरद कुमार, सुरेन्द्र सिंह निर्विरोध निर्वाचित हुए। सदस्यों को प्रमाण पत्र बुआराम शुक्ला व निर्वाचन अधिकारी ने दिया।

विदेश संदेश

पुतिन ने पहली बार कहा- युद्ध समाप्त हो

मास्को। यूक्रेन पर हमले के 10 माह में के दौरान पहली बार रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने कहा है कि वह युद्ध को समाप्त करना चाहते हैं। पुतिन की यह घोषणा यूक्रेन समेत दुनिया भर के लिए राहत भरी है। उल्लेखनीय है कि इस समय यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की अमेरिका की यात्रा पर हैं।

पुतिन यह बात मीडिया के सवालों के जवाब में कही। रूस के राष्ट्रपति पुतिन ने कहा है कि यह युद्ध कूटनीतिक प्रयासों से खत्म होना चाहिए। यूक्रेन युद्ध ही नहीं बाकी के सभी हिंसक टकराव भी बातचीत के जरिये खत्म होने चाहिए। यूक्रेन में शांति स्थापित करने के लिए प्रयास किए जाएंगे। वहां पर जितनी जल्दी शांति स्थापित होगी अच्छा रहेगा। पुतिन ने अमेरिका के पैट्रियट मिसाइल डिफेंस सिस्टम को पुराना करार देते हुए कहा कि रूसी सेना उससे निपटने में सक्षम है। यह सिस्टम रूस के एस-300 सिस्टम जितना सक्षम नहीं है। रूस के पास एस-400 और उसका भी उन्नत संस्करण है।

बाइडन-जेलेंस्की की युद्ध समाप्त करने की अपील

वाशिंगटन। यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की ने अमेरिका की यात्रा के दौरान राष्ट्रपति जो बाइडन से मुलाकात की। इसके बाद दोनों नेताओं ने संयुक्त बयान जारी कर युद्ध समाप्त करने की अपील की। बाइडन ने कहा कि अमेरिका यूक्रेन को सैन्य मदद जारी रखेगा।

संयुक्त संवाददाता सम्मेलन में बाइडन ने कहा कि उनके और जेलेंस्की के यूक्रेन में शांति स्थापित करने को लेकर समान विचार हैं। हम दोनों का विचार स्वतंत्र, संपन्न और सुरक्षित यूक्रेन बनाने का है। हम दोनों चाहते हैं कि यूक्रेन से युद्ध खत्म हो। इसके लिए अमेरिका और सहयोगी देश युद्ध के मैदान में यूक्रेन की जीत के लिए लगातार उसकी मदद कर रहे हैं। अगर राष्ट्रपति जेलेंस्की और उनका देश रूस के साथ वार्ता करना चाहते हैं तो वे सफलतापूर्वक कर सकते हैं। इस मुलाकात के बाद जेलेंस्की ने अमेरिकी संसद के संयुक्त अधिवेशन को संबोधित किया। इससे पहले अमेरिका ने यूक्रेन के लिए 1.85 अरब डालर की नई सैन्य सहायता का ऐलान किया था।

अमेरिका में खराब मौसम से तीन हजार से अधिक उड़ानें प्रभावित

वाशिंगटन। अमेरिका में मौसम खराब होने से क्रिसमस से तीन दिन पहले तीन हजार से अधिक उड़ानें प्रभावित हुई हैं। यह जानकारी फ्लाइटअवेयर डॉटकॉम पोर्टल ने दी। इस पोर्टल के मुताबिक बाहर जाने वाली और घरेलू 1,445 उड़ानों को रद्द किया गया है। इसके

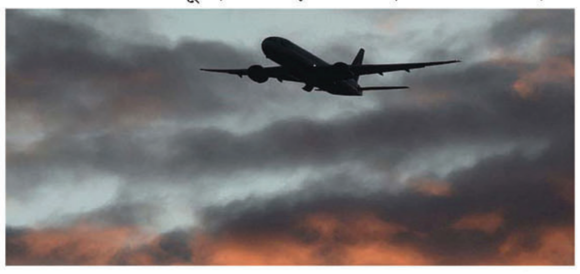

अलावा 1631 उड़ानों के गंतव्य तक पहुंचने में विलंब हुआ है। इस बीच अमेरिका की राष्ट्रीय मौसम सेवा ने अगले कुछ दिनों के लिए मौसम के खराब रहने की चेतावनी जारी की है। ओरेगॉन और वाशिंगटन प्रांत के कुछ इलाकों में भारी बारिश के आसार हैं। मौसम सेवा ने वाशिंगटन से फ्लोरिडा तक 30 से अधिक राज्यों में ठंडी हवा चलने की चेतावनी जारी की है।

चीन में कोरोना विस्फोट, शंघाई की आधी आबादी हो सकती है संक्रमित

शंघाई। चीन में कोविड-19 के ओमिक्रॉन वायरस के नए वैरिएंट बीएफ-9 सामने आने और कोविड नीति में ढील के बाद शंघाई में कोरोना विस्फोट हो गया है। एक रिपोर्ट के मुताबिक, अगले सप्ताह के अंत तक ढाई करोड़ से ज्यादा आबादी वाले शहर शंघाई के आधे लोग (1.25 करोड़) कोरोना वायरस से संक्रमित हो जाएंगे। राजधानी बीजिंग के बाद शंघाई के कोविड से बुरी तरह से प्रभावित होने की खबर सामने आई है। चीन में सड़कों पर हुए विरोध प्रदर्शनों के बाद सरकार ने इसी महीने जीरो कोविड पालिसी में ढील दी थी। इसके बाद देश में कोरोना विस्फोट की स्थिति पैदा हो गई है। 140 करोड़ आबादी वाले देश में कुछ हफ्तों में 80 करोड़ लोगों के संक्रमित होने की आशंका जताई जा रही है। मरने वालों की संख्या दस लाख के पार जाने की आशंका है। मौजूदा समय में मरीजों से अस्पताल भरे हुए हैं और अंत्येष्टि स्थलों पर शव लिए रिश्तेदारों की लंबी लाइनें हैं। हालात काबू करने में सरकारी तंत्र असहाय है। लेकिन सरकार लगातार सच्चाई पर पर्दा डाल रही है। सरकारी आंकड़ों में चीन में बीते तीन दिनों में कोविड से

किसी की मौत नहीं हुई है। सरकारी आंकड़ों में 2019 से अभी तक मरने वालों की संख्या महज 5,241 है। शंघाई के डेजी अस्पताल ने बुधवार को अपने आधिकारिक वीचैट अकाउंट में बताया कि शहर में इस समय 54 लाख से ज्यादा कोरोना संक्रमित हैं, महीने के अंत तक यह संख्या बढ़कर 1.25 करोड़ तक जा सकती है। क्रिसमस, नववर्ष और मून न्यू ईयर के आयोजनों में भीड़भाड़ से संक्रमितों की संख्या में तेजी से बढ़ोतरी हो सकती है। डेजी अस्पताल शंघाई का बड़ा निजी अस्पताल है और उसमें 400 लोग कार्य करते हैं। अस्पताल के अकाउंट में लिखा था- हम मुश्किल लड़ाई में फंस गए हैं। उपनगरों समेत पूरा शंघाई संक्रमित हो सकता है। अस्पताल के कर्मचारी और उनके परिवार भी कोरोना से संक्रमित होंगे। हमारे पास कोई विकल्प नहीं है, कोरोना संक्रमण से हम बच नहीं सकते। गुरुवार दोपहर को यह पोस्ट वीचैट से हटा दी गई है।

शंघाई में संक्रमण से बचाव के लिए इसी वर्ष लगातार दो महीने का लाकडाउन था जिसमें एक जून को ढील दी गई थी। शंघाई के बड़े इलाके में सन्नाटा छाया हुआ था। सड़कों से गुजर रही एंबुलेंस के हार्न की आवाज ही इस सन्नाटे को तोड़ रही थी। बड़ी संख्या में लोगों के बीमार पड़ने के कारण ज्यादातर बाजार, संस्थान और कारखाने बंद हैं। शहर के एक सुपरमार्केट के सभी कर्मचारी बीमार हैं, इसलिए उसे मजबूरी में बंदी का बोर्ड लगाना पड़ा है।

पंजाब प्रांत के मुख्यमंत्री इलाही को बर्खास्त करने की अधिसूचना जारी

लाहौर। पाकिस्तान का पंजाब प्रांत गंभीर संवैधानिक संकट में घिर गया है। गवर्नर बालीगुर रहमान ने शुक्रवार सुबह मुख्यमंत्री चौधरी परवेज इलाही और उनके मंत्रिमंडल को बर्खास्त करने की अधिसूचना जारी की है। माना जा रहा है कि पाकिस्तान मुस्लिम लीग-एन (पीएमएलएन) से ताल्लुक रखने वाले गवर्नर ने पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के इमरान खान को पंजाब विधानसभा को भंग करने से रोकने के लिए यह कार्रवाई की है।पूर्व प्रधानमंत्री खान ने अपनी पार्टी के शासन वाले प्रांतों पंजाब और खैबर पख्तूनख्वा की विधानसभाओं को भंग करने की घोषणा की थी ताकि पाकिस्तान मुस्लिम लीग (एन) (पीएमएलएन) के नेतृत्व वाले संघीय गठबंधन को मध्यावधि चुनाव कराने के लिए मजबूर किया जा सके। गवर्नर ने अधिसूचना जारी करते हुए कहा-'चूंकि मुख्यमंत्री चौधरी परवेज इलाही ने तय दिन और समय (पिछले बुधवार) पर विश्वास मत कराने से परहेज किया है, इसलिए वह पद पर तत्काल प्रभाव से बने नहीं रह सकते हैं। हालांकि वह पंजाब के मुख्यमंत्री के रूप में तब तक काम करना जारी रख सकते हैं जब तक कि उनका उत्तराधिकारी नियुक्त नहीं हो जाता।' पीटीआई के सहयोगी पाकिस्तान मुस्लिम लीग कायद (पीएमएलक्यू) से ताल्लुक रखने वाले इलाही ने कहा कि वह गवर्नर के 'अवैध आदेश' के खिलाफ अदालत का रुख करेंगे। पीटीआई नेता और पूर्व सूचना मंत्री फवाद चौधरी ने कहा है कि गवर्नर को

उनके 'कदाचार' की कीमत चुकानी होगी। फवाद चौधरी ने ट्वीट किया-'मुख्यमंत्री और उनके मंत्रिमंडल को गैर-अधिसूचित करने वाले गवर्नर के आदेश का कोई कानूनी आधार नहीं है। मुख्यमंत्री परवेज इलाही और उनका मंत्रिमंडल काम करना जारी रखेगा और गवर्नर को पद से हटाने के संदर्भ में राष्ट्रपति को पत्र भेजा जा रहा है।'

पंजाब प्रांत के मुख्यमंत्री इलाही को बर्खास्त करने की अधिसूचना जारी

लाहौर। पाकिस्तान का पंजाब प्रांत गंभीर संवैधानिक संकट में घिर गया है। गवर्नर बालीगुर रहमान ने शुक्रवार सुबह मुख्यमंत्री चौधरी परवेज इलाही और उनके मंत्रिमंडल को बर्खास्त करने की अधिसूचना जारी की है। माना जा रहा है कि पाकिस्तान मुस्लिम लीग-एन (पीएमएलएन) से ताल्लुक रखने वाले गवर्नर ने पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के इमरान खान को पंजाब विधानसभा को भंग करने से रोकने के लिए यह कार्रवाई की है।पूर्व प्रधानमंत्री खान ने अपनी पार्टी के शासन वाले प्रांतों पंजाब और खैबर पख्तूनख्वा की विधानसभाओं को भंग करने की घोषणा की थी ताकि पाकिस्तान मुस्लिम लीग (एन) (पीएमएलएन) के नेतृत्व वाले संघीय गठबंधन को मध्यावधि चुनाव कराने के लिए मजबूर किया जा सके। गवर्नर ने अधिसूचना जारी करते हुए कहा-'चूंकि मुख्यमंत्री चौधरी परवेज इलाही ने तय दिन और समय (पिछले बुधवार) पर विश्वास मत कराने से परहेज किया है, इसलिए वह पद पर तत्काल प्रभाव से बने नहीं रह सकते हैं। हालांकि वह पंजाब के मुख्यमंत्री के रूप में तब तक काम करना जारी रख सकते हैं जब तक कि उनका उत्तराधिकारी नियुक्त नहीं हो जाता।' पीटीआई के सहयोगी पाकिस्तान मुस्लिम लीग कायद (पीएमएलक्यू) से ताल्लुक रखने वाले इलाही ने कहा कि वह गवर्नर के 'अवैध आदेश' के खिलाफ अदालत का रुख करेंगे। पीटीआई नेता और पूर्व सूचना मंत्री फवाद चौधरी ने कहा है कि गवर्नर को

उनके 'कदाचार' की कीमत चुकानी होगी। फवाद चौधरी ने ट्वीट किया-'मुख्यमंत्री और उनके मंत्रिमंडल को गैर-अधिसूचित करने वाले गवर्नर के आदेश का कोई कानूनी आधार नहीं है। मुख्यमंत्री परवेज इलाही और उनका मंत्रिमंडल काम करना जारी रखेगा और गवर्नर को पद से हटाने के संदर्भ में राष्ट्रपति को पत्र भेजा जा रहा है।'

स्लोवेनिया की पहली महिला राष्ट्रपति बनीं नतासा पिर्क मुसर

जुब्लजाना। नतासा पिर्क मुसर (54) ने स्लोवेनिया की नेशनल असेंबली के औपचारिक सत्र के दौरान राष्ट्रपति पद की शपथ ली। वह देश की पांचवीं और पहली महिला राष्ट्रपति हैं। निर्दलीय चुनाव लड़ने

वाली मुसर, बोरुत पाहोर की जगह लेंगी। पाहोर पिछले 10 वर्ष से इस पद पर थे। राष्ट्रपति के रूप में मुसर ने स्लोवेनिया के नागरिकों को संबोधित किया। उन्होंने कहा-'हमें अपने देश की देखभाल करनी है। इसकी रक्षा करें। इसे प्यार करें, क्योंकि यह हमारा है। मैं बहुपक्षीय विश्व व्यवस्था और एक मजबूत यूरोप का समर्थन करती हूं।'

कोरोना की नई लहर से दुनिया चिंतित

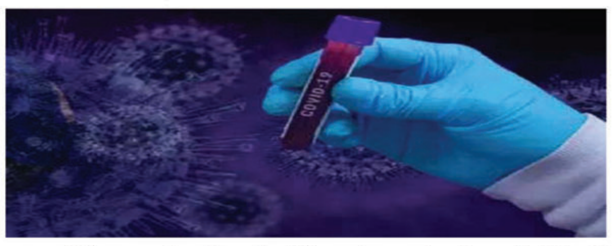

वाशिंगटन। चीन में बढ़ते कोरोना संक्रमण ने दुनिया को चिंता में डाल दिया है। उधर, अमेरिका समेत कई देशों ने संक्रमण की संभावित नई लहर की आशंका को देखते हुए युद्ध स्तर पर तैयारी शुरू कर दी हैं। दुनिया भर में कोरोना के 5.37 लाख केस सामने आए । साथ ही 1396 लोगों की जान गई। अमेरिकी विदेश मंत्री एंटनी जे ब्लिंकन ने क है चीन सहित सभी देशों के लिए यह भी महत्वपूर्ण है कि वे अपने लोगों का टीकाकरण करें। परीक्षण और उपचार उपलब्ध कराएं। दुनिया के साथ जानकारी साझा करें कि वे क्या अनुभव कर रहे हैं। ब्लिंकन ने कहा है कि चीन में कैसी स्थिति है, इसके आंकड़े दुनिया के साथ साझा करने चाहिए। अमेरिका में 50 हजार से ज्यादा मामले सामने आए हैं।

श्रीलंका की नौसेना ने मछली पकड़ने के आरोप में 12 भारतीय मछुआरों को गिरफ्तार किया

जुब्लजाना। श्रीलंका की नौसेना ने देश के समुद्री क्षेत्र में अवैध रूप से मछली पकड़ने के आरोप में 12 भारतीय मछुआरों को गिरफ्तार किया। श्रीलंका की नौसेना ने एक बयान में कहा कि इन मछुआरों को उत्तरी जाफना जिले में वेट्टीलाइकेरनी के तट पर गिरफ्तार किया गया। बयान में कहा गया है कि उन्हें वर्तमान में कांकेसंथुराई मत्स्य बंदरगाह पर हिरासत में रखा गया है। बयान के अनुसार, ''श्रीलंका की नौसेना ने देश के समुद्री क्षेत्र में नौका से अवैध रूप से मछली पकड़ने के चलन को रोकने के लिए गश्त और अभियान बढ़ा दिया है।

श्रीलंका की नौसेना ने 264 भारतीय मछुआरों को गिरफ्तार किया है और इस साल मछली पकड़ने की 36 नौकाएं भी जब्त की हैं। भारत और श्रीलंका के बीच कई उच्च स्तरीय वार्ताओं के बावजूद भारतीय मछुआरों द्वारा श्रीलंका के समुद्री क्षेत्र में मछली पकड़ना एक समस्या बना हुआ है। पूर्व में श्रीलंका की नौसेना के कर्मियों ने पाक जलडमरूमध्य में भारतीय मछुआरों पर गोलीबारी भी की थी और श्रीलंका के समुद्री क्षेत्र में प्रवेश की अवैध घटनाओं के आरोप में उनकी मछली पकड़ने की नौकाएं भी जब्त कर ली थीं। पाक जलडमरूमध्य एक संकरी पट्टी है जो तमिलनाडु को श्रीलंका से अलग करती है और यह दोनों देशों के लिए मछली पकड़ने के लिहाज से एक बेहतर स्थान है।

भारत की तारीफ करते हुए अमेरिका ने चीन को घेरा, गहरे होंगे सैन्य संबंध

वाशिंगटन। चीन के साथ भारत के बढ़ते तनाव के बीच अमेरिका खुलकर भारत के साथ खड़ा दिख रहा है। भारत और अमेरिका के सैन्य अधिकारियों की बातचीत में अमेरिका ने भारत की तारीफ करते हुए चीन को घेरा। साथ ही दोनों देशों के बीच सैन्य संबंध और गहरे करने की बात कही गयी।

अमेरिकी सेना के ज्वाइंट चीफ ऑफ स्टॉफ जनरल मार्क ए माइली और उनके भारतीय

अमेरिका की ओर से कहा गया कि भारत एक स्वतंत्र और खुले हिंद-प्रशांत को बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण भागीदार है। अमेरिका, भारत और कई अन्य

विश्व शक्तियां संसाधन संपन्न और रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण क्षेत्र में चीन की बढ़ती सैन्य पैंतरेबाजी

अमेरिकी सेना के ज्वाइंट चीफ ऑफ स्टॉफ जनरल मार्क ए माइली और उनके भारतीय समकक्ष जनरल अनिल चौहान के बीच बातचीत में क्षेत्रीय और वैश्विक सुरक्षा माहौल पर चर्चा हुई।

से चिंतित हैं। चीन की इस मनमानी की पृष्ठभूमि में एक स्वतंत्र, खुले और संपन्न हिंद-प्रशांत को सुनिश्चित करने की आवश्यकता भी महसूस की जा रही है। अमेरिका की ओर से यह चिंता भी जाहिर की गयी है कि चीन लगातार विवादित दक्षिण चीन सागर पर दावा कर रहा है। हालांकि ताइवान, फिलीपींस, ब्रुनेई, मलेशिया और वियतनाम सभी इसके कुछ हिस्सों पर दावा करते हैं। चीन ने दक्षिण चीन सागर में कृत्रिम द्वीप और सैन्य प्रतिष्ठान बनाए हैं। चीन का पूर्वी चीन सागर में जापान के साथ क्षेत्रीय विवाद भी है। 2017 में, अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया, भारत और जापान ने भारत-प्रशांत क्षेत्र में महत्वपूर्ण समुद्री मार्गों को किसी भी प्रभाव से मुक्त रखने के लिए एक नई रणनीति विकसित करने के लिए क्वाड की स्थापना की थी। इसे लेकर भी चीन को आपत्ति है।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज 1/6C माधव कुंज कटरा प्रयागराज से मुद्रित एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
Title UPHIN 29506
ऑफिस मो.: 9565333000
Email:- akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा।

इस्लामाबाद के रिहायशी इलाके आई-10 में हुआ आत्मघाती हमला

इस्लामाबाद। ताजा जानकारी के अनुसार पाकिस्तान से एक बड़ी खबर आ रही हैं। पाकिस्तान में आतंकियों ने एक भीड़भाड़ वाले इलाके को अपना निशाना बनाया है। पाकिस्तान के इस्लामाबाद में पॉश इलाके में बम धमाका हुआ हैं। यहां पर एक मंहगा बाजार है और पास में विश्वविद्यालय और सरकारी कार्यालय भी हैं। ऐसे में आत्मघाती विस्फोट से जान माल की हानि की भी आशंका तजाई जा रही है। धमाके वाली जगह पर कई छात्रों के इकठ्ठा खड़े होने की भी जानकारी दी जा सकती है। यह आत्मघाती हमला एक गाड़ी के जरिए दिया गया। एक विशेष आतंकवाद रोधी बल को मौके पर भेजा गया है। सूत्रों के हवाले से खबर दी है कि इस्लामाबाद के आई-10 इलाके में एक कार में विस्फोट की सूचना के बाद एक पुलिसकर्मी घायल हो गया। मामले की जानकारी रखने वाले

अधिकारियों ने कहा कि पुलिस ने एक 'संदिग्ध' टैक्सी को जांच के लिए रोका था कि विस्फोट कब हुआ। कहा जा रहा है कि संदिग्ध कार के पीछे एक पुलिस बाइक पर जा रहा था तभी अचानक से गाड़ी में विस्फोट हुआ और पुलिस कर्मी की मौत हो गयी। पाकिस्तान के इस्लामाबाद में शुक्रवार को हुए आत्मघाती विस्फोट में एक पुलिसकर्मी की मौत हो गई। पाकिस्तान के एआरवाई न्यूज ने एक रिपोर्ट में कहा कि इस्लामाबाद के आई-10 सेक्टर में एक जोरदार विस्फोट की सूचना मिली, जिसके बाद सुरक्षा अधिकारियों ने इलाके को घेर लिया और जांच शुरू की।

माना जा रहा है कि जुम्मे की नमाज को लेकर इस हमले को बड़ा करने कि साजिश थी लेकिन हमलावर बड़ा हमला करने में कामयाब नहीं हुए। नमाज का समय होता तब तो यह काफी बड़ा हो सकता था।

पूरे इस्लामाबाद में हाइ अलर्ट कर दिया गया है। मौके की मीडिया कवरेज भी रोक दी गयी है सुरक्षा कारणों के कारण।आपको बता दें कि पाकिस्तान की एक आतंकवाद रोधी अदालत ने पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान पर तीन नवंबर को हुए हमले के मुख्य संदिग्ध और उसके साथी की हिरासत अवधि तीन जनवरी तक के लिए बढ़ा दी। अदालत के एक अधिकारी के अनुसार, पुलिस ने मुख्य संदिग्ध मोहम्मद नवीद और उसके साथी मोहम्मद वकास को बृहस्पतिवार को उच्च सुरक्षा के बीच एटीसी गुजरांवाला के समक्ष पेश किया।

एटीसी ने दोनों संदिग्धों को पूछताछ के लिए 13 दिनों के वास्ते संयुक्त जांच दल की हिरासत में भेज दिया। अधिकारी ने बताया, ''पुलिस ने एक ट्वीट के सिलसिले में हाल ही में गिरफ्तार किए गए संदिग्ध वकास को पहली बार एटीसी के समक्ष पेश किया।'' उन्होंने बताया कि वकास ने तीन नवंबर को एक ट्वीट में कहा था कि ''इमरान खान की रैली में आज कुछ बड़ा होने वाला है।'' बाद में उसने ट्वीट हटा दिया था। उन्होंने बताया, ''वकास मामले के मुख्य संदिग्ध नवीद का एक रिश्तेदार है।

'हाउस जनवरी 6 समिति' की अंतिम रिपोर्ट जारी, ट्रंप पर ''व्यापक साजिश'' रचने का आरोप

वाशिंगटन। अमेरिकी संसद परिसर (कैपिटल हिल) में 2021 में हुए हमले की जांच कर रही 'हाउस जनवरी 6 समिति' ने अपनी अंतिम रिपोर्ट में कहा कि पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने आपराधिक रूप से 2020 के राष्ट्रपति चुनाव के वैध परिणाम पलटने की एक ''व्यापक साजिश'' रची और वह अपने समर्थकों को कैपिटल पर हमला करने से रोकने में भी विफल रहे। समिति ने पूर्व राष्ट्रपति की गतिविधियों और करीब दो साल पहले हुए हिंसक विद्रोह की 18 महीने तक जांच करने के बाद यह रिपोर्ट पेश की है। इस 814 पन्नों की रिपोर्ट को जारी किया गया। इसके लिए 1,000 से अधिक गवाहों से पूछताछ की गई और लाखों पन्नों के दस्तावेज खंगाले गए।ट्रंप के कई करीबी सहयोगियों से लेकर कानून प्रवर्तन के कुछ अधिकारी, कुछ दंगाइयों से पूछताछ की गई। इस हिंसक विद्रोह से पहले के कई सप्ताह तक ट्रंप की गतिविधियों पर गौर किया गया और इस बात की भी जांच की गई कि चुनाव में हार को पलटने के उनके दबाव बनाने वाले अभियान ने कैसे उन लोगों को सीधे प्रभावित किया, जिन्होंने 6 जनवरी 2021 को पुलिस के साथ धक्का-मुक्की की और कैपिटल हिल की खिड़कियां व दरवाजें तोड़े। रिपोर्ट में कहा गया, ''छह जनवरी की घटना की मुख्य वजह केवल एक शख्स पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप थे, जिनकी बातों का कई लोगों ने अनुसरण किया। उनके बगैर छह जनवरी की कोई घटना नहीं होती।'' नौ सदस्यीय समिति ने कहा, ''विद्रोह ने लोकतंत्र के लिए गंभीर खतरा खड़ा किया और अमेरिकी सांसदों के जीवन को भी खतरे में डाला।'' समिति ने सोमवार को न्याय मंत्रालय से पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के खिलाफ आपराधिक आरोप लगाने और उनकी जवाबदेही तय करने का आग्रह किया था। समिति में सात डेमोक्रेटिक पार्टी के और दो रिपब्लिकन पार्टी के सांसद शामिल हैं। समिति ने जिन चार आरोपों के तहत ट्रंप के खिलाफ मुकदमा चलाने का आग्रह किया था ।